लखनऊ, बुधवार, 22 मार्च 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 28 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

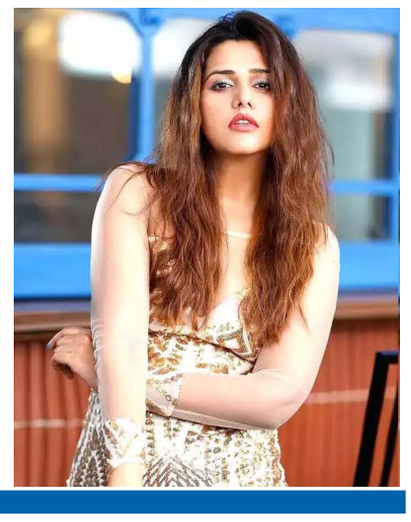

संक्षिप्त समाचार

लोकसभा अध्यक्ष की ओर से बुलाई गई सर्वदलीय बैठक रही बेनतीजा

(एजेंसी) नई दिल्ली। सदन में जारी गतिरोध को रोकने के लिए लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक बेनतीजा रही। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में लोक सभा अध्यक्ष बिरला ने दोनों पक्षों से यह अपील की कि वो अपने-अपने मुद्दों को अलग रखकर सदन की कार्यवाही को चलने दें। लेकिन दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी मांगों पर अड़े रहे। बिरला द्वारा लोक सभा के सभी राजनीतिक दलों के नेताओं की बुलाई गई इस सर्वदलीय बैठक के बेनतीजा रहने से सदन चलने के आसार फ्लिहाल कम ही नजर आ रहे हैं।

चंद सेकेंड में जमींदोज हुआ 30 साल पुराना 85 मीटर ऊंचा टॉवर...सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल

(एजेंसी) सूरत। गुजरात के सूरत शहर में स्थित एक बिजलीघर के 30 साल पुराने कूलिंग टॉवर को मंगलवार को विस्फोट के जरिए ढहा दिया गया। अधिकारियों के मुताबिक गैस से चलने वाले 'उतरन ताप विद्युत संयंत्र के करीब 72 मीटर व्यास और 85 मीटर ऊंचे आरसरसी टावर को सुबह करीब 11.10 बजे ढहाया गया। अधिकारियों ने कहा कि विध्वंस के लिए 220 किलोग्राम विस्फोटक का इस्तेमाल किया गया। टावर सात सेकेंड के भीतर एक तेज आवाज के साथ नीचे गिर गया, जिससे धूल की एक मोटी परत फैल गई।

बंगाल की सीएम ममता बनर्जी का बड़ा ऐलान, 29 मार्च को केंद्र के खिलाफ बैठेंगी धरने पर

(एजेंसी) कोलकाता। पश्चिम बंगाल के साथ केंद्र सरकार के कथित पक्षपातपूर्ण रवैये के विरोध में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी 29 मार्च से कोलकाता में दो दिन तक धरना देंगी। 29 मार्च सुबह से शुरू हुआ धरना 30 मार्च रात तक चलेगा। धरना अंबेडकर मूर्ती के पास किया जाएगा। ममता बनर्जी ने कहा कि वह अपने राज्य के प्रति भाजपा नीत केंद्र सरकार के कथित भेदभावपूर्ण व्यवहार के विरोध में 29 मार्च से कोलकाता में दो दिवसीय धरना प्रदर्शन करेंगी। ममता ने दावा किया कि केंद्र ने मनरेगा परियोजना और आवास तथा सड़क विभागों की अन्य पहलों के लिए धन जारी नहीं किया है। ओडिशा की तीन दिवसीय यात्रा पर रवाना होने से पहले उन्होंने दमदम हवाईअड्डे पर मीडिया से कहा, पश्चिम बंगाल एकमात्र ऐसा राज्य है जिसे केंद्र से कुछ भी नहीं मिला है। इसने हमें हमारा बकाया पैसा नहीं दिया है।

आबकारी नीति मामले में मनीष सिसोदिया ने जमानत याचिका की दायर

(एजेंसी) नई दिल्ली। दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने रद्द कर दी गई आबकारी नीति मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच के सिलसिले में एक अदालत में जमानत याचिका दायर की। राउज एवेन्यू कोर्ट ने केंद्रीय एजेंसी को नोटिस जारी करते हुए मामले की अगली सुनवाई 25 मार्च के लिए सूचीबद्ध कर दी। अदालत ने 17 मार्च को इसी मामले में आप नेता की ईडी हिरासत 22 मार्च तक बढ़ा दी थी। अदालत ने सोमवार को केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा इसी मामले में सिसोदिया को 3 अप्रैल तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया था। आप नेता को गिरफ्तार किए जाने के बाद ईडी ने भी उन्हें इसी मामले में नौ मार्च को गिरफ्तार किया था।

खिलाड़ियों को पुलिस व प्रशासनिक सेवाओं में मिलेंगे अवसर : योगी

500 खिलाड़ियों का होगा समायोजन, खेलकूद के क्षेत्र में आगे बढ़ा है यूपी

(संवाददाता)

लखनऊ । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पुलिस खेल कुंभ युवा शक्ति को खेलकूद की गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा। हम 500 से अधिक खिलाड़ियों को शासन की विभिन्न सेवाओं में स्थान देने जा रहे हैं, जहां वह खेलकूद की गतिविधियों में भाग लेने के साथ ही बेहतर भविष्य की दिशा में आगे बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री योगी आज मंगलवार को अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक्स संकुल चौंपियनशिप 2022-2023 में शामिल

हुए। सशस्त्र सीमा बल के नेतृत्व में पीएसी 35वीं वाहिनी महानगर के ग्राउंड पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि 32 राज्यों के 1300 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं, जो कार्यक्रम की सफलता को बताता है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एसएसबी का यह आयोजन हमारी युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों की नींव रखने में सहायक होगा। खिलाड़ियों की सुविधाये बढ़ाने के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ियों को यूपी पुलिस और शासन की विभिन्न सेवाओं में स्थान देने की कार्रवाई को आगे बढ़ाया जा रहा है।योगी ने कहा कि भारत की ऋषि मनीषा इस बात पर विश्वास करती रही है कि शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम,यानि जितने भी हमारे जीवन के साधन हैं, वह स्वस्थ शरीर से ही सम्पन्न हो सकते हैं। खेलकूद की गतिविधियां स्वस्थ शरीर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आज ओलंपिक, एशियाड, वर्ल्ड चौंपियनशिप, कॉमवेल्थ गेम्स अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगताओं में भारत का प्रतिभाग बढ़ने के साथ मेडल की संख्या में वृद्धि हुई है।

राहुल गांधी को मीर जाफर कहने पर संबित पात्रा के खिलाफ केस करेगी कांग्रेस

(एजेंसी) नई दिल्ली। राहुल गांधी को मीर जाफर कहने को लेकर कांग्रेस बीजेपी प्रवक्ता संबित पात्रा के खिलाफ कानूनी कर्रवाई करेगी। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने मंगलवार को केंद्र पर अदानी मामले पर तंज करते हुए कहा कि उन्हें चिंता है कि राहुल गांधी फिर से पीएम से अदानी के साथ उनके संबंधों के बारे में पूछ सकते हैं। यही कारण है कि वे इतना नाटक कर रहे हैं। लोकतंत्र के जयचंद मत बनिए। इतिहास में आपको जयचंद कहा जाएगा, यदि आप देश की बजाय दोस्त की चिंता करेंगे। उन्होंने राहुल गांधी के माफी मांगने के सवाल पर कहा कि यह बात शाह और शहंशाह जानते हैं कि राहुल गांधी माफी नहीं मांगेंगे। इसके बाद भी बीजेपी प्रवक्ता बिना नहाए चले आते हैं। ये अदानी मामले से ध्यान भटकाने का प्रयास है। सरकार की आलोचना करना देश की आलोचना नहीं है। सरकार को यह समझना चाहिए। बहस लोकतंत्र को कमजोर नहीं करती, बल्कि उसे मजबूत करती है। विपक्ष के सवालों से बचने की कोशिश कर रही है ये सरकार। उन्होंने कहा, 9 बार नाक रगड़ कर अंग्रजों से माफी मांगने वाले और वायसराय से पेंशन लेने वाले कांग्रेस को देशभक्ति का ज्ञान देते हैं तो हंसी आती है। आप लोकतंत्र के किरायेदार हैं, मकान मालिक नहीं। मालिक जनता है। पवन खेड़ा ने संबित पात्रा के राहुल गांधी को मौजूदा दौर के श्मीर जाफरश् वाले बयान पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें जल्द ही करारा जवाब मिलेगा। हम उनसे (बीजेपी) यह भी सीख रहे हैं कि कैसे जवाब देना है।

हर किसी को बोलने का अधिकार : राहुल गांधी

राहुल के बयान और अडाणी मुद्दे पर राज्यसभा में हंगामा, बैठक 23 मार्च तक स्थगित

(एजेंसी)

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने लंदन में अपने लोकतंत्र वाले बयान को लेकर स्थिति स्पष्ट करने के लिए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला से सदन में बोलने की अनुमति मांगी है। 18 मार्च को विधानसभा अध्यक्ष को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि संसद किसी भी अन्य संस्था की तरह संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 में निहित प्राकृतिक न्याय के नियमों से बंधी है। पत्र में लिखा, वे प्रशासनिक मनमानी के खिलाफएक गारंटी हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को एक ऐसे मामले में सुनवाई का अधिकार है, जिससे वे संबंधित हैं। निश्चित रूप से, आप इस बात से सहमत होंगे कि सभी संस्थानों की तरह संसद इस अधिकार का सम्मान करने की जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। उन्होंने रविशंकर प्रसाद के मामले का भी हवाला दिया, जिसमें संसद में उनके संबंध में ज्योतिरादित्य सिंधिया द्वारा की गई टिप्पणियों के संबंध में स्पष्टीकरण देने के लिए नियम का सहारा लिया गया था। उन्होंने कहा, लोकसभा डिजिटल लाइब्रेरी पर कई उदाहरण उपलब्ध

हैं, जो बताते हैं कि यह अधिकार संसद के भीतर दिए गए बयानों का जवाब देने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सार्वजनिक डोमेन में लगाए गए आरोपों तक भी है। राहुल गांधी सदन के सदस्य होने के नाते लोकसभा में बोलने पर जोर दे चुके हैं। हालांकि, बीजेपी उनसे माफी की मांग कर रही है, लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने राज्यसभा में कहा कि माफी का सवाल ही नहीं उठता।

पश्चिम बंगाल के हावड़ा में दर्दनाक सड़क हादसा

बस-कार की टक्कर में तीन लोगों की मौत, 9 घायल

(एजेंसी)

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले में सुबह एक सरकारी बस और एक कार की आमने-सामने की टक्कर में तीन लोगों की मौत हो गई और नौ अन्य घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना बगनान थाना क्षेत्र के ईश्वरीपुर में राष्ट्रीय राजमार्ग 16 पर हुई। पुलिस के मुताबिक, टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के बोनट समेत आगे का हिस्सा तहस नहस हो गया। पुलिस ने बताया कि शवों को बाहर निकालने के लिए कार के कुछ हिस्सों को गैस कटर से काटना पड़ा। उन्होंने बताया कि अभी तक मृतकों की

पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस के मुताबिक, दुर्घटना के वक्त बस कोलकाता की ओर जा रही थी, जबकि कार पुरबा मेदिनीपुर में दीघा की ओर जा रही थी। उन्होंने बताया कि हादसे में बस में सवार नौ यात्री घायल हो गए, जिनमें से पांच लोगों को बगनान अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि बाकी लोगों को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई।

हंगामे के बीच लोक सभा में पास हुआ जम्मू-कश्मीर का बजट

(एजेंसी)

नई दिल्ली। विपक्षी दलों के हंगामे और नारेबाजी के बीच लोक सभा ने जम्मू कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के बजट को ध्वनिमत से पारित कर दिया। दोपहर बाद 2 बजे जब लोक सभा की कार्यवाही शुरू हुई तो पीठासीन सभापति राजेन्द्र अग्रवाल ने आवश्यक कागजों को सदन के पटल पर रखवाना शुरू किया। इसके बाद जैसे ही उन्होंने जम्मू कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के बजट पर चर्चा शुरू करवाई, कांग्रेस, डीएमके और अन्य कई विपक्षी दलों के सांसद जेपीसी की मांग को लेकर वेल में आकर नारेबाजी करने लगे। हंगामे और नारेबाजी के बीच जम्मू से भाजपा सांसद जुगल किशोर शर्मा ने बजट पर अपनी बात रखी और इसके बाद लोक सभा ने जम्मू कश्मीर के बजट को ध्वनिमत से पारित कर दिया। बजट के पारित होते ही भाजपा सांसदों ने भी अपनी-अपनी सीट पर खड़े होकर राहुल गांधी से माफी मांगने को लेकर नारेबाजी करने लगे। हंगामे के बीच पीठासीन सभापति राजेन्द्र अग्रवाल ने सदन चलाने का प्रयास किया लेकिन उनकी कोशिश बेनतीजा रही और उन्होंने सदन की कार्यवाही को दिन भर के लिए स्थगित कर दिया। विक्रम संवत अर्थात नववर्ष की शुरूआत और उगादि पर्व पर कई सांसदों की मांग को देखते हुए छुट्टी रखी गई है। लोक सभा की कार्यवाही अब गुरुवार को 11 बजे शुरू होगी। आपको बता दें कि, इससे पहले सदन में जारी गतिरोध को खत्म करने के लिए लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में भी सदन चलाने को लेकर सरकार और विपक्षी दलों के बीच कोई सहमति नहीं बन पाई। दोपहर एक बजे लोक सभा अध्यक्ष द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी, टीआरएस से एन. नागेश्वर राव, बीजेडी से अचुत्यानंद सामंत, बीएसपी से गिरीश कुमार, समाजवादी पार्टी से एसटी हसन और सीपीएम से एएम आरिफ शामिल हुए थे।

आर्मी चीफ बोले, भारत के आगे भविष्य में भी आतंकवाद

आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां होंगी, सुरक्षा बल तैयार

(एजेंसी)

गुरुग्राम। सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कहा कि भारत के समक्ष भविष्य में भी आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियां उत्पन्न होंगी और देश के सुरक्षा बल ''एकजुट होकर उनसे निपटेंगे। जनरल पांडे यहां मानेसर में राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय पुलिस कमांडो प्रतियोगिता का उद्घाटन करने के बाद बोल रहे थे। जनरल पांडे ने कहा कि नये जमाने की तकनीक ने

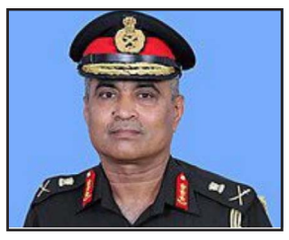

दुश्मन को ड्रोन, इंटरनेट, साइबर स्पेस और सोशल मीडिया के जरिए अपनी गतिविधियों को अंजाम देने में सक्षम बनाया है। उन्होंने कहा, ''आप सभी जानते हैं कि आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षा की स्थिति हमारे देश को विभिन्न तरीकों से प्रभावित कर रही है। हम एकजुट होकर इन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इससे विभिन्न राज्यों में (सुरक्षा) स्थिति में सुधार हो रहा है। उन्होंने कहा, ''ये चुनौतियां भविष्य में भी जारी रहेंगी। इनमें से कुछ चुनौतियां लंबे समय तक रहेंगी, कुछ परोक्ष रूप से मौजूद रहेंगी जबकि कुछ गुप्त रूप से रहेंगी। जनरल पांडे ने कहा कि देश में आतंकवादी हमलों की ''आशंका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने साथ ही इस तरह के षड्यंत्रों एवं नेटवर्क को विफल करने के लिए खुफिया एवं सुरक्षा बलों की प्रशंसा की। उन्होंने संघीय आतंकवाद रोधी बल एनएसजी की, बम का पता लगाने और उसे निष्क्रिय करने, ड्रोन का मुकाबला करने के साथ-साथ अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ प्रभावी समन्वय में विशेष कौशल विकसित करने के लिए प्रशंसा की। प्रतियोगिता में विभिन्न केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल और राज्य पुलिस संगठनों की कुल 24 टीमें भाग ले रही हैं। यह प्रतियोगिता 31 मार्च को समाप्त होगी।

खड़गे की नई टीम में प्रियंका गांधी को मिल सकती है बड़ी भूमिका

(एजेंसी)

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में 2022 के विधानसभा चुनाव में पार्टी को जीत दिलाने के बाद कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की नई टीम में चुनाव प्रबंधक की भूमिका निभा सकती हैं। राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर के साथ बातचीत के दौरान चुनाव प्रबंधन टीम गठित करने का विचार आया और कहा गया कि पीके को प्रतिष्ठित पद मिल सकता है लेकिन बात नहीं बनी। प्रियंका गांधी के करीबी सूत्रों ने इस तरह के कदम से इनकार करते हुए कहा कि यह पूरी तरह से पार्टी अध्यक्ष का फैसला है। प्रियंका गांधी यूपी की प्रभारी महासचिव हैं जहां पार्टी के पास केवल एक सांसद और दो विधायक हैं और बड़ी चुनौती 2024 के आम चुनाव में है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) को सभी राज्यों से प्रतिनिधित्व दिया जाएगा और किसी भी राज्य को बड़ा हिस्सा नहीं मिलेगा। निवर्तमान विस्तारित सीडब्ल्यूसी में दिल्ली, केरल, राजस्थान और कर्नाटक की पार्टी में प्रमुख हिस्सेदारी थी। कांग्रेस इस साल प्रमुख चुनावों का सामना करने जा रही है जिसमें कर्नाटक (मई) और इस साल के अंत में मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के राज्य चुनाव शामिल हैं। पार्टी अध्यक्ष को इसके गठन के लिए अधिकृत किया गया था। पार्टी के प्रभारी महासचिव संचार जयराम रमेश ने कहा था, श्कांग्रेस अध्यक्ष को नए सीडब्ल्यूसी के गठन के लिए अधिकृत करने के लिए सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। कांग्रेस ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण देने का फैसला किया है।

अमृतपाल सिंह के समर्थकों पर पुलिस का एक्शन, टैंट उखाड़ गाड़ियों में डाले

मोहाली । वारिस पंजाब दे के प्रमुख अमृतपाल सिंह पर हुए एक्शन के बाद मोहाली में जुटे प्रदर्शनकारियों को पंजाब पुलिस ने हिरासत में लिया है। मामला भड़कता देख यहां पर रैपिड एक्शन फोर्स की टीमें तैनात कर दी गई है। दरअसल, प्रदर्शनकारी हाथों में तलवारें, रॉड, डंडे लेकर पब्लिक पैसेज (एयरपोर्ट रोड) में डटे हुए हैं। पूरे रास्ते में टैंट लगाए हुए थे, जिसे पुलिस ने उखाड़ दिया है। वहीं प्रदर्शनकारियों को हिरासत में ले लिया है, जिन्हें उठा कर बसों में डाला जा रहा है। बता दें कि एयरपोर्ट रोड पर अमृतपाल सिंह के समर्थक सैकड़ों की संख्या में जुटे हुए थे। वहीं अमृतपाल सिह की गिरफ्तारी को लेकर सस्पेंस अभी भी बरकरार है। हालांकि पंजाब पुलिस ने अमृतपाल पर छै। लगा दिया है।

पंजाब में आपराधिक गतिविधियों से निपटने के लिए कठोर कदम उठाने से राज्य सरकार नहीं डरती है : अरविंद केजरीवाल

(एजेंसी)

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री एवं आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पंजाब में आपराधिक गतिविधियों से निपटने के लिए कठोर कदम उठाने से राज्य सरकार नहीं डरती है।

उनकी यह टिप्पणी पंजाब पुलिस की ओर से अलगाववादी अमृतपाल सिंह एवं उसके संगठन 'वारिस पंजाब देश् के सदस्यों के खिलाफ अभियान शुरू किये जाने के बाद आई है।

केजरीवाल ने कहा, ''जब हम पंजाब में सत्ता में आए थे, तब लोगों ने कहा कि वे (आप) केवल शिक्षा, स्वास्थ्य और बिजली के क्षेत्र में कार्य कर सकते हैं, कानून-व्यवस्था की स्थिति को संभालना कठिन होगा। हमें पुरानी सरकारों से विरासत में जो व्यवस्था मिली है, उससे प्रतीत होता है कि अपराधियों को राजनीति संरक्षण प्राप्त था, लेकिन हमारी सरकार ईमानदार है। हम ऐसे तत्वों के खिलाफकठोर कार्रवाई करते हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार की ओर से अपराधियों के खिलाफकठोर कार्रवाई ने यह दिखाया है कि ''आप कट्टर देशभक्त पार्टी है।

केजरीवाल ने कहा, ''मैं लोगों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं। उन्होंने अपराधियों के खिलाफकार्रवाई के लिए पंजाब के अपने समकक्ष भगवंत मान को धन्यवाद दिया।

पुलिस ने अमृतपाल और उसके संगठन के सदस्यों की धरपकड़ के लिए शनिवार से व्यापक अभियान शुरू किया है। पुलिस कार्रवाई को लेकर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए मान ने कहा कि उन्हें कई लोगों ने फोन करके सरकार की प्रशंसा की है।

दिल्ली शराब घोटाला : मोबाइल फोन लेकर ईडी के सामने पहुंचीं कविता, एजेंसी ने लगाया था नष्ट करने का आरोप

(एजेंसी) नई दिल्ली। तेलंगाना में सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) की विधान परिषद सदस्य के. कविता ने नयी दिल्ली में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सामने पूछताछ के लिए जाने से पहले अपने पुराने फोन दिखाये। उन्होंने एजेंसी के इस दावे पर कड़ा ऐतराज जताया कि उन्होंने अन्य कुछ पुराने फोन नष्ट कर दिये हैं। ईडी कार्यालय में प्रवेश से पहले कविता ने मीडियाकर्मियों को अपने पुराने फोन दिखाये। कविता ने ईडी के एक अधिकारी को अलग से पत्र लिखकर कहा है कि वह अपने सभी फोन जमा कर रही हैं जो उन्होंने अतीत में इस्तेमाल किए होंगे और जो अधिकारी ने मांगे हैं। उन्होंने कहा कि उनके अधिकार को लेकर और इस दलील को लेकर किसी पूर्वाग्रह के बिना ये फोन जमा किये गये हैं कि क्या किसी महिला के निजता के अधिकार का खंडन करते हुए उसके फोन में तांकझांक की जा सकती है। कविता ने कहा, ''मैं इस अवसर पर एजेंसी की ओर से किये गये दुर्भावना के स्पष्ट कार्य की ओर इशारा करना चाहूंगी जिसने नवंबर 2022 में कुछ अन्य अभियुक्तों के खिलाफ दायर अभियोजन की शिकायत में मेरे खिलाफआरोप लगाने का विकल्प चुना और आरोप लगाया गया है कि कुछ फोन नष्ट कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि वह समझ नहीं पा रहीं कि एजेंसी ने कैसे, क्यों और किन परिस्थितियों में इस तरह के आरोप लगाये हैं, जबकि ''मुझे तलब तक नहीं किया गया और कोई प्रश्न नहीं पूछा गया। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी कविता ने यह दावा भी किया कि एजेंसी ने उन्हें सबसे पहली बार इस साल मार्च महीने में बुलाया था।

संपादकीय

लोकतंत्र और नैतिकता

यह विडंबना ही है कि सत्ता की महत्वाकांक्षा के चलते सरकार बनाने-गिराने का जो खेल हाल के दशकों में राज्यों में नजर आया, उसमें राज्यपाल की भूमिका को लेकर गाहे-बगाहे सवाल उठे हैं। कहीं न इस पद की गरिमा के विपरीत राज्यपाल केंद्र में सत्तारूढ़ सरकार के राजनीतिक प्रतिनिधि के तौर पर व्यवहार करते नजर आते हैं। ऐसा नहीं है कि यह प्रवृत्ति हाल में ही उभरी हो, आजादी के कुछ दशकों के बाद से ही यह खेल निरंतर जारी रहा है। राज्य में विपक्षी दलों की सरकारों को गिराने के लिये इस पद का दुरुपयोग कांग्रेस से लेकर राजग सरकारों के दौर में होता रहा है। इस संकट को महसूस करते हुए ही सुप्रीम कोर्ट को महाराष्ट्र प्रकरण में तल्ख टिप्पणी करनी पड़ी। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कड़ी टिप्पणी की कि सत्तारूढ़ पार्टी में असंतोष की स्थिति में राज्यपाल का बहुमत साबित करने को कहना अनुचित है। ऐसे में सत्तारूढ़ दल में यदि मतभेद होने पर बहुमत सिद्ध करने को कहा जाता है तो निर्वाचित सरकार के अस्तित्व पर संकट पैदा हो सकता है। यानी इसमें राज्यपाल की भूमिका हस्तक्षेप करने वाली नहीं होनी चाहिए। दरअसल, मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी.वाईघ् चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने टिप्पणी करते हुए कहा कि यदि ऐसा किया जाता है तो यह लोकतंत्र का प्रहसन ही होगा। उल्लेखनीय है कि खंडपीठ ने यह टिप्पणी बीते साल अविभाजित शिवसेना में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में हुए विद्रोह के बाद राज्य में पैदा राजनीतिक संकट के बाबत की। तब भी राज्यपाल की भूमिका को लेकर विपक्ष ने कई सवाल खड़े किये थे। दरअसल, कोर्ट ने इस संकट के बाबत दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान ही यह तल्ख टिप्पणी की। उल्लेखनीय है कि राज्य में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा व शिवसेना ने मिलकर चुनाव लड़ा था। कालांतर सत्ता में बंटवारे को लेकर दोनों दल अलग हो गये थे और कम विधायकों वाली शिवसेना ने कुछ विपक्षी दलों के समर्थन से सरकार बना ली थी। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि राज्य में शिवसेना की सरकार बनने के बाद भाजपा प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिवसेना सरकार पर हमलावर रही है। इस काम में जहां तमाम विवादों में सरकारी एजेंसियों के इस्तेमाल के आरोप लगे, वहीं राज्यपाल की भूमिका पर सवाल उठते रहे। केंद्र की सत्ता में होने का लाभ राज्य भाजपा को मिला। राजग के सबसे पुराने सहयोगियों में रहे शिवसेना व भाजपा में कटुता इस हद तक जा पहुंची कि बात सरकार को गिराने तक में परोक्ष भूमिका तक पहुंच गई। यह राजनीतिक विद्रूपता ही है कि किसी पार्टी के बैनर तले चुनकर आये जनप्रतिनिधि सत्ता व अन्य सुविधाओं के प्रलोभन में पाला बदलकर मूल दल के विरोधियों के साथ बगलगीर हो जाते हैं। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे की सरकार भाजपा के समर्थन से ही अस्तित्व में बनी हुई है। सही मायनों में शीर्ष अदालत ने इन्हीं राजनीतिक विद्रूपताओं की ओर इशारा करते हुए कहा है कि राज्यपाल द्वारा किसी राजनीतिक दल में असंतोष के चलते बहुमत साबित करने को कहना अपरोक्ष रूप से सरकार को अस्थिर करना ही है। कुल मिलाकर कोर्ट ने राज्यपाल की भूमिका के नैतिक पक्ष को उजागर करने के साथ ही इस पद की गरिमा को बनाये रखने का संदेश दिया है। हालांकि, महाराष्ट्र के राज्यपाल की तरफसे उपस्थित सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने दलील दी कि कई वाजिब कारण मौजूद थे, जिसके चलते राज्यपाल ने उद्धव सरकार को सदन में बहुमत साबित करने को कहा था। इसमें शिवसेना के 34 विधायकों के हस्ताक्षर वाला पत्र भी शामिल था। जिसमें तत्कालीन उद्धव ठाकरे नीत सरकार से समर्थन वापस लेने की बात कही गई थी।

संविधान बचाने की चिंता

22 मार्च से चौत्र नवरात्रि शुरू हो रही है और हमेशा की तरह देश भर के मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ेगी। भारत में बरसों से ऐसा ही होता आया है, और धीरे-धीरे फिल्मों, टीवी धारावाहिकों और भक्ति से जुड़े चौनलों के कारण पूजा-पाठ का प्रसार कुछ अधिक हो गया है। पिछले कुछ वक्त में राजनीति का चरित्र भी बदला है तो अब राजनेताओं की पूजा-पाठ, व्रत, हवन भी सार्वजनिक कार्यक्रम बन गए हैं। देश के धार्मिक और राजनैतिक चरित्र में बदलाव के इस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए अब उत्तरप्रदेश सरकार ने प्रशासनिक अधिकारियों को चौत्र नवरात्रि और रामनवमी के दौरान मंदिरों में विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने को कहा है। योगी सरकार इन कार्यक्रमों में प्रदर्शन करने के लिए चुने गए कलाकारों को मानदेय के रूप में भुगतान करने के लिए प्रत्येक जिले को 1 लाख रुपये भी उपलब्ध कराएगी। राज्य के संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव मुकेश मेश्राम ने 10 मार्च को जारी एक आदेश में कहा है कि चौत्र नवरात्रि का विशेष महत्व है। इस दौरान नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करने के लिए देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है, इसलिए इस अवधि में धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन प्रस्तावित है। यह आदेश सभी जिला मजिस्ट्रेटों और संभागीय आयुक्तों को भेजा गया है। पत्र में कहा गया है कि प्रत्येक ब्लॉक, तहसील और जिले में आयोजन समितियों का गठन किया जाना चाहिए। यह सुझाव भी दिया गया है कि मंदिरों और शक्तिपीठों में दुर्गा सप्तशती और अखंड रामायण का पाठ कराया जाए। आदेश के अनुसार, आयोजकों से संस्कृति विभाग की वेबसाइट पर तस्वीरें अपलोड करने की अपेक्षा की जाती है। आदेश में कहा गया है कि जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाए और बड़ी जनभागीदारी सुनिश्चित की जाए। उत्तरप्रदेश सरकार के इस फैसले के बाद यह सवाल उठता है कि क्या यह राज्य संविधान के अनुसार चलेगा या धर्म के आधार पर। और धर्म का मतलब यहां हिंदू धर्म से है, क्योंकि बाकी धर्मावलंबियों को हिंदुत्व के पैरोकार विधर्मी कहते हैं। कर्नाटक में शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब पहनने के सवाल पर छात्राओं के साल के साल बर्बाद हो रहे हैं। लेकिन वहां धर्मनिरपेक्षता का तकाजा दिया जा रहा है कि शैक्षणिक परिसरों में धार्मिक पोशाकों की अनुमति नहीं दी जा सकती। हिंदुस्तान के कई स्कूलों में देवी सरस्वती की मूर्ति बनी हुई है। प्रार्थना के बाद बच्चे गायत्री मंत्र का पाठ करते हैं।

बोर्ड परीक्षाओं से पहले स्कूल द्वारा आयोजित हवनों में शामिल होते हैं। शारदीय नवरात्र के दौरान देश के कई शहरों में रात-रात भर गरबा चलता है। अब तो स्टेशन और एयरपोर्ट पर भी गरबा करते उत्साहियों को देखा जा सकता है। अभी होली बीती है और इस दौरान कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं, जिसमें दूसरे धर्म के लोगों पर, खासकर महिलाओं पर जबरदस्ती रंग फेंका जा रहा है। लेकिन इन सब को देखकर किसी की धार्मिक भावनाएं आहत नहीं होती। क्योंकि लोगों के दिमाग में यह भर दिया गया है कि भारत हिंदुओं का देश है और यहां हिंदुओं को पूरा हक है कि वे चाहे जैसे अपनी धार्मिक भावनाओं को प्रकट करें, धर्म के नाम पर जो तमाशा चाहें, वो खड़ा कर लें। कोई उन्हें कुछ नहीं कहेगा। लेकिन मॉल, अस्पताल या चलती ट्रेन में कोई शांति से एक ओर नमाज पढ़े, तो लोगों को हिंदू धर्म पर खतरा नजर आने लगता है। वे तब संविधान की आड़ में धर्मनिरपेक्षता की बात करने लगते हैं। यही कुतर्क क्रिसमस या न्यू ईयर के उत्सवों पर भी दिया जाता है, क्योंकि बाजार की चकाचौंध इन त्यौहारों पर अधिक होती है और इन्हें मान कर जनता का एक तबका खुद को आधुनिक समझने लगता है। किसी भी धर्म का कोई भी त्योहार मनाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन यह धार्मिक उदारता सभी धर्मों के त्योहार पर देखने नहीं मिलेगी, यह एक कड़वी सच्चाई है। उत्तर प्रदेश सरकार किस हक से करदाताओं के पैसे को नवरात्र मनाने के लिए खर्च कर सकती है, यह सवाल किया जाना चाहिए। लेकिन नहीं किया जाएगा, क्योंकि इससे पहले कांवड़ियों पर हेलीकॉप्टर से फूल बरसाने में भी जनता का ही धन लगा और जनता चुप रही। त्योहार पर मुफ्त सिलेंडर देने का वादा करने वाले त्योहार के ऐन पहले सिलेंडर के दाम बढ़ा देते हैं, जनता तब भी चुप ही रहती है। क्योंकि उसे भव्य राम मंदिर बनते देखना है। इस मंदिर में अपने आराध्य के दर्शन और पूजापाठ की भारी रकम उसे शायद चुकाना पड़े, क्योंकि अब भगवान तक पहुंच बनाने की प्रक्रिया भी महंगी हो गई है। लेकिन धर्म बचाने के लिए जनता यह सारे कष्ट सह लेगी।

अमेरिका, रूस और चीन के आपसी टकराव से वैश्विक शांति को खतरा

संजीव ठाकुर

अमेरिका ने चीन और ताइवान के संबंधों को लेकर ताइवान का खुलकर साथ देने की बात कही जिससे चीन ने आक्रामक होकर ईसे अपने अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप कहां है और कहा है कि यदि हमारे अंदरूनी मामले में कोई हस्तक्षेप करेगा तो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दूसरी तरफयूक्रेन को लेकर रूस अब बहुत संवेदनशील और आक्रामक हो गया हैस यूक्रेन से रूस ने अब निर्णायक पारी खेलने का मन बना लिया हैस इस तरह अमेरिका यूक्रेन तथा ताइवान को साथ देने के चक्कर में रूस और चीन से सीधा-सीधा टकराने के मूड में आ गया है। यह अलग मुद्दा है की सांडो की लड़ाई में खेतों की मेढ़ बरबाद जरूर होती हैं। इन तीनों महा बलियों की लड़ाई में अन्य पड़ोसी देशों की शांती भंग हो सकती है। दूसरी तरफअमेरिकी प्रशासन पूरी तरह से यूक्रेन का साथ देने की कटिबद्ध है, एवं पूर्वी यूरोप में अमेरिकी राष्ट्रपति एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में रुस पर दबाव डालने के लिए सैन्य बल भेजने की बात कही हैस अमेरिकी राष्ट्रपति की प्रेस वार्ता के हवाले अमेरिकी रक्षा मंत्री ने कहा कि रूस ने सीमा के आसपास बड़ी संख्या में सैन्य जमवाड़ा कर चुका है, एवं रूसी बलों को तैनात किया हैस जबकि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के पास अन्य सैन्य बल तथा बातचीत के जरिए का विकल्प भी मौजूद हैस वर्तमान की परिस्थितियों में यूक्रेन की सीमा पर लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूक्रेन के राष्ट्रपति से कहा कि रूस फरवरी या मार्च के प्रथम सप्ताह तक बड़ा हमला कर सकता हैस व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा प्रवक्ता एमिली होर्न ने बताया की अमेरिकी राष्ट्रपति ने आशंका जताई है कि रूस फरवरी में यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण कर सकता है। अमेरिकी रक्षा मंत्री लाएड ऑस्टिन ने कहा कि हमारा मानना है कि यूक्रेन पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का यह अंतिम फैसला नहीं है, जबकि उनके पास कई विकल्प खुले हुए हैं। यूक्रेन पर हमला करने की निसंदेह रूस के पास संपूर्ण क्षमताएं हैं। अमरीकी प्रशासन राष्ट्रपति रक्षा मंत्री ने पुतिन से यूक्रेन पर तनाव कम करने की अपील भी की है। रूस ने कहा है कि वार्ता के द्वारा भी खुले हुए यदि यूक्रेन अपनी हठधर्मिता से पीछे हटता है तो रूस वार्ता के माध्यम से एक मध्य मार्ग के बारे में विचार कर सकता है। पर यूक्रेन अपनी तीनों शर्तों पर अड़ा हुआ वह क्रीमिया महाद्वीप को वापस लेना चाहता है और नाटो की सदस्यता भी चाहता है, रूस द्वारा पाइप लाइन बिछाकर उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर करना चाहता हैं जिसे वह कभी बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं रहेगा। स्पष्ट है कि इस मामले में अमेरिका,ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देश यूक्रेन के साथ साथ कंधे से कंधा मिलाकर सैन्य बल की मदद करने को तैयार है। रूस के पास अब सैन्य बलों द्वारा यूक्रेन पर चढ़ाई करने के अलावा कोई मार्ग शेष नहीं रह जाता है। ऐसे में अमेरिकी राष्ट्रपति की यह आशंका कि रूस यूक्रेन पर फरवरी एवं मार्च के प्रथम सप्ताह में बड़ा हमला कर सकता है निर्मूल नहीं है। अमेरिका ने निर्णय लिया है कि वह पूर्वी यूरोप के सीमा पर एक बड़ा सैन्य बल रूस को टक्कर देने के लिए भेजेगा ।संभवत यह रूस पर दबाव डालने के लिए एक कूटनीतिक घोषणा एवं चाल हो सकती है। कुल मिलाकर यूक्रेन की सीमा पर जिस तरह से सैनिकों का जमवाड़ा इकट्ठा हो गया है, उससे जंग की आशंकाएं बढ़ गई हैं। अमेरिका के ज्वाइंट चीफऑफस्टाफके आर्मी जनरल मार्क मिले ने यूक्रेन के निकट तैनात रूसी सेना गंभीर तस्वीर पेश की है। उन्होंने कहा है कि यूक्रेन की सीमा पर उसने जमीन, वायु, जल क्षेत्र में बलों की तैनाती कर दी है, साथ ही रूस के पास साइबर तथा इलेक्ट्रॉनिक युद्ध की क्षमताएं भी हैं। इसके अलावा उसके पास विशेष अभियान दल भी हैं। मिले के अनुसार यह अत्यंत चिंताजनक एवं विचारणीय प्रश्न है कि इसके पूर्व रूस की इतनी लंबी चौड़ी सेना की तैनाती कभी भी यूक्रेन की सीमा पर नहीं देखी गई है। इसका मतलब सीधा और साफहै कि रूस युद्ध के प्रति एकदम गंभीर है एवं यूक्रेन को सबक सिखाना चाहता है। पर इसे वैज्ञानिक विश्लेषक अधिनायकवाद इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाला बताते हैं, जिससे विश्व युद्ध की आशंका को बढ़ावा मिल सकता है, और विश्व युद्ध होता है तो बहुत बड़ा विनाशकारी युद्ध होने की पूरी संभावना है। मिले ने पुतिन से संघर्ष के बदले कूटनीतिक मार्ग अपनाने की अपील की है। उल्लेखनीय है कि रूस ने यूक्रेन की सीमा के पास एक लाख से ज्यादा सैनिक तथा जमीन से जमीन मारक क्षमता वाले टैंक तथा लड़ाकू हवाई जहाज तैनात करके रखे हैं। ऐसे में यूक्रेन जैसे छोटे देश के पास अमेरिका ब्रिटेन एवं अन्य यूरोपीय देश और नाटो देश के सदस्यों से सैन्य दल लेने के अलावा कोई और रास्ता शेष नहीं बचा है। यह तो तय है कि अमेरिका यूक्रेन की मदद करने के लिए कटिबद्ध है पर बदली हुई परिस्थितियों में यूक्रेन का साथ देने के लिए कहीं अमेरिका अलग-अलग ना पड़ जाए, इसके अलावा उसने चीन को इस मामले में दखल नहीं देने चेतावनी भी दी है। फ्लिहाल चीन ताइवान मामले में अमेरिका के सीधा सामने है। क्योंकि अमेरिका ताइवान को भी मदद करने का वादा कर चुका है, ऐसे में अमेरिका को कई तरफ अपनी सेनाएं भेजने का काम करना होगा। कुल मिलाकर यूक्रेन, रूस,चीन, ताइवान को लेकर वैश्विक स्तर पर अशांति का माहौल बना हुआ है। कूटनीतिक बातचीत कर इसका हल निकाल कर वैश्विक शांति का संदेश देना चाहिए।

हरियाणा कौशल भर्ती, अध्यापक परेशान, दूर स्टेशन, सैलरी जीरो समान

प्रियंका सौरभ

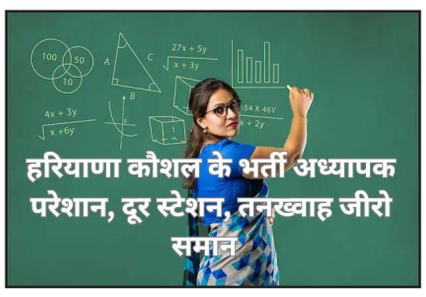

कौशल के नाम पर ढिंढोरा पीटती सरकार की सच्चाई है बेहद डरावनी. सिस्टम के साथ खिलवाड़ कर मेरिट से भर्ती हुए अध्यापकों की स्थिति है बेहद चिंतनीय. 18000 से 20000 की नौकरी के लिए पोस्ट ग्रेजुएट और एचटेट पास उच्च शिक्षित युवा हुए बेघर. घर से सैंकड़ों किलोमीटर दूर नौकरी पर भेजे. निगम ट्रांसफर के नाम पर एप्लीकेशन एकत्रित कर रहा बस, करता कुछ नहीं. पिछले तीन माह से तनख्वाह का एक भी पैसा नहीं आया. किरायेदार घर से निकाल रहे. मानसिक रोगों का शिकार हो रहे. भविष्य में पक्की नौकरी पर मुख्यमंत्री की ना. ऐसे में हरियाणा कौशल एक ड्रामा और समय की खपत नहीं तो और और क्या ? जी हाँ, हरियाणा सरकार की चर्चित योजना हरियाणा कौशल के तहत भर्ती किए गए कर्मचारी बिलकुल नाखुश है. एक तरफजहां सरकार हरियाणा कौशल के तहत भर्ती को अपनी कामयाबी का सबसे महत्वपूर्ण माइलस्टोन मानती है वही इस निगम के तहत भर्ती किए गए कर्मचारी चाहे किसी भी विभाग में हो आज के दिन तरह-तरह की चुनौतियों से जूझ रहे हैं. हम बात करते हैं हाल ही में हरियाणा के स्कूल शिक्षा विभाग में हरियाणा कौशल के तहत भर्ती किए गए अध्यापकों की और इन अध्यापकों में भी खासकर महिला अध्यापकों की जिनकी समस्याएं आज सबसे ज्यादा है. हाल ही में हरियाणा सरकार ने हजारों की संख्या में हरियाणा कौशल के तहत राज्य के सरकारी स्कूलों में पीजीटी और टीजीटी अध्यापकों की भर्ती की है. सरकार इस भर्ती के लिए अखबारों की सुर्खियों में रही कि हमने योग्यता के आधार पर राज्य के गरीब युवाओं को नौकरी देकर एक अनुपम कार्य किया है. मगर इन अध्यापकों को भर्ती हुए आज चार से पांच महीने होने को है. मगर अभी तक इनके खाते में घ भी नहीं आया. वेतन की बात तो दूर इन नए अध्यापकों को घर से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्कूल स्टेशन दिए गए. कही-कहीं तो ऐसे स्कूल स्टेशन दिए गए जहां पहुंचना जंगल में रास्ता खोजने से कम नहीं है.यातायात की कमी के चलते अध्यापकों को स्कूल तक पहुंचने में बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है. मेरे इस प्रश्न के जवाब में सरकार के नुमाइंदे यह भी कहेंगे कि क्यों ये अध्यापक वहीँ रहकर अपनी ड्यूटी क्यों नहीं करते तो जनाब इसका सीधा सा उत्तर है कि 15000 से 20000 की नौकरी करने वाला कोई भी व्यक्ति परिवार सहित इस महंगाई के जमाने में कैसे किराए के घर पर रहेगा और अपने दैनिक कार्यों को इस छोटी सी तनख्वाह से पूरा कर पाएगा. यह काफी सोचनीय विषय है और ये समस्या महिला अध्यापकों के लिए तो सौ गुना बढ़ जाती है. क्योंकि महिलाओं को अपने अलावा अपने बच्चों के साथ-साथ सास-ससुर सहित पूरे परिवार की देखभाल भी करनी होती है. सैकड़ों किलोमीटर दूर स्टेशन देने के कारण ये महिला अध्यापिकाऐं रोजाना सफर नहीं कर सकती और न ही कम तनख्वाह के चलते अपनी ड्यूटी स्टेशन पर अपना नया घर बसा सकती है और आज के दिन तो घर बसे भी कैसे? पिछले तीन महीनों की नौकरी में खाते में 1 भी नहीं आया है. इतने दिन अपनी जेब से या घरवालों से उधार ही लेकर काम चल रहा है यही नहीं सैंकड़ों किलोमीटर की दूरी तय करने में महिलाओं को काफी शारिरिक समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा है जैसे जो महिलाएं इस समय गर्भवती है उनको दोहरे कर्तव्य निभाने पड़ रहे हैं. एक तरफतो उनको खुद को देखभाल की जरूरत है तो दूसरी तरफ अपनी ड्यूटी की चिंता है.ऐसे में हरियाणा कौशल राज्य के युवाओं के लिए नौकरी के मामले में गले की फांस बन गया है. एक तरफजहां कौशल में नाम आने पर युवाओं को नौकरी की खुशी होती है तो दूसरी तरफज्वाइनिंग के पहले दिन भविष्य का गम सताने लग जाता है. राज्य के मुखिया मनोहर लाल खट्टर हरियाणा की विधानसभा में कह चुके हैं कि कौशल के तहत भर्ती किए गए कर्मचारी कच्चे हैं और जब इन पदों पर नियमित कर्मचारी आ जाएंगे तो उनको हटा दिया जाएगा. ऐसे में युवा नौकरी करें तो कैसे करें ? बेरोजगारी का आलम यह है कि इनको पेट के लिए यह नौकरी करनी पड़ रही है. राज्य के शिक्षित युवा आज दर-बदर की ठोकर खा रहे हैं. सरकार उनके लिए कोई कदम नहीं उठा रही. अगर उठाती है तो कौशल के नाम पर उल्लू बनाती है. अगर हम कौशल के तहत भर्ती किए गए अध्यापकों के स्थानान्तरण के मामले को सोचे तो स्कूल शिक्षा विभाग से लेकर हरियाणा कौशल के महाप्रबंधक तक को इस बात का पता नहीं है कि इस मामले में आखिरी क्या होगा? ऐसे में स्थानान्तरण की अर्जी लेकर राज्य के हजारों अध्यापक किस दरवाजे पर जाएँ? महिला अध्यापकों की अति संवेदनशील समस्या को अब कौन सुने? समस्या को कैसे सुलझाया जाए? यह एक गंभीर चिंता का विषय है. हरियाणा सरकार और स्कूल शिक्षा विभाग को इस मामले को प्राथमिक तौर पर देखना चाहिए. नए अध्यापकों खासकर महिला अध्यापकों को प्राथमिकता के आधार पर नजदीकी स्टेशन पर तैनात किया जाये और उनका कार्यकाल निर्धारित किया जाए. ताकि मध्यांतर में उनको बेवजह मानसिक दबाव का सामना खासकर स्टेशन को लेकर न करना पड़े और यही नहीं हरियाणा सरकार को कौशल के तहत भर्ती किए गए अध्यापकों के वेतन बारे में ठोस कदम उठाने होंगे. अभी तक इनके खाते में 1 भी आखिरी क्यों नहीं पहुंचा? इनके मासिक वेतन की तारीख फिक्स की जाए और समय पर तनख्वाह डाली जाए. इसके अलावा स्कूल शिक्षा विभाग कौशल कर्मचारियोंध्अध्यापकों की समस्याओं को नियमित कर्मचारियों की समस्याओं की तरह ही देखें और इन पर तुरंत संज्ञान लें.तभी इन अध्यापकों के अलावा हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था का भला होगा और यह नए भर्ती किए योग्यध्उच्च शिक्षित अध्यापक अपने मानसिक दबाव को एक तरफरख कर बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना शत प्रतिशत योगदान दे सकेंगे।

अमेरिका में बंदूक संस्कृति ने बड़ा सामाजिक संकट खड़ा कर दिया है

ललित गर्ग

अमेरिका में आए दिन ऐसी खबरें आती रहीं कि किसी सिरफिरे ने अपनी बंदूक से कहीं स्कूल में तो कभी बाजार में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उसमें नाहक ही लोग मारे गए। इसके पीछे एक बड़ा कारण वहां आम लोगों के लिए हर तरह के बंदूकों की सहज उपलब्धता है। हिंसा की बोली बोलने वाला, हिंसा की जमीन में खाद एवं पानी देने वाला, दुनिया में हथियारों की आंधी लाने वाला अमेरिका जब खुद हिंसा का शिकार होने लगा तो उसकी नींद टूटी हैं। अमेरिका की आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही रही है कि यहां हिंसा इतनी सहज बन गयी है कि हर बात का जवाब सिर्फ हिंसा की भाषा में ही दिया जाने लगा। वहां हिंसा का परिवेश इतना मजबूत हो गया है कि वहां की बन्दूक-संस्कृति से वहां के लोग अपने ही घर में बहुत असुरक्षित हो गए थे। लंबे समय से बंदूकों की सहज उपलब्धता का खामियाजा उठाने के बाद वहां के लोगों ने अपने स्तर पर इसके खिलाफ मोर्चा खोलना शुरू कर दिया है और राष्ट्रपति जो बाइडेन को हथियारों के दुरुपयोग पर अंकुश से संबंधित कार्यकारी आदेश पर किये हस्ताक्षर करने को विवश होना पड़ा है। पिछले साल जून में भारी तादाद में लोगों ने सड़कों पर उतर कर बंदूकों की खरीद-बिक्री से संबंधित कानून को बदलने की मांग की। जरूरत इस बात की है कि इस समस्या के पीड़ितों को राहत देने के साथ-साथ बंदूकों के खरीदार से लेकर इसके निर्माताओं और बेचने वालों पर भी सख्त कानून के दायरे में लाया जाए। अमेरिका की ही तरह पंजाब में पनप रही बन्दूक-संस्कृति को भी नियंत्रित किया जाना जरूरी है। अमेरिका में आए दिन ऐसी खबरें आती रहीं कि किसी सिरफिरे ने अपनी बंदूक से कहीं स्कूल में तो कभी बाजार में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उसमें नाहक ही लोग मारे गए। इसके पीछे एक बड़ा कारण वहां आम लोगों के लिए हर तरह के बंदूकों की सहज उपलब्धता है और इन बन्दूकों का उपयोग मामूली बातों और उन्मादग्रस्त होने पर अंधाधुंध गोलीबारी में होता रहा है, जो गहरी चिन्ता का कारण बनता रहा। आम जन-जीवन में किसी सिरफिरे व्यक्ति की सनक से किसी बड़ी अनहोनी का अन्देशा हमेशा वहां बना रहता है, वहां की आस्थाएं एवं निष्ठाएं इतनी जख्मी हो गयीं कि विश्वास जैसा सुरक्षा-कवच मनुष्य-मनुष्य के बीच रहा ही नहीं। साफ चेहरों के भीतर कौन कितना बदसूरत एवं उन्मादी मन समेटे है, कहना कठिन है। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही इन हथियारों एवं हिंसक मानसिकता का शिकार है। अमेरिका दुनिया पर आधिपत्य स्थापित करने एवं अपने शस्त्र कारोबार को पनपाने के लिये जिस अपसंस्कृति को उसने दुनिया में फैलाया है, उससे पूरी मानवता कराह रही है, पीड़ित है। अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था (न्यू वर्ल्ड आर्डर) की बात की है, खुलेपन की बात की है लगता है विश्वमानव का दम घुट रहा है और घुटन से बाहर आना चाहता है। विडम्बना देखिये कि अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहां की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं हैं। ऐसे कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्तरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोग मारे गए। 2014 में अमेरिका में हत्या के कुल दर्ज करीब सवा चौदह हजार मामलों में अड़सठ फीसद में बंदूकों का इस्तेमाल किया गया था। खुद सरकार की ओर से कराए गए एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया था कि अमेरिका में सत्रह साल से कम उम्र के करीब तेरह सौ बच्चे हर साल बंदूक से घायल होते हैं। अमेरिकी प्रशासन को 'बंदूक संस्कृति' ही नहीं बल्कि हथियार संस्कृति पर भी अंकुश लगाना होगा, अब तो दुनिया को जीने लायक बनाने में उसे अपनी मानसिकता को बदलना होगा। कोई घातक हथियार साथ में होने के बाद मामूली बातों पर होने वाले झगड़े या फिर बेवजह ही किसी के उन्माद से ग्रस्त हो जाने पर कैसे नतीजे सामने आ सकते हैं, अमेरिका ने उसे करीब से देखा है, जहां हर साल सैंकड़ों लोग इसकी वजह से मारे जाते हैं। किसी भी संवेदनशील समाज को इस स्थिति को एक गंभीर समस्या के रूप में देखना-समझना चाहिए। यह बेवजह नहीं है कि जिस अमेरिका में ज्यादातर परिवारों के पास अलग-अलग तरह की बंदूकें रही हैं, वहां अब इस हथियार की संस्कृति के खिलाफ आवाजें उठनी शुरू हो गई हैं। यह आवाज उठना बहुत जरूरी था, देर आये दुरुस्त आये की कहावत के अनुसार अमेरिका की आंख खुली है तो अमेरिका के साथ दुनिया को एक शांति एवं अहिंसा का सन्देश जायेगा। निश्चित ही अमेरिका में हिंसा की इस संस्कृति पर नियंत्रण नितान्त जरूरी था। क्योंकि अमेरिका आज दुनिया में अपराध का सबसे बड़ा अड्डा है और हिंसा की जो संस्कृति उसने दुनिया में फैलाई, आज वह स्वयं उसका शिकार है। जाहिर है कि वहां होने वाली गोलीबारी की घटनाएं सैकडों लोगों के प्राण लेती रही है जो इस्लामी आतंकवाद की घटनाएं नहीं होती थीं तो फिर यह क्या थी? यह ऐसा सवाल है, जो अमेरिकी सभ्यता को बेनकाब कर देता है। क्या यह अमेरिका की भौतिकतावादी एवं हिंसक संस्कृति की निष्पत्ति है? पीड़ितों के मानसिक आघात और अन्य मुश्किलों को समझते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने मंगलवार को बंदूक के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने की दिशा में सार्थक पहल की है। इसके तहत बंदूक की बिक्री के दौरान की जाने वाली 'पृष्ठभूमि जांच' को बेहतर बनाया जाएगा। इसके जरिए बाइडेन ने मंत्रिमंडल को बंदूक हिंसा से जूझ रहे समुदायों के समर्थन के लिए एक बेहतर सरकारी तंत्र बनाने का निर्देश दिया है। यह छिपा नहीं है कि बिना किसी वजह के की गई गोलीबारी में किसी प्रियजन को गंवाने वालों को किस तरह के मानसिक आघात और अन्य मुश्किलों से जूझना पड़ता है।'मन जो चाहे वही करो' की मानसिकता वहां पनपती है जहां इंसानी रिश्तों के मूल्य समाप्त हो चुके होते हैं, जहां व्यक्तिवादी व्यवस्था में बच्चे बड़े होते-होते स्वछन्द हो जाते हैं। 'मूड ठीक नहीं' की स्थिति में घटना सिर्फघटना होती है, वह न सुख देती है और न दु:ख। ऐसी स्थिति में आदमी अपनी अनंत शक्तियों को बौना बना देता है। यह दकियानूसी ढंग है भीतर की अस्त-व्यस्तता को प्रकट करने का। ऐसे लोगों के पास सही जीने का शिष्ट एवं अहिंसक सलीका नहीं होता। वक्त की पहचान नहीं होती। ऐसे लोगों में मान-मर्यादा, शिष्टाचार, संबंधों की आत्मीयता, शांतिपूर्ण सहजीवन आदि का कोई खास ख्याल नहीं रहता। भौतिक सुख-सुविधाएं ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बन जाता है। अमेरिकी नागरिकों में इस तरह का एकाकीपन उनमें गहरी हताशा, तीव्र आक्रोश और विषैले प्रतिशोध का भाव भर रहा है। वे मानसिक तौर पर बीमार हो जाते हैं और अपने पास उपलब्ध खतरनाक एवं घातक बन्दूकों का इस्तेमाल कर हत्याकांड कर बैठते हैं।दरअसल, मामूली बातों पर आवेश में आकर बंदूक चला देने के पीछे हाथ में हथियार होने से जुड़ा मनोविज्ञान काम करता है। यों भी हिंसा के स्वरूप में ज्यादा विकृति और क्रूरता हथियारों की सुलभता पर निर्भर है। हत्या की ऐसी घटनाएं आमतौर पर इसलिए होती हैं कि गुस्से या अपनी कुंठाओं पर काबू नहीं रख पाने वाले किसी उन्मादी व्यक्ति के पास गुस्से में होने के वक्त बंदूक उपलब्ध थी। ऐसे मामले आम हैं, जिनमें आपसी वाद-विवाद में आक्रोश और उत्तेजना के चरम पर पहुंच जाने के बाद भी दो लोगों या पक्षों में सुलह हो जाती है, क्योंकि उनके पास तकरार के वक्त हथियार नहीं रहा होता है।अमेरिका संस्कृतिविहीन देश बनता जा रहा है- भौतिक विकास एवं शस्त्र संस्कृति पर सवार है यह राष्ट्र। वहां के नागरिक अपने पास जितने चाहें, उतने शस्त्र रख सकते हैं। कुछ जगहों पर शस्त्रों के लाइसेंस की भी जरुरत नहीं होती। अमेरिका में बहुत कम घर ऐसे हैं, जिनमें बंदूक या पिस्तौल न हो। अमेरिका की यह शस्त्र-संस्कृति उसके जन्म के साथ जुड़ी हुई है। इसी शस्त्र संस्कृति पर वह समृद्ध बना है, दुनिया पर उसने हुकूमत की है। आज वही हिंसक शस्त्र संस्कृति उसके स्वयं के लिये भारी पड़ रही है।

योगी के निर्देश पर 19 जिलों में जिला कारागार और एक जिले में केंद्रीय कारागार के निर्माण की कार्रवाई तेज

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की जेलों में क्षमता से अधिक बंदियों की संख्या को देखते हुए योगी सरकार ने प्रदेश के कई जिलों में नई जेलों के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसमें प्रदेश के 11 ऐसे जिले चिह्नित किए गए हैं, जहां पर अभी कोई जेल नहीं है। इसके अलावा एक केंद्रीय कारागार और नौ जिलों में दूसरी जेल के निर्माण की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। वहीं कुछ जेलों में बैरकों की संख्या बढ़ाई जा रही है। इसके लिए योगी सरकार के निर्देश पर शासन ने कारागार विभाग को हरी झंडी देते हुए भारी भरकम बजट जारी कर दिया है। इन जेलों को वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए हाईटेक टेक्नोलॉजी का यूज करते हुए बनाया जाएगा। इसके साथ ही नई जेलों के निर्माण का लक्ष्य 2 से 5 साल का निर्धारित किया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को एक उच्च स्तरीय बैठक में कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग ने अवगत कराया था कि वर्तमान में प्रदेश की केंद्रीय और जिला कारागार समेत कई कारागार में क्षमता से अधिक बंदी हैं। ऐसे में जेल मैनुअल द्वारा प्रदत्त सुविधाएं उपलब्ध कराने और बंदियों के मानवाधिकारों के संरक्षण को देखते हुए नई जेलों की आवश्यकता है। विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने सीएम योगी को बताया कि वर्तमान में 7 केंद्रीय कारागार में 13,669 बंदियों की क्षमता है जबकि यहां पर 15,201 बंदी निरुद्ध हैं, जिसका रेश्यो 111 प्रतिशत है। इसी तरह 62 जिला कारागार में 49,107 बंदियों की क्षमता है, जिसके सापेक्ष 95,597 बंदी निरुद्ध हैं, जिसका रेश्यो 194 प्रतिशत है। वहीं 2 उप कारागार में 306 बंदियों की क्षमता है, जिसके सापेक्ष 664 बंदी निरुद्ध हैं, जिसका रेश्यो 216 प्रतिशत है। महिला केंद्रीय कारागार में 120 बंदियों की क्षमता है, जिसके सापेक्ष 148 बंदी निरुद्ध हैं, जिसका रेश्यो 123 प्रतिशत है। इस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग को जल्द से जल्द नई जेलों के निर्माण के संबंध में प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये थे, जिसके बाद विभाग ने प्रदेश के 11 जिलों में नई जेलों के निर्माण का प्रस्ताव बनाकर शासन को सौंपा था। इस संबंध में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के समक्ष दोबारा बैठक होने पर शासन ने नई जेलों के निर्माण का प्रस्ताव रखा, जिसे सीएम ने हरी झंडी दे दी। सीएम योगी का अप्रूवल मिलते ही शासन ने कारागार विभाग को नई जेलों के निर्माण के लिए भारीभरकम बजट जारी कर दिया। शासन से नई जेलों के निर्माण का बजट जारी होते ही प्रदेश के उन जिलों में इनके निर्माण का रास्ता साफ हो गया, जहां पर अभी तक कोई जेल नहीं है। प्रदेश के 11 जिलों क्रमशरू अमेठी, महोबा में 990-990 बंदी क्षमता और कुशीनगर, चंदौली, औरेया, हापुड़, संभल, अमरोहा, भदोही में एक-एक हजार बंदी क्षमता, हाथरस में 1026 बंदी क्षमता, शामली में 2 हजार बंदी क्षमता की जेलों को निर्माण की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इसी तरह ललितपुर में एक नये केंद्रीय कारागार के निर्माण की कार्रवाई तेज कर दी गई है, जिसकी बंदी क्षमता दो हजार होगी।

वहीं ललिपुर में एक हजार बंदी क्षमता की दूसरी जिला कारागार के निर्माण की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इसी तरह बरेली की पुरानी जेल के मरम्मत एवं नवीनीकरण के लिए धनराशि स्वीकृत कर दी गई है, जिसका बंदी क्षमता 2579 होगी। इसके अलावा मुरादाबाद, मुजफ्फनगर में तीन-तीन हजार, शाहजहांपुर, बदायूं, वाराणसी में दो-दो हजार, जौनपुर, रामपुर में एक-एक हजार और कानपुर नगर में 5 हजार बंदी क्षमता के जिला कारगार के निर्माण की कार्रवाई चल रही है। वहीं मार्च के आखिर में श्रावस्ती में 502 और प्रयागराज में 2688 बंदी क्षमता का जिला कारागार बनकर तैयार हो जाएगा। इसके साथ ही गोरखपुर जिला कारागार में 30 बंदी क्षमता की एक बैरक, केंद्रीय कारागार वाराणसी में 30 क्षमता की सात बैरक और जिला कारागार मथुरा में 30 बंदी क्षमता की चार बैरक का निर्माण कार्य किया जा रहा है। ऐसे में नई जेलों के निर्माण, कुछ जेलों की मरम्मत और जेलों में बैरक की क्षमता बढ़ाने से 35 हजार से अधिक बंदियों को जिन जेलों में क्षमता से अधिक रखा गया है उन्हे यहां शिफ्ट किया जा सकेगा।

पुरानी पेंशन बहाली को लेकर केंद्र व राज्य कर्मचारियों की मांग को कांग्रेस का समर्थन

कांग्रेस पार्टी ने सदैव कर्मचारियों के हितों के लिए संघर्ष किया है और आगे भी करती रहेगी– हम्माम वहीद

स्टार एक्सप्रेस/संवाददाता

लखनऊ। पुरानी पेंशन बहाली को लेकर केंद्र व राज्य कर्मचारियों के आंदोलन का कांग्रेस पार्टी पुरजोर समर्थन करती है। कांग्रेस पार्टी का मानना है की पुरानी पेंशन को तुरंत बहाल किया जाए क्योंकि पुरानी पेंशन कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति के बाद जीवन यापन का सहारा है। कांग्रेस पार्टी इसके पक्ष में है। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता हमाम वहीद ने मंगलवार को जारी बयान में कहा कि पार्टी इसे लेकर लगातार सड़क से सदन तक संघर्षरत रही है। कांग्रेस पार्टी की सरकार में राजस्थान, छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश के चुनाव जीतने के 15 दिन के भीतर पुरानी पेंशन को बहाल कर सेवानिवृत्त कर्मचारियों को राहत देने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि अगर कांग्रेस शासित राज्यों राजस्थान और छत्तीसगढ़ में ओ पी एस की बहाली हो सकती है तो उत्तर प्रदेश में क्यों नहीं? उन्होंने कहा कि आज जनपद मुख्यालयों पर केंद्र व राज्य कर्मचारियों के द्वारा देशव्यापी प्रदर्शन किया जा रहा है। राज्य कर्मचारियों व शिक्षकों ने एक साथ मिलकर अब केंद्रीय कर्मचारी संगठनों को भी अपने साथ लिया है। इस आंदोलन में रेलवे, डाक, आयकर, पासपोर्ट, आकाशवाणी, दूरदर्शन के कर्मचारी संगठनों में राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद, कलेक्ट्रेट, मिनिस्टीरियल, एसोसिएशन, डिप्लोमा इंजीनियर महासंघ, उद्यान, सिंचाई, परिवहन लोक निर्माण विभाग, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चिटफंड, शिक्षा, समेत सैकड़ों विभाग के संगठनों के कर्मचारियों ने मिलकर 23 जनवरी को नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय सम्मेलन में पुरानी पेंशन बहाली के लिए आंदोलन की रूपरेखा बनाई थी जिसके अंतर्गत आज 21 मार्च को नई पेंशन योजना वापस लेने एवं पुरानी पेंशन व्यवस्था की बहाली के लिए हर जनपद मुख्यालय पर प्रदर्शन किया जा रहा है। जिसे कांग्रेस पार्टी अपना पूर्ण समर्थन देती है। उन्होंने बताया कि भाजपा सरकार कर्मचारियों के हितों की अनदेखी कर रही है। वह उन्हें राहत देने के पक्ष में नहीं है जबकि कर्मचारियों की मांग है कि पुरानी पेंशन बहाल की जाए जिस प्रकार से कांग्रेस शासित राज्य राजस्थान, छत्तीसगढ़, एवं हिमाचल प्रदेश में पुरानी पेंशन बहाल की गई है।

संक्षिप्त समाचार

लखनऊ विश्वविद्यालय में मानवाधिकार समकालीन मे संवाद का हुआ आयोजन

संवाददाता, लखनऊ । लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय द्वारा लेक्चर सीरीज के अंतर्गत मानवाधिकार समकालीन संवाद विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस लेक्चर सीरीज के मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अनुपम झा थे। प्रोफेसर अनुपम झा ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार की आवश्यकता एवं उसके विभिन्न बिंदुओं को बताया गया। उन्होंने अपने संभाषण में मानवाधिकार क्या है, उसकी आवश्यकता क्या है एवं वर्तमान समय में किस तरीके से काम कर रहा है इत्यादि पर विस्तार से चर्चा किया। इस लेक्चर सीरीज की शुरुआत इसकी संयोजक प्रोफेसर विनीता काचर उपस्थित रही। विधि संकाय के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर बीडी सिंह ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये जाने चाहिए। इस कार्यक्रम में डॉ.आलोक कुमार यादव, डॉ अभिषेक तिवारी, डॉ अर्चना सिंह, डॉ किरन शर्मा छात्र-छात्राएं उपस्थित रही।

जरूरतमंदों को गायत्री श्याम सेवा समिति ने वितरित किये कपड़े

संवाददाता, लखनऊ । स्वयं सेवी संस्था गायत्री श्याम सेवा समिति के तत्वाधान में जानकीपुरम विस्तार में जरूरतमंदों को नये एवं पुराने वस्त्रों का वितरण किया। इसके साथ ही संस्था के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सभी लोगों ने सभी लोगों के खाद्य वस्तुओं की भी व्यवस्था करवायी। संस्था की सचिव विनीता अवस्थी ने बताया संस्था द्वारा ऐसी कई जनउपयोगी कार्यक्रमों को मूर्त रूप व कार्यान्वित करने की योजना है इसके अंतर्गत विगत दो वर्षों में हजारों लोगों को वस्त्र वितरण का लाभ प्रदान किया जा चुका है। इस पुनीत व लोककल्याण के कार्यक्रम में नगर के कई गणमान्य विभूतियों व स्वयं सेवी संस्थाओं ने के बढ़ चढ़ कर सहयोग दिया, जिसमें जनविकास महासभा का सहयोग उल्लेखनीय रहा। इस आयोजन के मौके पर संस्था के अध्यक्ष डॉ. शिवजी शुक्ल, उपाध्यक्ष, इन्द्रेश रस्तोगी, कोषाध्यक्ष राजेश्वर नाथ त्रिपाठी 'मधुकर' और सदस्य प्रमोद मिश्र आदि मौजूद रहे।

लखनऊ बाथम वैश्य समाज का भव्य रूप से होली मिलन समारोह सम्पन्न हुआ

संवाददाता, लखनऊ । बाथम वैश्य समाज लखनऊ के अध्यक्ष अतुल गुप्ता ने बताया निराला नगर स्थित माधव सभागार मे बाथम समाज के अनूप गुप्ता (सदस्य विधान परिषद) के द्वारा दीप प्रज्वलित कर आयोजन आरम्भ हुआ कमेटी की महिलाओं द्वारा गणेश वंदना कर शुभारंभ हुआ । संरक्षक हरशरण लाल गुप्ता ने समाज के उत्थान हेतु कार्य करते रहने की बात कही बाथम समाज की महिला कार्यकर्ताओं द्वारा अनेक प्रस्तुतियां की गयीं। महामंत्री मनीष गुप्ता ने बताया की मुख्य रूप से फूलों की होली,राधा कृष्ण की रासलीला, प्रतिभाशाली बच्चों का सम्मान, सवाल जवाब प्रतियोगिता, महिलाओं का सम्मान, गीत एवं नृत्य प्रतियोगिता, लकी ड्रा के उपरांत भोजन की व्यवस्था की गयी। आरती, गुप्ता नैना, पूजा गुप्ता,नीलम गुप्ता सहित सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

यूपी के 14 शहरों में बारिश

लखनऊ, नोएडा में तेज बरसात, वाराणसी में ओले गिरे

संवाददाता

लखनऊ। यूपी में बेमौसम बारिश का दौर पांचवें दिन भी लगातार जारी है। तड़के 4 बजे से लखनऊ में तेज बारिश शुरू हो गई। कानपुर में भी हल्की बरसात हुई। मुरादाबाद में सुबह बादल छाए थे, 9 बजे से यहां भी बारिश शुरू हो गई। इससे पहले वाराणसी में देर रात गरज-चमक के साथ तेज बारिश हुई। यहां अस्सी घाट- भदैनी में कुछ स्थानों पर ओले भी गिरे। प्रयागराज में भी शाम बारिश हुई। प्रदेश के अलग-अलग शहरों में हुई इस बारिश से भले ही लोगों को गर्मी से राहत मिली हो, लेकिन ये किसानों के लिए नुकसान लेकर आई है। आलू और गेहूं समेत कई फसल इस बारिश में बर्बाद हो रही हैं। मौसम वैज्ञानिकों का दावा है कि 22 मार्च तक कि ऐसा ही मौसम यूपी में बना रहेगा। इधर, 24 घंटे में 1.9 मिलीमीटर बारिश पूरे प्रदेश भर में रिकॉर्ड की गई। 13.6 डिग्री सेल्सियस के साथ शाहजहांपुर सबसे ठंडा, तो 34.2 डिग्री सेल्सियस के साथ बांदा सबसे गर्म रिकॉर्ड किया गया। मौसम विभाग का अनुमान है कि प्रदेश के 36 जिलों में बिजली की गरज चमक के बीच बारिश होगी। 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं भी चलेंगी। यूपी में रविवार देर शाम से ही बारिश हो रही है। सोमवार सुबह से कानपुर, नोएडा, मुरादाबाद, सहारनपुर, लखनऊ, बदायूं, औरैया, भदोही, गाजीपुर, सीतापुर, फिरोजाबाद, बलिया, पीलीभीत, मऊ में गरज-चमक के साथ बरसात हो रही है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, सोमवार को आगरा, अंबेडकर नगर, अमेठी, औरैया, अयोध्या, बांदा, बाराबंकी, बरेली, चित्रकूट, एटा, इटावा, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, फिरोजाबाद, गोंडा, हरदोई, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, कासगंज, कौशांबी, लखनऊ, मैनपुरी, मिर्जापुर, पीलीभीत, प्रतापगढ़ में प्रयागराज, रायबरेली, संभल, शाहजहांपुर, सीतापुर, सोनभद्र, सुल्तानपुर और उन्नाव में बिजली की चमक के बीच बारिश होने की संभावना है। इसके अलावा कुछ जगहों पर ओले गिर सकते हैं।

ईरान और सऊदी अरब के बीच राजनयिक और आर्थिक संबंधों की बहाली का स्वागत: कल्बे जवाद नकवी

संवाददाता, लखनऊ। ईरान और सऊदी अरब के बीच राजनयिक और आर्थिक संबंधों की बहाली पर खुशी का इजहार करते हुए मजलिसे उलेमा-ए-हिन्द के महासचिव मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नकवी ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक कदम है, जिससे मध्य पूर्व में स्थिरता आएगी और मुस्लिम दुनिया को लाभ होगा। दोनों देशों को अपने संबंधों को सुधारने और मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि मुस्लिम दुनिया को और मजबूत किया जा सके। मौलाना ने ईरान और सऊदी अरब के बीच संबंधों की बहाली की सराहना की और कहा कि ईरान और सऊदी अरब दो बड़ी ताकतें हैं। उनके दोस्ताना संबंध मध्य पूर्व की राजनीति में बदलाव का एक स्वागत योग्य संकेत हैं। मौलाना ने कहा कि हमें उम्मीद है कि सीरिया, यमन और इराक में राजनीतिक स्थिरता वजूद में आएगी, विशेष रूप से यमन की राजनीतिक समस्याओं का समाधान आवश्यक है ताकि यमन में राजनीतिक संकट समाप्त हो सके और यमनी लोग जो गरीबी में जीने को मजबूर हैं, उनके जीवन में खुशहाली आ सके। मौलाना ने कहा कि इन संबंधों के सुधरने से जन्नत-उल-बकी के पुन: निर्माण की संभावनाएं पैदा हुई हैं। हम लगातार सऊदी सरकार से जन्नत-उल-बकी के पुन: निर्माण की मांग करते रहे हैं। मौलाना ने आगे कहा कि ईरान और सऊदी अरब के बीच संबंध औपनिवेशिक शक्तियों के पतन का इशारा है। लंबे समय से इस्लाम विरोधी ताकतें दोनों देशों के बीच दुश्मनी का बीज बोती रही हैं, यही वजह है कि इन संबंधों से इजराइल सबसे ज्यादा चिंतित है। मौलाना ने आगे कहा कि ईरान और सऊदी अरब को मुस्लिम दुनिया का संयुक्त मोर्चा बनाने की कोशिश करनी चाहिए, इस तरह मुसलमानों की वैश्विक एकता सामने आएगी।

भाजपा नेताओं के विरुद्ध दर्ज मुकदमे वापसी के विरोध में अधिकार सेना का धरना

संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश सरकार द्वारा भाजपा के तमाम नेताओं के गंभीर आपराधिक मुकदमों को राजनीतिक मुकदमा बताते हुए वापस लेने की कार्यवाही के खिलाफअधिकार सेना के कार्यकर्ताओं ने प्रदेश के जनपदों में धरना देने के उपरान्त जिला प्रशासन के माध्यम से राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में राज्यपाल को अविलंब हस्तक्षेप कर इसको रोके जाने की मांग करते हुए गया है कि प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार भाजपा के तमाम नेताओं के आपराधिक मुकदमों को राजनैतिक बता कर वापस लेने का कार्य कर रही है। इस संबंध में आर के पटेल, सांसद तथा रीता बहुगुणा जोशी, सांसद के विरुद्ध दर्ज गंभीर आपराधिक मुकदमे विशेष महत्त्व के हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार आर के पटेल के विरुद्ध डकैतों को संरक्षण देने विषयक कई मुकदमे हैं जबकि रीता बहुगुणा जोशी के खिलाफ तत्कालीन तहसीलदार, प्रयागराज द्वारा श्रीमती बहुगुणा जोशी के नगर निगम की मेयर रहते हुए सरकारी जमीन में हेराफेरी के मामले में एफ्आईआर दर्ज कराया गया था। यह दोनों मामले अत्यंत ही गंभीर प्रकृति के थे और किसी प्रकार से राजनीतिक मुकदमे नहीं कहे जा सकते हैं। इसके बाद भी इन मुकदमों को वापस लिए जाने की कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है। तमाम अन्य नेताओं के विरुद्ध मुकदमे भी वापस लिए जाने की चर्चा है।अधिकार सेना इसका विरोध करती है। इस प्रकार से अपने राजनीतिक पार्टी के लोगों के मुकदमे वापस किया जाना उन्हें अनुचित लाभ दिया जाना है, जिसका अधिकार सेना स्पष्ट विरोध कर रही है।

किसानों की फसल बर्बाद

किसानों को दिया जाए मुआवजा : रालोद

संवाददाता, लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मनजीत सिंह ने भारी बारिश और ओलावृष्टि से हुई जनहानि और किसानों की हजारों एकड़ बर्बाद हो गयी फसलो के प्रति गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश के इलाकों में भारी बारिश और आंधी से लोग असमय ही काल के गाल में समा गये और किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है।श्री सिंह ने प्रदेश सरकार से मांग करते हुए कहा कि आकाशीय बिजली गिरने से जिन 6 लोगों की जान चली गई है उनके परिजनों को 50-50 लाख की आर्थिक सहायता तथा परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए। उन्होंने कहा कि असामयिक ओलावृष्टि से गेहूं, सरसों, मसूर व मटर की फसल के किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा क्योंकि कुदरत के कहर ने किसानों की खून पसीने से सींची हुई फसल को बर्बाद और तहस नहस कर दिया है जिससे किसानों को भारी आर्थिक बोझ तले दबने को मजबूर होना पडेगा।उन्होंने सरकार से यह भी मांग कि किसानों की बर्बाद हुई फसलों का आकलन कराकर मुआवजा दिया जाए जिससे किसान वर्ग को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं भयानक ओलावृष्टि से आम की फसल पर बुरा असर पड़ा है। बागों में आम का बौर बिखर गया जिससे आम की खेती करने वालों किसानों को भी भारी क्षति होने की सम्भावना है। उन्होंने किसानों का दर्द बयां करते हुए कहा कि किसान पहले से ही सरकार की किसान विरोधी नीतियों से परेशान हाल था और अब कुदरत के कहर ने उनकी कमर तोडने का काम किया है। सरकार को किसानों को राहत पहुंचाने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए।

सर्वहित व्यापार मंडल की लखनऊ इकाई गठित

संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ सर्वहित व्यापार मंडल के गठन के लिए व्यापारियों की एक बैठक शेरोज हैंगआउट, गोमती नगर में आयोजित की गयी, बैठक में लखनऊ की विभिन्न बाजारों के व्यापारी सम्मिलित हुए द्य बैठक की अध्यक्षता सर्वहित व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार यादव ने की द्य जिसमें पत्रकारपुरम , गोमती नगर के प्रतिष्ठित व्यापारी अजय सोनी को सर्वसम्मति से लखनऊ नगर का अध्यक्ष चुना गया द्य बैठक में दीपक शुक्ला व दीपक श्रीवास्तव को वरिष्ठ महामंत्री चुना गया द्य

कोषाध्यक्ष पद पर संदीप ओझा जी का चयन हुआ 5 महामंत्री , 20 वरिष्ठ उपाध्यक्ष, 30 उपाध्यक्ष, 10 संगठन मंत्री, 5 प्रचार मंत्री मनोनीत किए गए। महामंत्री पद पर मोहम्मद अलीम, सौरव यादव, विक्की , ललित पाल और शुभम अग्रवाल का चयन हुआ द्य वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर विश्वजीत चटर्जी , नवीन यादव , प्रभात सिंह , अमित अग्निहोत्री , वेद प्रकाश यादव , राजेश कुमार , राहुल आनंद , मनोज यादव , अमर साहू , ओमकार चौरसिया , अमर सिंह , उस्मान , वीर सिंह यादव , एहतिशाम अली , हिमांशु पाण्डेय , रवि राय , अलोक वर्मा , जहीन आलम का चयन हुआ । उपाध्यक्ष पद पर अश्वनी श्रीवास्तव , विनोद यादव , रज्जू , अलोक यादव , विपिन यादव , अश्वनी मिश्रा , मोहम्मद जावेद , इमरान , इजाज अहमद , अब्दुल्लाह , ओम प्रकाश यादव , आदित्य यादव , दिवाकर , शिवम वैश्य , अनिल यादव , मोहमद अख्तर , अनिल अग्रहरी , नीरज शुक्ला , प्रमोद , धीरेन्द्र सिंह, धनञ्जय सिंह , ध्यानेन्द्र तिवारी , मोहम्मद आरिफ , समी अख्तर , रवि रोहेला, अमीन खान, मोहम्मद जकी , धीरेन्द्र तिवारी , नजीर , का चयन हुआ द्य संगठन मंत्री के पद पर मजहर वारसी , दिवाकर वर्मा , दअखिलेश यादव को मनोनीत किया गया द्य दीपक शर्मा , राहुल यादव ,संदीप गौड़ , मधुराम यादव , प्रकाश चंद को प्रचार मंत्री बनाया गया द्य नव नियुक्त पदाधिकारियों को फूल माला पहनाकर उनका स्वागत किया गया ।

मत्स्य मंत्री और पर्यटन मंत्री ने की मुख्यमंत्री से मुलाकात

प्रदेश सरकार मछुआ समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध: निषाद

संवाददाता

लखनऊ। राष्ट्रीय अध्यक्ष, निषाद पार्टी एवं कैबिनेट मंत्री मत्स्य विभाग डॉ0 संजय कुमार निषाद की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लोकभवन में मुलाकात हुई। मंत्री ने चौत्र शुक्ल पंचमी 26 मार्च को महाराजा गुह्यराज निषाद जयंती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करने पर मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। श्री निषाद ने महाराजा गुह्यराज निषाद जयंती पर आयोजित श्रृंगवेरपुर धाम पर मुख्यमंत्री को बतौर मुख्यातिथि शिकरत करने का निमंत्रण भी दिया। इस दौरान प्रदेश सरकार में वरिष्ठ सहयोगी एवं कैबिनेट मंत्री पर्यटन विभाग जयवीर सिंह और सांसद संतकबीरनगर प्रवीण निषाद जी भी मौजूद रहे। श्री निषाद ने बताया कि प्रदेश सरकार मछुआ समाज केसर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध है। बैठक में मुख्यमंत्री द्वारा जयंती को भव्य बनाने का निर्देश दिया गया है। पर्यटन विभाग और निषाद पार्टी एवं बीजेपी सफल बनाने में सहयोग करेगी।उन्होंने कहा कि प्रदेश की सरकार मछुआ समुदाय के हित में जो भी बड़े कदम उठाने होंगे ,उसको जरूर उठाये जायेगे, चाहे फिर वो प्रयास निषाद संस्कृति को बचाने के लिए हो या आर्थिक,सामाजिक, राजनीतिक हित के लिए हो।

पुरानी पेंशन के मुद्दे पर केन्द्रीय व राज्य कर्मचारी एकजुट

संवाददाता

लखनऊ। पुरानी पेंशन बहाली के मुद्दे को लेकर व्यापक रणनीति बनाई है। आन्दोलन को धार देने के लिए रेलवे, डाक, आयकर, पासपोर्ट, आकाशवाणी, दूरदर्शन, के साथ लेकर राज्य कर्मचारी संगठनों में राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद, कलेक्ट्रेट मिनिस्टीरियल एसोसिएशन, डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ, उद्यान, सिंचाई, परिवहन, कोषागार, निबंधन, लोकनिर्माण विभाग, कृषि, मण्डी, प्रदूषण नियंत्रण, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अल्प बचत, रजिष्ट्रार चिटफण्ड, श्रम, शिक्षा, राजस्व, ग्राम विकास, ग्राम पंचायत, सफाई कर्मचारी, आईटीआई, बाल विकास पुष्टाहार, खाद्य रसद, सहित सैकड़ों विभाग के सेवा संगठनों ने मिलकर 21 जनवरी को नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय सम्मेलन में पुरानरी पेंशन बहाली के लिए आन्दोलन की रूपरेखा बनाई थी। नई पेंशन योजना वापस लेने एवं पुरानी पेंशन व्यवस्था की बहाली के लिए पुरानी पेंशन योजना बहाली संयुक्त मंच के बैनर तले राष्ट्र व्यापी आन्दोलन का निर्णय लिया जा चुका है। इसी क्रम में जनपद मुख्यालयों पर प्रदर्शन किया जा रहा है। लखनऊ में यह प्रदर्शन कर्मचारी प्रेरणा स्थल डीएम आवास के सामने किया जाएगा। राज्य कर्मचारियों, शिक्षको नरे एक साथ मिलकर अब केन्द्रीय कर्मचारी संगठनों को भी अपने साथ प्रेस वार्ता में केन्द्रीय कर्मचारी संगठन रेलवे के आर.के. पाण्डेय, परिषद से हरिकिशोर तिवारी, शिवबरन सिंह यादव, ने बताया कि 2004 से नव परिभाषित अंशदान पेंशन योजना से पूरे कर्मचारी, शिक्षक समाज का भविष्य अंधकार मय हो गया है। कई बार उच्च स्तरीय बैठक पर नई पेंशन योजना का हर स्थिति में विरोध दर्ज कराया गया लेकिन सरकार ने अब तक ध्यान नही दिया। परिणाम स्वरूप एक राष्टव्यापी मंच का गठन कर पुरानी पेंशन बहाली के लिए एक निर्णायक आन्दोलन की शुरूआत की जा रही है। पोस्टल आर्डर के शत्रुहन यादव ने पुरानी पेंशन के मामले में सरकार का ध्यान आकृषित कराते हुए कहा कि कर्मचारी शिक्षक समाज को हर हाल में पुरानी पेंशन बहाली चाहिए। परिषद के अध्यक्ष हरिकिशोर तिवारी ने कर्मचारियों और शिक्षक के फण्ड का पैसा शेयर बाजार में लगाए जाने का पुरजोर विरोध करते हुए इससे होने वाले नुकसान की जानकारी दी।

उन्होंने तर्क से साथ कहा कि पुरानी पेंशन बहाली से सरकार के ऊपर कोई फर्क नही पड़ने वाला। जनवरी 2044 से केन्द्रीय कर्मचारियो तथा अप्रैल 2005 से उ0प्र0 ने नई पेंाश्न योजना को यह कहकर लागू कर दिया था कि प्रस्तावित नई व्यवस्था भी पुरानी पेंशन जैसी होगी। कर्मचारियों को कोई नुकसान नही होगा। किन्तु इतने दिनों में यह बॉत सिद्ध नही हो पाई। उल्टे सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों को 2000 से 5000 हजार तक ही पेंशन राशि मिल पा रही है। उदाहरण देते हुए बताया गया कि सिंचाई विभाग उ.प्र. बाबू लाल, अरूण त्रिपाठी, प्रेमबाबू, शीतलाबक्स सिंह और गजानन्द पाण्डेय को नई पेंशन के तहत शुन्य है। जबकि रेलव से सेवानिवृत्त आर. रामचन्द्रन और के. भास्कर राव को क्रमशः 2417 रूपये और 2506 रूपये मात्र पेंशन मिल रही है। जबकि पुरानी पेंशन व्यवस्था में यह राशि न्यूनतम 15000 रूपये होती थी। ऐसे में इस महंगाई में यह राशि कर्मचारी के बुढ़पें का क्या सहारा बन पाएगी। ऐसी स्थिति में पुरानी पेंशन व्यवस्था ही एक सामाजिक सुरक्षा है इसे हर हाल में लागू किया जाए। पुरानी पेंशन योजना बहाली संयुक्त मंच द्वारा पूरे देश से महामहिम राष्ट्रपति को आनलाईन पिटीशन भेजी गई, 21 फरवरी पुरानी पेंशन के लिए रेलवे कार्यालयों के समक्ष जोरदार प्रदर्शन किया जा चुका है। 21 मार्च में देश भर के सभी जनपद मुख्यालयों में प्रदर्शन के साथ मंच द्वारा सितम्बर तक क्रमवार आन्दोलन जारी रखा जाएगा।

CMYK

जीवन बचाने के लिए रक्तदान एक बेहतरीन समाजसेवा है : डॉ.गोयल

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुलतानपुरै। शियाने हैदर-ए-करार वेलफेयर एसोशिएशन ने मंगलवार को रक्तदान शिविर के माध्यम से जिला अस्पताल के ब्लडबैंक में एसोशिएशन के सदस्यों रक्तदान किया,रक्तदान शिविर का संयुक्त रूप से उद्घाटन करते हुए मुख्य चिकित्साधिक्षक डॉ.एसके गोयल ने युवाओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहाकि जीवन बचाने के लिए रक्तदान एक बेहतरीन समाजसेवा है,उन्होंने कहाकि युवाओं को ऐसी परोपकारी सेवा के लिए हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए,डॉ.गोयल ने कहाकि जनपद का ब्लडबैंक कोरोनाकाल में आस-पास के जनपदों में रक्त और प्लेटलेट्स की कमी नही होने दी,सीएमएस ने बताया की हमारा ब्लडबैंक प्रदेश के बेहतरीन ब्लडबैंकों में चयनित हो चुका है,प्रभारी ब्लडबैंक डॉ.आरके मिश्रा ने रक्तदानियों को उत्साहित करते हुए कहाकि आपके रक्त से एक अंजान व्यक्ति को जीवन मिलता है,इससे बडी और कोई समाजसेवा नही हो सकती,उक्त अवसर पर एलटी विजय चौधरी,धर्मेंद्र यादव,विंदूमती,अनुराग पांडेय,रंजना कुमारी,अनुराग गुप्ता, प्रधुम्न सिंह,संदीप मिश्रा,कुलदीप आदि कर्मी मौजूद रहें,शियाने हैदर-ए-करार वेलफेयर एसोशिएशन के इमरान हुसैन,शजर अब्बास,अनिल सिंह,सैफ खान, आमिर अहमद मो.कैश,शदाब अहमद ,मोहतशम,सैफ अब्बास, निलेश सिंह, डॉ.मोतशम, हैदर अब्बास, मो.अनस ,मो.अहमद,आमिर हसन,हेलाल जैदी,शाह हुसैन,मोहम्मद मेंहदी व इमरान हैदर ने खबर लिखे जाने तक रक्तदान कर चुके थे,इस अवसर पर संगठन के हैदर नकवी,अफजल हुसैन,फजल रिजवी,सफदर अब्बास, शमीर हाशमी,अलमदार हुसैन,नुरूल हसन,अली जाफरी आदि मौजूद रहे।

परिषदीय विद्यालयों में करायी जा रही परीक्षाएं महज खानापूर्ति

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा परिषदीय विद्यालयों में करायी जा रही परीक्षाएं मात्र खानापूर्ति ही साबित हो रही हैं। क्षेत्र के दर्जनों विद्यालयों में पहली पाली में कक्षा 7 व 8 में विज्ञान का प्रश्नपत्र अंग्रेजी माध्यम से भेजने के कारण छात्र से लेकर शिक्षक तक परेशान दिखें। विभाग द्वारा भेजे गये कक्षा 4 के प्रश्नपत्र में प्रश्न संख्या 5 विलोम शब्द लिखने के लिए कहा गया लेकिन शब्द ही नही दिये गये। ऐसे में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा कराई जा रही परीक्षाओं की गम्भीरता साफसमझी जा सकती है। विकास खण्ड क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों में कुल 16367 छात्र व ऐडेड विद्यालयों में 2294 छात्र पंजीकृत हैं । परिषदीय विद्यालयों में परीक्षाएं सोमवार से आरम्भ हो गयी हैं। परीक्षाएं दो पालियों में सम्पन्न करायी

○ कक्षा 7 व 8 में विज्ञान का प्रश्नपत्र अंग्रेजी माध्यम से भेजने के कारण छात्र व शिक्षक परेशान

जा रही हैं। बेसिक शिक्षा विभाग परीक्षा को गम्भीरता से न लेते हुए जैसे-तैसे विद्यालयों को प्रश्नपत्र उपलब्ध करा परीक्षाएं संपन्न करा रहा है। विभाग की चूक कहें या लापरवाही पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 7 व 8 में प्रथम पाली की परीक्षा में विज्ञान के प्रश्नपत्र हिन्दी माध्यम की बजाय अंग्रेजी माध्यम के प्रश्नपत्र भेज दिये। यही नहीं प्रश्नपत्रों में त्रुटियों का आकलन भी नही किया। नाम न छापने की शर्त पर कुछ शिक्षकों ने बताया कि संख्या के सापेक्ष प्रश्नपत्र न पहुंचने या फिर अंग्रेजी माध्यम के प्रश्नपत्र पहुंचने पर हिन्दी माध्यम के प्रश्नपत्रों की फेटो कापी करा परीक्षाएं जैसे तैसे सम्पन्न करायी गयी।

विधायक का भतीजा हूं, खनन करने से कौन रोकेगा

नदी की जलधारा के बीच से होता खनन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

राठ,हमीरपुर। राठ तहसील क्षेत्र के ग्राम जिगनी से निकली धसान नदी में झांसी जिले से मौरम पट्टा धारक ने एक दबंग अपने आप को गरौठा विधायक का तथाकथित भतीजा बता नदी की जलधारा रोककर अवैध खनन करा रहा है। प्रशासनिक अधिकारी भी इस तथाकथित भतीजे की दबंगई का खौफ खाकर उसके ऊपर कार्रवाई करने से कतरा रहे हैं। बताते चलें कि राठ तहसील क्षेत्र के ग्राम जिगनी से निकली धसान नदी में खंड संख्या एक का पट्टा झांसी जनपद से किया गया है। जिसमें खनन कार्य के लिए झांसी की ओर से सही रास्ता न होने के कारण खदान पट्टा धारक ने मोरम भरे ट्रकों की आवाजाही के लिए राठ तहसील क्षेत्र की सीमा से नदी की जलधारा को रोककर एनजीटी के नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए रास्ता बना खनन कार्य प्रारंभ करा दिया। इस खनन कार्य गरौठा के भाजपा विधायक जवाहर लोधी के तथाकथित भतीजे महेंद्र सिंह की भूमिका संदेह जनक है। यह तथाकथित विधायक भतीजा अपने चाचा की विधायकी का रौब जमा स्थानीय अधिकारियों को अपने खौफ में रख अवैध खनन कार्य करा रहा है। उसका खौफ अधिकारियों में इस कदर छाया है कि स्थानीय अधिकारी उसके ऊपर कार्यवाही करने से कतराते हैं। जबकि वर्ष 2013 में सपा सरकार में तत्कालीन ज्वाइंट मजिस्ट्रेट राठ आशुतोष निरंजन में इसी तरह के उक्त अवैध खनन कार्य को बंद कराते हुए खदान

संचालक के खिलाफसख्त कार्रवाई की थी। लेकिन अब भाजपा सरकार में अधिकारी ऐसे अवैध कार्यों में कितनी शक्ति दिखाती है यह अभी भविष्य के गर्भ में है। इस संबंध में जब राठ एसडीएम पवन प्रकाश पाठक से बात की गई तो उन्होंने बताया कि अवैध खनन कार्य की उन्हें जानकारी नहीं है। वह जल्द ही नायब तहसीलदार को वहां भेज कर अवैध खनन कार्य बंद कराएंगे।

पोती के प्रेमी ने गोली मारकर की थी बाबा की हत्या

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। 65 वर्षीय बुजुर्ग के मर्डर का पुलिस ने खुलासा किया है। जिसमें पोती के प्रेमी ने हत्या की वारदात को अंजाम दिया था। प्रेमिका का बाबा इन दोनों के प्यार में बाधा बन रहा था। इसी बात से खुन्नस खाकर प्रेमी लगन से एक दिन पहले उसके घर पहुंचा और बाबा को गोली मारकर फरार हो गया। एसपी के निर्देश पर पुलिस खुलासे के लिए जांच में जुटी थी। जिसके बाद पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपी को लोनार के ऐजा तिराहा से गिरफ्तार किया है। बताते चले कि लोनार थाना क्षेत्र के सकरौली गांव में 24 फरवरी को 65वर्षीय मोतीलाल मिश्रा का शव मिला था। जिनके सर पर चोट के निशान थे पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गोली मारकर हत्या की पुष्टि हुई थी। जिसमें मृतक के पुत्र ऋषिकांत ने प्रधानपति विश्वनाथ पाठक, अनुपम, अभिषेक, अनुराग पर रंजिशन हत्या करने का आरोप लगाया था। तहरीर मिलने के बाद पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो मामला संदिग्ध लगा। पुलिस को पूछताक्ष और सर्विलांस के माध्यम से विश्वास हुआ कि यह घटना नामजद आरोपियों द्वारा नहीं की गई है। जिसके बाद पुलिस ने अन्य तथ्यों पर कार्य करना शुरू किया तो पता चला कि पोती के प्रेमी अतुल सिंह चौहान ने इस घटना को अंजाम दिया है। पूछताक्ष में अतुल ने बताया कि मोतीलाल के छोटे पुत्र ऋषिकांत से उसका कई वर्षों से दोस्ताना था। वह मृतक मोतीलाल के घर आता-जाता रहता था। इसी बीच करीब ढाई वर्ष पूर्व उसका ऋषिकांत की भतीजी से प्रेम प्रसंग हो गया। जिसका मोतीलाल और उसके परिजनों को पता चल गया। इस पर मोतीलाल ने आनन-फानन में अपनी पोती की शादी तय कर दी। 24 फरवरी को पोती की लगन होना था और 23 फरवरी की रात मोतीलाल के घर पर भागवत कथा को कराया जा रहा था। बताया गया कि मोतीलाल अपनी पोती और अतुल के प्रेम प्रसंग का सबसे ज्यादा विरोध करता था। इसी कारण अतुल ने भागवत कथा खत्म होने के बाद मोतीलाल को निशाना बनाया और घर पहुंचकर उसके सर पर सटाकर तमंचे से फायर कर दिया। जिसके

बाद वह मौके से फरार हो गया। घरवालों ने जब यह सब देखा तो वह दंग रह गए और उन्होंने रंजिशन प्रधानपति व अन्य पर हत्या का आरोप लगाया। जिसके बाद पुलिस ने पड़ताल शुरू की तो मोतीलाल का कातिल उसकी पोती का प्रेमी निकला। जिसने शादी रूकवाने के लिए मोतीलाल की हत्या को अंजाम दिया था। जिसे पुलिस ने घेराबंदी कर ऐजा तिराहा से गिरफ्तार कर लिया। जिसकी निशानदेही पर पुलिस ने एक तमंचा 315 बोर मय एक जिंदा व खोखा कारतूस और मोबाइल बरामद किया है। एसपी राजेश द्विवेदी ने बताया कि विगत 23 फरवरी को 65 वर्षीय बुजुर्ग की हत्या की वारदात को अंजाम दिया गया था। जिसमें मोतीलाल की पोती के प्रेमी ने शादी रूकवाने के लिए गोली मारकर हत्या की थी। घरवालों ने प्रधानपति समेत चार लोगों पर रंजिशन हत्या का आरोप लगाया था। पुलिस ने सभी बिंदुओं पर गहनता से जांच करने के बाद पोती के प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी निशानदेही पर पुलिस ने एक तमंचा 315 बोर मय जिंदा व खोखा कारतूस और मोबाइल बरामद किया है। आरोपी अतुल सिंह को पुलिस गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। खुलासा करने वाली टीम को एसपी राजेश द्विवेदी ने 10 हजार का इनाम देकर पुरस्कृत किया है।

राष्ट्र सेवा हेतु नागरिकों का निमार्ण हुआय प्रोफेसर डॉ डीके त्रिपाठी

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। राणा प्रताप पी जी कॉलेज,सुलतानलपुर के राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन समारोह चयनित ग्राम वल्लीपुर में हुआ। अतिथियों ने माँ सरस्वती एवं राणा प्रताप के चित्रों पर दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में महाविद्यालय के अध्यक्ष संजय सिंह, मुख्य अतिथि प्रबन्धक सुरेन्द्र नाम सिंह, प्राचार्य प्रो.(डॉ) डी.के.त्रिपाठी, प्रबन्ध समिति के सम्मानित सदस्य - रणजीत सिंह,डॉ अमित सिंह, डॉ यशवंत सिंह उपस्थित रहे। दीपक, सोनू, सोमल, कोमल, रुपाली ने अपना गीत प्रस्तुत किया। वैभव, विश्वास ने गीत प्रस्तुत किया । अभिषेक पाण्डेय ने राष्ट्रीय सेवा योजना पर भाषण प्रस्तुत किया।

शालिनी तिवारी एवं पूजा मौर्या ने राधा कृष्णा की झाकी पर नृत्य प्रस्तुत किया। सुहानी शुक्ला ने अपना गीत प्रस्तुत किया। कुसुम यादव ने नृत्य प्रस्तुत किया। रणजीत सिंह ने राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य एवं

महत्व पर प्रकाश डाला । प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य सफल हुआ है। इससे राष्ट्र सेवा हेतु नागरिकों का निमार्ण हुआ है। सेवा ही धर्म है। प्रबंधक सुरेंद्र नाथ सिंह ने कहा कि स्वयंसेवको से समाज सुधार आता है। अध्यक्ष संजय सिंह ने कहा कि शिक्षा का अर्थ व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता हैं। एनएसएस समाज सेवा का प्रशिक्षण देता है । कार्यक्रम का संचालक डॉ प्रभात श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम अधिकारी डॉ हीरालाल यादव ,ग्राम प्रधान राजेश कुमार निषाद यहाँ उपस्थित रहे। अतिथियों के प्रति आभार कार्यक्रमाधिकारी डॉ नीतू सिंह ने किया।

विकलांगों को नहीं मिला आवास, तो वी0डी0ओ0 का खटखटाया दरवाजा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई । जनपद के विकासखंड कोथावां क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत उमरारी के मजरे जात बक्स खेड़ा व ब्राह्मण ताली निवासी कई विकलांगों ने आवास में किए जा रहे धांधली तथा प्रधानमंत्री आवास न देने का प्रधान पुत्र पर आरोप लगाया है इस बाबत का शिकायती पत्र खण्ड विकास अधिकारी कोथावां को देकर आवास की मांग कर न्याय की गुहार लगाई है। प्राप्त समाचार के मुताबिक विकासखंड कोथावां की ग्राम पंचायत उमरारी में विकलांगों को प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित करने का मामला प्रकाश में आया है। भारतीय किसान यूनियन राष्ट्रवादी प्रदेश उपाध्यक्ष अजय कुमार सिंह के नेतृत्व में विकलांग आवास लाभार्थियों ने जानकारी देते हुए बताया कि उक्त विकासखंड की ग्राम पंचायत उमरारी के मजरे जात बक्स खेड़ा व ब्राह्मण ताली निवासी सुनील पुत्र गोकरन, दीपू कुमार पुत्र राकेश कुमार, गोविंद पुत्र गजराज,देशराज पुत्र राजेंद्र तथा सुमित्रा पत्नी शिवपाल आदि विकलांगों ने खंड विकास अधिकारी कोथावां पंकज कुमार यादव को शिकायती पत्र देते हुए कहा है कि हम सभी विकलांग आवास हीन हैं, खेती के लिए पर्याप्त भूमि भी नहीं है। मकान कच्चा बना है, जो कि रहने के योग्य नहीं है। आज तक किसी भी प्रकार की आवासीय योजना का लाभ प्राप्त नहीं हुआ है। ग्राम प्रधान मुन्नी देवी के पुत्र दिनेश कुमार राठौर के द्वारा आवास दिलवाने हेतु एडवांस में 15000 रुपये की मांग की गई। जिसको देने में हम विकलांग असमर्थ हैं। जिसके कारण प्रधान पुत्र द्वारा हम विकलांगों के नाम पात्रता सूची से पृथक करा दिया गया है।उक्त विकलांग आवास लाभार्थियों के बारे में भारतीय

किसान यूनियन राष्ट्रवादी के प्रदेश उपाध्यक्ष अजय कुमार सिंह ने कहा कि यदि पात्र विकलांगों को प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित किया गया, तो उग्र धरना प्रदर्शन करने की चेतावनी दी है। इस संबंध में खंड विकास अधिकारी कोथावां पंकज कुमार यादव ने कहा कि उक्त प्रार्थना पत्रों को संबंधित सचिव व सेक्टर ए0डी0ओ0 पंचायत को समस्त शिकायती पत्र जांच के लिए दे दिए गए हैं,यदि पात्र पाए जाएंगे तो नियमानुसार उक्त विकलांग पात्र लाभार्थियों को आवास उपलब्ध कराया जाएगा तथा धन उगाही यदि की जा रही है तो संबंधित के विरुद्ध जाँच कराकर कानूनी कार्यवाही की जाने की बात कही।

राज्यमंत्री ने पोषण पखवाड़ा का किया शुभारंभ, विपक्षी पार्टी के नेताओं पर जमकर साधा निशाना

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। प्रदेश की उच्च शिक्षा राज्यमंत्री ने रसखान प्रेक्षागृह में पोषण पखवाड़ा का शुभारंभ किया। जिसमें उन्होंने विपक्षी दलों के नेताओं पर जमकर शब्दबाण छोड़े है। अखिलेश यादव को विरासत में राजनीति मिलने पर ट्विटर -ट्विटर खेलने वाला नेता कह डाला। वही राहुल, प्रियंका और स्वामी प्रसाद मौर्य पर भी निशाना साधा है। बताते चले कि प्रदेश सरकार की उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी ने पोषण पखवाड़ा का रसखान प्रेक्षागृह में शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार महिलाओं, बच्चों, किसानों और युवाओं के लिए विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं चला रही है। जिसके तहत आज उन्होंने पोषण पखवाड़ा का शुभारंभ किया है। प्रियंका गांधी और राहुल के सवाल पर उन्होंने कहा कि हम जनता के लिए कार्य कर रहे है। इसलिए जनता ने हमे यहां तक पहुंचाया है। जनता ने हम पर विश्वास किया और जनता को ही विश्वास दिलाना है। हमको प्रियंका गांधी जी को और राहुल गांधी जी को विश्वास नहीं दिलाना है। आज हमने जो किया है इसलिए हम यहां तक पहुंचे हैं और उन्होंने जो किया वह वहां तक पहुंच गए। अखिलेश यादव के आईपीएस के साथ भाजपा नेताओं की गुंडागर्दी के ट्वीट पर राज्य मंत्री ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव ट्वीट -ट्वीट खेल रहे है। उनके पास कुछ रह नही गया उन्हें सिर्फट्वीट -ट्वीट खेलना है। वो भी सोचते हैं कुछ किया जाए भारतीय जनता पार्टी काम कर रही है सरकार अपना काम कर रही है। उन्हें कोई काम मिल नहीं रहा और यही है ना कि विरासत में जब राजनीति मिलती है तो करना नहीं पता होता है कि जनता की सेवा कैसे करें। बस उन्हें ट्वीट -ट्वीट खेलना है बाकी कुछ नहीं करना है। अखिलेश यादव के बयान समाजवादी पार्टी गठबंधन 2024 में लोकसभा की 80 की 80 सीट जीतेगा इस पर उन्होंने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि आज वह धरातल में चले गए। जिस तरह से उनके कारनामे इस समय भी चल रहे हैं तो जितनी सीटें उन्होंने पिछली बार पाई थी इस बार वह भी नहीं रह जाएगी। हमारी सरकार और हम लोग कहते नहीं है। हम लोग निरंतर कार्य करते रहते हैं और सेवा भाव से कार्य करते हैं। अपनी बहनों के लिए हम लोग सेवा भाव से काम करते हैं। युवाओं के लिए काम करते हैं और किसानों के लिए कार्य करते हैं। हम लोग कहने कराने में विश्वास नहीं रखते हैं हम लोग घोषणा पत्र भी जारी नहीं करते है। हम लोग संकल्प पत्र लेकर के आते हैं संकल्प के साथ देश और प्रदेश में जाते हैं और चुनाव भी संकल्प के साथ लड़ते हैं। उसी के साथ में हम लोगों को जनता का समर्थन मिलता है। स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान रामचरितमानस का आजकल लोगों ने पाठ कराना बंद कर दिया है, इसलिए सरकार अपने खर्च पर पाठ करा रही हैं, इस पर उन्होंने पलटवार किया है।

कांग्रेस महासचिव सुशील पासी के पिता का निधन, क्षेत्र में शोक की लहर

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। लंबी बीमारी के चलते प्रदेश कांग्रेस महासचिव सुशील पासी के पिता सूर्यबली (77) का मंगलवार की सुबह निधन हो गया। निधन की सूचना मिलने पर यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बृजलाल खाबरी, सांसद प्रतिनिधि किशोरी लाल शर्मा नें फोन पर शोकाकुल परिवार को सांत्वना दी। वहीं कई जिले के कांग्रेसियों, सुशील पासी समर्थकों, कांग्रेसी कार्यकर्ताओ तथा क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों नें मौके पर पहुंच शोक व्यक्त किया। इस दौरान कस्बा निवासी परिवहन विभाग से सेवानिवृत, अनुशासित जीवन जीने वाले प्रदेश कांग्रेस महासचिव सुशील पासी के पिता सूर्यबली पासी द्वारा सरकारी नौकरी में साधारण वेतन होने के बावजूद अपने बच्चों को उच्च शिक्षा ग्रहण करा क्षेत्र में अंबेडकर डिग्री कालेज की स्थापना कर वंचित एवं जरूरतमंद क्षेत्रीय युवाओं को शिक्षित करने के अभिनव प्रयास को लोगो नें याद कर सराहा । वहीं सपा विधायक श्याम सुंदर भारती, पूर्व विधायक रामलाल अकेला, कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज तिवारी, लक्ष्मीकांत रावत, प्रभात साहू, सत्येन्द्र प्रताप सिंह, प्रदीप चौधरी, उमेश कुमार (कुन्नू प्रधान), विचित्र चौधरी, बाला प्रसाद मौर्य, पवन साहू, सरोज गौतम, विमल रस्तोगी, जुगुनू तिवारी, विनोद तौली सहित सैकड़ों लोगो नें प्रदेश कांग्रेस महासचिव सुशील पासी के आवास पर पहुंच शोक संवेदना व्यक्त की।

मकान निर्माण को लेकर दो पक्षों में चले जमकर लाठी-डंडे

संवाददाता, राठ,हमीरपुर। नगर के फरसौलियाना मुहाल में मकान निर्माण को लेकर हुए विवाद के चलते दो पक्षों में जमकर लाठी डंडों से मारपीट हो गई। दोनों पक्षों के बीच हुई मारपीट में महिला सहित तीन लोग गम्भीर रूप से लहूलुहान हो गये। जिन्हें मौके पर मौजूद अन्य लोगों ने इलाज हेतु राठ के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया। घटना के बाद दोनों पक्षों ने एक दूसरे के विरुद्ध राठ कोतवाली में लिखित तहरीर देकर कार्यवाही करने की गुहार लगाई है। नगर के फरसौलियाना मुहाल निवासी प्रेम कुशवाहा पुत्र ठाकुरदीन ने बताया कि उसके पड़ोस में ही रहने वाले टीकाराम व मानसिंह आदि ने मकान निर्माण के दौरान उसके घर के पास पत्थर रख दिए थे। जिसको लेकर उसने विरोध किया तो टीकाराम, मानसिंह ,नीरज ,रविंद्र व अरविंद ने एक राय होकर लाठी-डंडों से उसकी बेरहमी से पिटाई कर उसे घायल कर दिया। बताया कि जब उसके साथ मारपीट होती देखकर उसका भाई चंद्रप्रकाश एवं भाभी उर्मिला उसे बचाने के लिए दौड़े तो उक्त दबंगों ने उनकी भी बेरहमी से पिटाई कर उन्हें लहूलुहान कर दिया। वहीं दूसरे पक्ष की ओर से मानसिंह ने बताया कि उसके पड़ोस में रहने वाले दबंग चंद्रप्रकाश, प्रेम कुशवाहा व अनुज ने उसके परिवार के लोगों के साथ मारपीट की है। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के विरुद्ध राठ कोतवाली में घटना की लिखित तहरीर देकर कार्रवाई करने की गुहार लगाई है। मामले में राठ कोतवाली के प्रभारी इंस्पेक्टर भरत कुमार ने बताया कि घायलों का मेडिकल परीक्षण कराया गया है तथा मुकदमा दर्ज कर मामले में वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित कराई जा रही है।

8 लोगों के विरुद्ध लूट समेत मारपीट का मामला दर्ज

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। गदागंज थाना क्षेत्र के युवक के साथ तथाकथित पत्नी के परिवारीजनों द्वारा मारपीट व लूट किये जाने के मामले में पुलिस ने 8 अज्ञात लोगों के विरुद्ध लूट समेत मारपीट का मामला दर्ज किया है गौरतलब है कि सोमवार को गदागंज थाना क्षेत्र के मीरापुर मजरे धूता गांव निवासी जितेंद्र विश्वकर्मा अपनी तथाकथित पत्नी के साथ मंझलेपुर स्टेशन से ट्रेन पकड़ने जा रहा था, तभी आरोप है कि उसके पत्नी के परिवार के लोग वहां बोलेरो से पहुंचे और दोनों को गाड़ी में बिठाकर एक ट्यूबवेल पर ले जाकर जमकर पीटा और बयान बदलवाने को लेकर तहसील पहुंचे जहां युवक के शोर मचाने पर आरोपी उसे तहसील परिसर में छोड़कर फरार हो गये, पीड़ित का आरोप है कि बोलेरो सवार लोगों ने उसे मारपीट कर उसके जेब में रखे बीस हजार रुपये व कोर्ट मैरिज का दस्तावेज भी छीन लिया।मंगलवार को जितेंद्र विश्वकर्मा की तहरीर पर पुलिस ने 8 अज्ञात लोगों के विरुद्ध लूट व मारपीट का केस दर्ज किया है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

रंजिशन मारपीट में युवक घायल

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। बेटे के साथ बाजार गये युवक को पड़ोसी गांव के तीन लोगों ने रंजिशन मारपीट कर घायल कर दिया, परिजनों की मदद से उसे इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है, अभी तक कोतवाली में मामले की शिकायत नहीं की गई है। कोतवाली क्षेत्र के टेकई का पुरवा मजरे कमोली गाँव निवासी रमेश कुमार 40 वर्ष अपने बेटे के साथ मंगलवार की दोपहर बाद किशुनदासपुर बाजार गया हुआ था,तभी आरोप है कि पड़ोसी गांव के तीन लोग उसे कुछ दूरी पर बुलाकर ले गये और लात घूंसों से उसकी जमकर पिटाई कर दी, जिससे वो गम्भीर रूप से घायल हो गया,आसपास के लोगों के पहुंचने पर आरोपी मौके से भाग निकले, जिसके बाद जानकारी होने पर परिजनों द्वारा उसे इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है,घायल युवक ने रंजिशन मारपीट करने का आरोप लगाया है। सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज कुमार शुक्ल ने बताया कि मारपीट में घायल युवक सीएचसी आया है, जिसका इलाज किया जा रहा है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि मामले की जानकारी नहीं है, तहरीर मिलने पर कार्यवाही की जायेगी।

फरार चल रहे अभियुक्त के घर पुलिस ने डुगडुगी बजबाकर घर पर चस्पा की नोटिस

संवाददाता, हरदोई । जनपद के कोतवाली शाहाबाद के अंतर्गत ग्राम बरौनिया में मुकदमा अपराध संख्या 440 बटा 22 धारा 306 भादवि थाना शाहाबाद से संबंधित अभियोग पंजीकृत किया गया था जिसमें अश्वनी पुत्र वीरेंद्र निवासी ग्राम बरौनिया थाना कोतवाली शाहाबाद जनपद हरदोई जो उपरोक्त अभियोग से लगातार फरार चल रहा है और उस केस की विवेचना मझिला पुलिस कर रही थी न्यायालय के आदेश पर थाना मझिला प्रभारी निरीक्षक धर्मदास सिद्धार्थ मैं हमराही फोर्स के साथ दिनांक 20 मार्च 2023 को ग्राम बरौनिया में जाकर फरार चल रहा था अभियुक्त अश्वनी पुत्र वीरेंद्र घर पर नहीं मिला उसके बाद पुलिस ने न्यायालय के आदेश अनुपालन में उसके घर पर 82 दा 0 प्र 0 स 0 का नोटिस चस्पा कर डुगडुगी बजाकर मनुवादी कराई गई।

कोर्ट के आदेश पर की कार्यवाई को लेकर पुलिस ने फरार अभियुक्त को दी अंतिम चेतावनी

संवाददाता, हरदोई । कोतवाली संडीला प्रभारी दिलेश कुमार सिंह ने बताया है कि थाना संडीला जनपद हरदोई पर मुकदमा अपराध संख्या 390ध्9022 धारा 396 भा द सं प्रकाश में आया है कि अभियुक्त सलीम उर्फमझलकु उर्फबडक्के पुत्र वशीर निवासी रसलपुर बकैईया थाना सकरन - सीतापुर की गिरफ्तारी का पुलिस द्वारा हर सम्भव प्रयास किया गया परन्तु गिफ्तार नहीं किया जा सका।जिसकी सूचना के बाद न्यायालय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट हरदोई द्वारा फरार घोषित करते हुए दिनांक 20-2-2023 को इस्तहार आदेश 82 दे0प्र0 सं0 जारी किया गया है।यदि न्यायालय में आत्म समर्पण नहीं करता है तो सम्पत्ति कुर्की आदेश 83 द0 प्र0 सं0 न्यायालय द्वारा जारी किया जायेगा।इस आदेश की जानकारी उन्होंने विभिन्न संचार माध्यमों से प्रकाशित व प्रसारित कर अभियुक्त को सूचित कर दिया गया है।यदि वह तय अवधि तक आत्मसमर्पण नहीं करेगा तो न्यायालय के आदेशानुसार विधिक कार्यवाई अमल में लाई जाएगी।

मीरजापुर में सही भोजन-बेहतर जीवन की थीम पर लगा अंतर्राष्ट्रीय मिलेट ईट राइट मेला

मा0 कैबिनेट मंत्री व नगर विधायक द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया शुभारंभ

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

मीरजापुर। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत सोमवार को अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के उपलक्ष्य में आयोजित मिलेट ईट राइट मेला का आयोजन सही भोजन बेहतर जीवन थीम के साथ किया गया। इस दौरान आमजन की सक्रिय भागीदारी से नागरिकों को सही भोजन के प्रति जागरूक किया गया। ईट राईट मेला का आयोजन खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा नगर विधानसभा स्थित राजकीय इंटर कालेज, महुवरिया में किया गया। मेला का उद्घाटन मा0 कैबिनेट मंत्री उपभोक्ता संरक्षण, बाट माप एवं प्राविधिक शिक्षा आशीष पटेल व मा0 विधायक नगर रत्नाकर मिश्रा, द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के उपलक्ष में जनपद मिर्जापुर में आज दिनांक 20 मार्च 2023 को स्थान जीआईसी ग्राउंड महुवारियां में खान पान की स्वस्थ आदतों के विकास हेतु आम जनमानस को जागरूकता करने के उद्देश्य से ईट राइट मेले का आयोजन प्रथम बार किया गया। इस वर्ष यह मेला श्री अन्न को समर्पित था। मेले का प्रमुख आकर्षण मेले में लगे नवोन्मेषी खाद्य तेल, चावल वा श्री अन्न से बनी मिठाईया फेर्टीफाइड मिल्क प्रोडक्ट, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मिलेट आधारित चिल्ला के स्टाल रहे। साथ में स्ट्रीट फूड वेंडर आयोजित किए गए निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कैंप एवं लाइसेंस पंजीकरण कैंप की जनप्रतिनिधियों द्वारा सराहना की गई तथा निर्देशित किया गया कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम कराए जाएं जिसे जन जागरूकता एवं मोटे अनाजों की उपयोगिता को बढ़ावा मिल सके। रैली की शुरुआत परेड ग्राउंड पुलिस लाइन से शुरू हो कर जीआईसी ग्राउंड में समापन हुआ। तत्पश्चात योग प्रशिक्षक द्वारा योग कैंप का आयोजन किया गया। स्टाल की प्रदर्शनी के साथ साथ विशेषज्ञ द्वारा मोटे अनाजों की उपयोगिता पर बल दिया गया। कार्यक्रम में अपना दल एस जिलाध्यक्ष इंजीनियर राम लौटन बिंद, राष्ट्रीय महासचिव रमाशंकर पटेल, प्रदेश अध्यक्ष किसान मंच बंश बहादुर पटेल, युवा मंच जिला अध्यक्ष उदय पटेल, जिला उपाध्यक्ष संजय उपाध्याय, उमाशंकर सोनी सुरेश पाल, अजय पाठक आदि लोग उपस्थित रहें।

जर्जर पुलिस चौकी के स्थान पर सामुदायिक केंद्र का निर्माण होगा : खन्ना

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। शासन की स्वीकृति उपरांत नगर आयुक्त महोदय संतोष कुमार शर्मा के निर्देशन में नगर क्षेत्र के सराय काइयां एवं फत्तेपुर रेती में जर्जर हो चुकी पुलिस चौकी के स्थान पर सामुदायिक केंद्र का निर्माण कराया जाएगा। इसके दृष्टिगत नगर निगम शाहजहाँपुर के तत्वावधान में निर्मित कराये जाने वाले सामुदायिक केंद्र के शिलान्यास कार्यक्रम का आयोजन उक्त स्थलों पर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने सराय काइयां एवं फत्तेपुर रेती पर निर्मित होने वाले सामुदायिक केंद्रों का शिलान्यास किया। इस अवसर पर श्री खन्ना ने बताया कि नगर वासियों की सुविधाओं को प्राथमिकता के आधार

पर नगर निगम द्वारा विकास कार्य कराए जा रहे है, जिसके क्रम नगर क्षेत्र के सराय काइयां एवं फत्तेपुर रेती के क्षेत्र वासियों की सुविधा हेतु इन सामुदायिक केंद्रों का निर्माण नगर निगम द्वारा कराया जाना है। इस अवसर पर नगर आयुक्त सन्तोष कुमार शर्मा ने बताया कि शासन की स्वीकृति उपरांत नगर क्षेत्र के सराय काइयां स्थित जर्जर पुलिस चौकी के स्थान पर लगभग एक करोड़ की लागत से एवं फत्तेपुर रेती स्थित जर्जर पुलिस चौकी के स्थान पर लगभग एक करोड़ की लागत से सामुदायिक केंद्र का निर्माण कराया जाना स्वीकृत है। निर्माण कार्य हेतु समस्त आवश्यक औपचारिकताओं को पूर्ण करते हुए शीघ्र ही आरम्भ कराया जाएगा।इस अवसर पर मंत्री सुरेश कुमार खन्ना के साथ नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, अपर नगर आयुक्त एस0के0 सिंह एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारीगण तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

नवरात्रि एवं रमजान माह को लेकर जिलाधिकारी ने बैठक कर दिये आवश्यक निर्देश

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी नवरात्रि एवं रमजान के पर्वो के दृष्टिगत महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को कड़े निर्देश दिये कि समय से सभी समस्त तैयारियां पूर्ण करा ली जाए। उन्होंने कहा कि स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाए तथा नवरात्रि के दृष्टिगत मंदिरों के आसपास की सफाई चूना छिड़काव इत्यादि का प्रबंध सुनिश्चित किया जाए। साथ ही पानी की पर्याप्त व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिन रास्तों से जुलूस अथवा शोभायात्रा निकाली जानी है, उन मार्गो पर स्थित ट्रांसफार्मर

के आसपास बैरीकेटिंग करायी जाये। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि संबंधित सड़को को ठीक करा लिया जाए तथा सड़कों पर किसी प्रकार से गड्ढे ना हो। उन्होंने कहा कि सभी नगरीय निकायों के अधिशासी अधिकारी विद्युत विभाग एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों के साथ क्षेत्र का भ्रमण अवश्य करें। उन्होने कहा कि जुलूस अथवा शोभायात्रा निकालते समय विद्युत टीम को अवश्य साथ में रखा जाए। मंदिरों को जाने वाले रास्तों में किसी प्रकार का अतिक्रमण ना हो यह सुनिश्चित किया जाए। रमजान के दृष्टिगत जिलाधिकारी ने आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए।जिलाधिकारी ने शासन से प्राप्त निर्देशों के क्रम में दिनांक 22 मार्च से 30 मार्च 2023 तक चौत्र नवरात्रि और रामनवमी के अवसर पर देवी मंदिरों एवं शक्तिपीठों में कार्यक्रम आयोजित कराने हेतु भी निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी कार्यक्रम शासनादेश में दिए गए निर्देशों का अनुपालन करते हुए पूरी भव्यता एवं गरिमा के साथ आयोजित कराये जाए।

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस पर किया गया सभा का आयोजन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सिद्धार्थनगर। कपिलवस्तु नगर पंचायत स्थित हथिहवां में आज मथुरा प्रसाद चौधरी ऑलमाइटी पब्लिक स्कूल के प्रांगण में ष्अंतर्राष्ट्रीय वन दिवसष् पर सभा का आयोजन किया गया। वहीं विद्यालय के प्रधानाचार्य छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि हर वर्ष 21 मार्च को पेड़ों के महत्व के विषय में जन जागरूकता फैलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंतरराष्ट्रीय वन दिवस मनाया जाता है जंगलों को बचाए रखने के लिए वर्ष 1971 में यूरोपीय कृषि संगठन की बैठक में 21 मार्च को प्रतिवर्ष विश्व वन दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया गया था। वन हमारे जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं।। वनों पर समस्त जीव का जीवन निर्भर रहता है। इस पावन अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस पर हम अपने हाथों वृक्षारोपण करके इसकी सार्थकता साबित करें। दुनिया के आधे से ज्यादा वनस्पति जंतु तथा कीट प्रजातियां इन्हें उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पाए जाते हैं ।लेकिन बड़ी तेजी से काटे जा रहे पेड़ों के कारण सभी का जीवन खतरे में पड़ रहा है। आदमी जिस निर्ममता से पृथ्वी को जंगल विहीन कर रहा है। उसे देखकर लगता है कि आने वाले कुछ वर्षों में जंगल संग्रहालय की वस्तु बनकर रह जाएंगे। हमें हर हाल में जंगलों को बचाने और ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाने की आवश्यकता है। सिर्फ आज ही के दिन नहीं हमें प्रतिदिन पेड़ पौधों की बढ़ती आवश्यकता पर ध्यान देने और तथा उसके बचाव में जुट जाना चाहिए। अगर हम सभी लोगों ने अभी भी ध्यान नहीं दिया तो समस्त प्रकृति व जीव खतरे में पड़ जाएंगे। किसी व्यक्ति को जीवित रहने के लिए जितनी ऑक्सीजन की जरूरत है वह सिर्फऔर सिर्फपेड़ों के माध्यम से मिल सकता है। लेकिन पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से उनके संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है ।वर्तमान समय में वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड,

सीएफसी जैसी जहरीली गैसों को शोखकर का धरती पर रह रहे असंख्य जीव धारियों को प्राणवायु ऑक्सीजन देने वाले जंगल आजकल अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। विश्व की जनसंख्या अगर एक - एक पेड़ लगाए तो पृथ्वी को फिर से हरा-भरा बनाया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस सभा में उपस्थित प्रधानाचार्य रामअवतार चौधरी प्रबंधक सविता चौधरी अध्यापकगण प्रिंस, सर्वजीत ,उमेश ,मुलायम ,मनोज, सुरेंद्र, सुरभि उपाध्याय ,इशानी ,ज्योति, उर्मिला, प्रियंका छात्र एवं छात्रा उपस्थित रहे।

बृहद पथ संचलन का भव्य कार्यक्रम

भारतीय नव वर्ष की पूर्व संध्या पर बृहद पथ संचलन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

मिर्जापुर। भारतीय नव वर्ष की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्वाधान में बृहद पथ संचलन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में क्षेत्र प्रचारक आदणीय अनिल जी का पाथेय स्वयंसेवकों को प्राप्त हुआ। स्वयंसेवकों के बीच उद्बोधन में मुख्य वक्ता ने डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार के जीवन संघर्षों की चर्चा करते हुए राष्ट्र कल्पना की सचेत भावना के साथ भारत राष्ट्र को विश्व गुरु बनाना तथा समाज के नैतिक मूल्य का निर्वहन करते हुए अपने राष्ट्र समाज के लिए गरीब निस्सहाय की मदद कर अपने देश को विश्व गुरु के पायदान पर पहुंचाएं। समाज में स्वयंसेवकों की भूमिका का सार्थक सहयोग कर धर्म राष्ट्र को उच्च श्रेणी में पहुंचाना यह हमारा नैतिक कर्तव्य है। पथ संचलन लायंस स्कूल से प्रारंभ

होकर दीनदयाल उपाध्याय चौराहा, से होते हुए गणेश गंज चौराहा सँकीर्तन भवन, मुकेरि बाजार धुंधीकटरा, नाबालक का तबेला त्रिमुहानी, नार घाट काली जी मंदिर होते हुए नवीन सिनेमा से लालडीग्गी पुनः लायंस स्कूल में समापन किया गया। उक्त कार्यक्रम में पूर्ण गणवेश धारी स्वयं सेवकों ने 5000 से अधिक संख्या में स्वयं सेवकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ राजकुमार भारती(ऑर्थो सर्जन ट्रामा सेंटर)ने किया। मंच पर विभाग संघचालक माननीय तिलकधारी जी एवं जिला संघचालक माननीय शरदचंद्र उपाध्याय जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से रामचंद्र जी प्रांत प्रचारक प्रमुख, डॉ कुलदीप जी प्रांत बौद्धिक शिक्षण प्रमुख, विभाग प्रचारक प्रतोष जी, जिला प्रचारक धीरज जी, नगर प्रचारक पवन जी जिला कार्यवाह चंद्र मोहन जी, बृजभूषण जी रमाशंकर पटेल जी, श्याम सुंदर जी भवेश जी,मनोज जयसवाल जी, रामचंद्र शुक्ला जी, मनोज श्रीवास्तव जी, माता सहाय जी, गंगेश, संतोष शैलेश ,अनिल जी,नीलेश जी,धर्मराज जी, दिलीप शुक्ला जी, विवेक बनवाल जी इत्यादि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कक्षा 1 से 8 तक ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' कार्यक्रम की प्रतियोगिताएं कराई जा रही आयोजित

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उन्नाव। मंगलवार को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने बताया है कि जिलाधिकारी के निर्देशानुसार समस्त परिषदीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा- 1 से 8 तक ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' कार्यक्रम की प्रतियोगिताएं आयोजित करायी जा रही है। उक्त प्रतियोगिताओं में ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' पर लोगों प्रतियोगिता, पोस्टर एवं चार्ट प्रतियोगिता आदि

करायी जा रही है। जिनके ब्लॉक स्तर पर समस्त विद्यालयों में करायी गयी उक्त प्रतियोगिताओं की प्रविष्टियों एवं परिणाम संकलित कर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा गठित ब्लॉक स्तरीय समिति द्वारा उनका परीक्षण कर प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों का चयन कर जनपद स्तर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को प्रेषित किया जा रहा है। जिल बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त प्रविष्टियों एवं परिणामों के परीक्षण करने हेतु अपने स्तर पर गठित की गयी है, जो समस्त ब्लॉकों से प्राप्त परिणामों का परीक्षण कर जनपद स्तरीय समिति को उक्त परिणाम प्रस्तुत करेगी।

युवती की हत्या करने वाला अभियुक्त को आलाकत्ल सहित किया गया गिरफ्तार

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उन्नाव। थाना बीघापुर पुलिस स्वाट टीम द्वारा युवती की हत्या करने वाले अभियुक्त को घटना में प्रयुक्त तमंचा व कारतूस बरामद कर गिरफ्तार किया गया। आप को बता दे कि 19 मार्च को वादी सबसुखलाल उर्फ बचौनी पुत्र स्व0 गोवर्द्धन निवासी ग्राम भैसई कोयल थाना बीघापुर ने समय 12.30 बजे उपस्थित थाना आकर सूचना दी कि अज्ञात अभियुक्त ने वादी की पुत्री की हत्या कर दी है व शव ग्राम भैसई कोयल मे तालाब के पास झाड़ियो मे पड़ा है। इस सूचना पर थाना स्थानीय पर मुकदमा बनाम अज्ञात के पंजीकृत किया गया। साक्ष्य संकलन के आधार पर राजेश 29 पुत्र कालीशंकर निवासी ग्राम भैसई कोयल थाना बीघापुर का प्रेम प्रसंग मृतका से होना प्रकाश मे आया, जिसके आधार पर परिजनों द्वारा

राजेश उपरोक्त द्वारा उनकी पुत्री की हत्या किये जाने के संबंध मे अलग से प्रार्थना पत्र दिया गया। हत्या करने के बाद राजेश घर से फरार था, जिसे साक्ष्य संकलन की कार्यवाही कर मंगलवार को दुबेपुर महर्षि दयानन्द स्कूल के पास से गिरफ्तार किया गया तथा अभियुक्त राजेश उपरोक्त की निशांदेही पर एक अदद तमंचा 1 खोखा कारतूस बरामद किया गया। यह भी तथ्य प्रकाश मे आया है कि अभियुक्त का विगत 3 वर्ष से मृतका से प्रेम संबंध था। मृतका घर से दिल्ली काम करने चली गयी, होली के समय वह 1 मार्च को घर आयी थी। अभियुक्त उससे शादी करना चाहता था परन्तु मृतका किसी अन्य व्यक्ति से शादी करना चाहती थी। घटना के दिन जब शौच के लिए मृतका घटनास्थल के पास गयी तो अभियुक्त राजेश वहां पहले से मौजूद था जिसके द्वारा मृतका से खुद से शादी करने को कहा गया, जब मृतका ने इनकार कर दिया तो अभियुक्त ने मृतका की तमंचे से गोली मारकर हत्या कर दी।

वर्तमान भाजपा मंडल अध्यक्ष की हुई करारी हार गीता यादव ने मारी बाजी

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

जरवल बहराइच। साधन सहकारी समिति जरवल(परसा) में गीता यादव वर्तमान भाजपा मंडल अध्यक्ष को हराकर अध्यक्ष पद पर विजई हुई। गीता यादव ने कहा कि पूरी ईमानदारी के साथ काम करके जनता की हर संभव मदद की जाएगी। इस मौके पर प्रमोद कुमार गुप्ता लोकतंत्र सेनानी, राजन सिंह पूर्व जिला पंचायत सदस्य, रामसमुझ

यादव समाजसेवी, गुलशन कुमार समाजसेवी, डॉक्टर रामतेज यादव सदस्य डायरेक्टर, डॉ अवधेश कुमार, बुधराम यादव प्रधान नासिरगंज, योगेंद्र यादव पूर्व प्रधान रेतीहाता, विद्याराम यादव जरवल कटी, राम संवारे यादव, राजेश यादव, जीवन लाल यादव सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

साधन सहकारी समिति धनोहरी के अध्यक्ष पद पर शत्रुघ्न प्रसाद मिश्र निर्विरोध निर्वाचित

संवाददाता, सिद्धार्थनगर। भनवापुर साधन सहकारी समिति धनोहरी के अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर रविवार को चुनाव हुआ जिसमें साधन सहकारी समिति धनोरी से शत्रुघ्न प्रसाद मिश्र अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध निर्वाचित हुए। पूर्व विधायक राघवेंद्र प्रताप सिंह भनवापुर ब्लाक प्रमुख लवकुश ओझा दीपक श्रीवास्तव अजय चौधरी नवल पटेल दद्दन वर्मा पवन मिश्रा गोविंद मिश्रा सचिन मिश्रा सच्चिदानंद मिश्रा अमित ओझा विकास मिश्रा अन्य लोगों ने दी बधाई।

शिवशंकर बने कोटिया गड़ोरी के अध्यक्ष

संवाददाता, सिद्धार्थनगर। पथरा बाजार (एस एन बी) सहकारी समितियों के प्रबंध समिति के चुनाव में खिरौहा निवासी शिवशंकर साधन सहकारी समिति कोटिया गड़ोरी के अध्यक्ष चुने गए। रविवार को सहकारी समिति कार्यालय पर अध्यक्ष पद के लिए हुए चुनाव में कुल नौ संचालकों में वासुदेव, राजेश कुमार, वीरेंद्र कुमार, बृजलाल,रामलौट, पवित्रा देवी ने शिवशंकर को अध्यक्ष पद के लिए अपना समर्थन दिया, जिससे खिरौहा निवासी शिवशंकर साधन सहकारी समिति कोटिया गड़ोरी के अध्यक्ष चुन लिए गए। उक्त क्रम में एक अन्य समाचार के अनुसार साधन सहकारी समिति ककुआ उर्फभतिजवापुर की अध्यक्ष नीलम द्विवेदी पत्नी रमेश धर द्विवेदी को अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध निर्वाचित हो गई है ।वही केपी सिंह, सुरेश कुमार, जगदेव, सलमान, आदि लोगों ने बधाई दिया।

विवाहिता को असलहा दिखाकर जान से मरने का प्रयास

संवाददाता, पूरनपुर। गलत नियत रखने के विरोध करने पर विवाहिता को असलहा लेकर जान से मारने का प्रयास किया। आरोप है कि विवाहिता ने भागकर अपनी जान बचाई ।घटनाक्रम की तहरीर पुलिस को देकर कार्रवाई की मांग की है ।पुलिस मामले की जांच पड़ताल करना बता रही है। मामला घुंघचाई थाना क्षेत्र के एक गांव का है ।गांव निवासी एक विवाहिता ने बताया उसकी शादी एक युवक के साथ हुई है ।उसका आरोप है कि शादी के बाद से ही उसका ससुर आए दिन उस पर हमेशा गलत नियत रखता है ।विरोध करने पर गाली गलौज कर लाइसेंसी रिवाल्वर दिखाकर जान से मारने की धमकी देकर चुपा करा देता है ।रायफल लेकर जान से मारने की कई बार कोशिश भी कर चुका है ।जिसका वीडियो भी उसके पास है ।उसका कहना है कि उसको आए दिन मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है ।कुछ दिन पहले उसको ससुरालियों ने मारपीट कर घर से निकाल दिया। 20 मार्च को उसका ससुर रिवाल्वर लेकर उसके पास पहुंचे और गाली गलौज करने लगा। विरोध करने पर उसको मारा पीटा और जान से मारने की धमकी दी। शोर-शराबा करने पर ससुर आग ववूला गया ।वह घर के अंदर जाकर राइफल निकाल लाया और विवाहिता पर तान दी। किसी तरह से विवाहिता ने भागकर अपनी जान बचा कर मौके से भाग कर थाने पहुंची ।घटनाक्रम को लेकर खलबली मच गई ।कई लोग मौके पर पहुंच गए। उसको वापस घर आने पर जान से मारने की धमकी दी गई है ।विवाहिता ने मामले की तहरीर पुलिस को दी ।थाना प्रभारी राजेंद्र सिरोही ने बताया उन्हें ऐसे किसी भी मामले की सूचना नहीं है। अगर तहरीर दी जाती है तो जांच कर ससुरालियों पर कार्रवाई की जाएगी।

नवरात्रि आज से सज गई मंदिर और दरबार

संवाददाता, पूरनपुर। चौत्र नवरात्र की शुरुआत हो रही है। इसको लेकर मंदिरों में तैयारियां जोरों से चल रही हैं। मैइया के दरबार सजकर तैयार हो चुके हैं। बुधवार से नौ दिनों तक मइया के नव स्वरूपों की विधि विधान से पूजा की जाएगी। नवरात्र को लेकर सोमवार को बाजारों में रौनक दिखी ।नवरात्र को लेकर शहर के चामड़ गेट स्थित चामुंडा माता मंदिर, रमनपुर स्थित चामड़ मंदिर, बोहरे वाली देवी मंदिर, शीतला माता मंदिर, शांता माता मंदिर, पथवारी मंदिर आदि में सोमवार को साफ-सफाई, रंगाई-पुताई और प्रकाश व्यवस्था का कार्य किया गया ।देवी मंदिरों में सेवादार नवरात्रों को लेकर पूरी तैयारियां में लगे हुए हैं। भीड़ को देखते हुए मंदिरों अतिरिक्त इंतजाम किए जा रहे हैं। आज से मंदिरों में पूजा अर्चना के साथ दर्शन, भजन कीर्तन, प्रसाद वितरण का सिलसिला शुरू हो जाएगा। फूल बंगला, देवी जागरण, हवन आदि का आयोजन कई देवी मंदिरों पर होगा। प्रतिदिन सुबह पूजा अर्चना के बाद मइया के भव्य श्रृंगार किए जाएंगे। देर रात्रि तक भक्ति गीतों के साथ मइया के दर्शनों का सिलसिला जारी रहेगा। मां भवानी की स्तुति के लिए घर-घर में तैयारियां हो चुकी हैं। कलश स्थापना के साथ घरों में भी मां अम्बे की उपासना का कार्यक्रम नवरात्रों के दौरान चलेगा। भक्त उपवास रखकर मनोरथ पूर्ण होने की कामना मां अम्बे से करेंगे। मंदिरों के साथ सजे बाजार मंदिरों की तरह बाजार भी नवरात्रों को लेकर सज गए हैं। पूजा सामग्री से दुकानें सजी हुई हैं। दुकानों में मइया के श्रृंगार के लिए लाल लाल चुनरी भी लटकी हुई हैं। इससे बाजारों में रौनक बिखरी हुई है। इन दुकानों पर पूजा सामग्री, श्रृंगार का सामान, मूर्ति आदि खरीदने वालों की भीड़ लगी हुई।

शेख सैयद रहमतुल्लाह अलैह का 16 वा सलाना उर्स मनाया गया

संवाददाता, बरखेड़ा । कस्बे से सटे भैसा ग्वालपुर मे स्थित सोमवार को शेख सैयद रहमतुल्लाह अलैह के मजार पर 16 वा साला उर्स बड़ी धूमधाम से मनाया गया इसमे कुरान शरीफ की तिलावत मिलाद शरीफनात शरीफकी तिलावत के साथ साथ कमेटी द्वारा शेख सैयद रहमतुल्लाह अलैह की मजार पर चादर पोशी की गई साथ ही साथ लंगर भी लूटाया गया वही दूर दराज से आये जायरीनो ने शेख सैयद रहमतुल्लाह अलैह की मजार पर दुआ मागी कस्बे व क्षेत्र से आये अकीदतो ने बढ चढकर हिस्सा लिया वही देर शाम को उर्स का समापन किया इस मौके पर जामा मस्जिद के मौलाना हिसामुद्दीन कारी, हनीफ कुरैशी, असलम कुरैशी, अनबार कुरैशी, अशफाक कुरैशी, अनस कुरैशी, फारूक कुरैशी, इलियास कुरैशी, जीशान कुरैशी, अबरार कुरैशी, जावेद कुरैशी, अनीस कुरैशी, इमरान कुरैशी, असद कुरैशी, महबूब मंसूरी आदि हजारो की संख्या मे लोग मौजूद रहे।

पुलिस ने सरगना समेत 8 लोगों पर गिरोह बंद अधिनियम के तहत दर्ज की रिपोर्ट

संवाददाता, हरदोई टडियावां थाने के ग्राम देबिया फत्तेपुर के अभियुक्त हनीफउर्फसुट्टे पुत्र आबिद खां अपने साथी गांव के रहने वाले मोहम्मद सलीम उर्फसलीम पुत्र आबिद खां, इसरायल खाँ पुत्र इस्माइल खां, सोनू पुत्र गौरी खां, परवेज उर्फपरवेज खाँ पुत्र वाजिद खां उर्फकासिम, हासिम खां उर्फ आशिम खां पुत्र हसन्ने और शहनाज उर्फ शाहनवाज पुत्र अमीन खां निवासी ग्राम गुरसण्डा थाना पिसावां जनपद सीतापुर व इसी थाने के ग्राम जयराजपुर के अय्यूब उर्फ गुण्डे पुत्र सज्जाक अली उर्फ रज्जाक के साथ मिलकर एक संगठित गिरोह कायम कर रखा है। एसएचओ श्री सिंह ने तहरीर में बताया कि यह सभी अभियुक्त जिले भर में सक्रिय है, तहरीर में आगे कहा कि हनीफ उर्फ सुट्टे पुत्र आबिद खाँ अपने साथियों के साथ गैंगलीडर है, और गिरोह बनाकर अनुचित रूप से आर्थिक, भौतिक व दुनियाबी लाभ अर्जित करने के मकसद से भारतीय वन अधिनियम के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध को कारित कर रहे है। तहरीर में एसएचओ श्री सिंह ने यह भी कहा कि मास्टर माइंड हनीफ उर्फ सुट्टे और उसके गैंग के सदस्यों द्वारा अवैध तरीके कोयला भट्टियाँ स्थापित कर वन सम्पदा को जलाकर कोयला बनाने का अपराध कारित करते है, एसएचओ श्री सिंह ने दी गई तहरीर में और भी आरोप लगाए है। पुलिस ने उनकी तहरीर पर उ.प्र. गिरोहबंद समाज विरोधी क्रियाकलाप (निवारण)अधिनियम 2, उ.प्र. गिरोहबंद समाज विरोध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 3 की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर जांच कर फरार आरोपितों की तलाश शुरू कर दी है।

संस्कृत सकल शास्त्रों एवं संस्कृतियों का मूल है : प्रो. प्रयाग नारायण

निर्णय लेने की शक्ति देना ही महिला सशक्तिकरण है : डॉ.रश्मि

संवाददाता

प्रयागराज । इविवि में राष्ट्रीय सेवा योजना के छठवें दिन इकाई-20 का शुभारंभ गंगानाथ झा विस्तार भवन में प्रो. प्रयाग नारायण मिश्र,डॉ. विशाल विजय, डॉ.रश्मि यादव, डॉ.विकास शर्मा एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राघवेन्द्र मिश्र के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम की शुरुवात में महेश कुमार शुक्ल, शिवेंद्र मिश्र एवं अरुण तिवारी ने वैदिक मंगलाचरण, स्वस्ति वाचन एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष प्रो. प्रयाग नारायण मिश्र इ.वि. वि. ने भारतीय संस्कृति और युवा विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्कृत सकल शास्त्रों एवं संस्कृतियों का मूल है। संस्कृत एवं संस्कृति का यह मणिकांचन संयोग अद्भुत है। फिर उन्होंने स्वयंसेवकों में सेवा भाव जागृत करते हुए कहा कि सेवा धर्म ही अन्य धर्मों को पालन करने की सीख देता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. विशाल विजय इ. वि. वि. ने कहा कि भ्रमण शील बनिए। तभी आपके स्वच्छ मन में कला एवं मनन शक्ति का विकास होगा।सारस्वत अतिथि डॉ.रश्मि यादव इ.वि.वि. ने नारी शक्ति एवं नारी शिक्षा पर वक्तव्य देते हुए कहा कि निर्णय लेने की शक्ति देना ही महिला सशक्तिकरण है।अतिथि वक्ता डॉ.विकास शर्मा इ.वि.वि ने स्वामी विवेकानंद एवं युवा पर वक्तव्य देते हुए कहा कि अगर संपूर्ण भारत को समझना है तो स्वामी विवेकानंद को पढ़िए।जैसे वायु सकल भुवन की जीवनदायिनी बनकर प्रेरित करती है उसी प्रकार युवा अपने सद् आचरण एवं लग्न शक्ति से राष्ट्र की दिशा एवम् दशा निर्धारित करता है। अंत में कार्यक्रम का सफ्लता पूर्वक संचालन एवं आभार ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राघवेन्द्र मिश्र ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा किष्आधुनिक बनने के होड़ में भारतीय केवल पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते जा रहे हैं,अगर वे वैदिक पद्धति एवं ऋषि-ऋषिका परम्परा का अनुकरण करें सकार्यक्रम अधिकारी डॉ. राघवेन्द्र मिश्र के दिशा निर्देश में आज पुन: विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग एवं सीनेट हाल के पास में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अवसर पर महेश शुक्ल, कृष्ण बिहारी दुबे , हरिओम तिवारी, अंशुल, अंकित पाल,किशन गुप्ता, शिवेंद्र, अरुण तिवारी,सूरज, विनय कुमार,अंकित सोनकर,अनुराग शर्मा ,अभिनव शुक्ल,अंकुर जायसवाल, अनुपम मिश्र,सर्वेंद्र, अंशू पांडेय आदि स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

दीक्षांत समारोह में नौनिहालों को मिले प्रमाण पत्र, खिले चेहरे

प्राचार्या ने अभिभावकों को शिक्षा के प्रति बच्चों की भावनात्मक रुचि, विद्यालय में बच्चों की दैनिक गतिविधियों के बारे में बताया

संवाददाता, प्रयागराज। श्री महाप्रभु पब्लिक स्कूल में सोमवार को कक्षा पी0जी0 के नौनिहालों के लिए दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में बच्चे अपने माता-पिता के साथ उपस्थित हुए। बच्चों के शैक्षणिक यात्रा के प्रथम पायदान पर उनको स्नातक स्तरीय दीक्षांत समारोह के समतुल्य उपाधि प्रदान की गई जिसमें नौनिहालों एवं अभिभावकों के चेहरे खिल उठे। प्रधानाचार्या रविंदर बिरदी ने कक्षा के मॉनिटर शिवांश रंजन एवं श्लोका सिंह और इसके साथ ही कक्षा के डिसिप्लिन इन्चार्ज शिखा पांडेय, यशिका मिश्रा एवं गार्गी दत्त मिश्रा को उत्कृष्टता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। प्राचार्या ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए शिक्षा के प्रति बच्चों की भावनात्मक रुचि, विद्यालय में बच्चों की दैनिक गतिविधियों आदि पर अपने सुझाव साझा किए। इस अवसर पर ज्ञान प्रकाश दुबे, कक्षाध्यापिका नेहा योगेश्वर, गुंजन सक्सेना, लीना अरोड़ा, अंजू तिवारी आदि उपस्थित रहे।

महाविद्यालय के कैंपस बाजार में हुई जमकर खरीददारी

संवाददाता

प्रयागराज। हेमवती नन्दन बहुगुणा पीजी महाविद्यालय की स्किल डेवलपमेंट कमेटी ने भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत महाविद्यालय और महात्मा गांधी नेशनल काउंसिल आफ रूरल डेवलपमेंट के तत्वावधान में सोमवार को कैंपस बाजार का आयोजन किया । जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने अपने प्रोडक्ट के स्टॉल प्राइस टैग के साथ प्रदर्शित किया।इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा निदेशक डॉक्टर ब्रह्मदेव रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर ओम प्रकाश ने किया। उच्च शिक्षा निदेशक ने इन उत्पादों की खूब प्रशंसा की और छात्र-छात्राओं को आगे भी इस तरह के कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय के प्राध्यापकों व छात्र-छात्राओं ने इन उत्पादों की जमकर खरीदारी की।इसमें फैशन ज्वेलरी, हस्त निर्मित सामग्री, मोमबत्ती, आर्ट वर्क, फोल्डर ,चाकलेट ,हस्त निर्मित वस्त्र.हर्बल साबुन,विभिन्न मिलेट के स्टॉल छात्र छात्राओं ने लगाये।इस कार्यकम में खाने पीने की विभिन्न सामग्रियों के स्टाल भी लगाये गये। उक्त जानकारी मीडिया प्रकोष्ठ से डॉ.अर्चना राय ने दी।कार्यक्रम में प्रोफेसर सुवर्णा सरकार, डॉ केसरी नंदन मिश्रा, डॉ.अनुभा श्रीवास्तव, डॉ. होशिता गुप्ता, डॉ.मीनाक्षी, डॉ.मंजरी, डॉ.इंदु प्रकाश, डॉ.हरीश वर्मा डॉ. अरुण कुमार तथा डॉ. रविशंकर वाचस्पति गौतम उपस्थित रहे।

आदर्श खत्री महासभा संस्था का होली मिलन समारोह संपन्न

संवाददाता, कानपुर। आदर्श खत्री महासभा संस्था का होली मिलन समारोह आयोजित किया गया कार्यक्रम तिलक नगर स्थित कृष्णा धाम लॉन में संपन्न किया गया इस दौरान अध्यक्ष अनुपम मल्होत्रा ने पत्रकारों को बताया कि हमारे इस होली मिलन कार्यक्रम में लगभग 200 खत्री परिवार के लोग शामिल होंगे जिसमें सभी लोग होली मिलन अवसर पर संस्कृति रंगारंग कार्यक्रम स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद उठाएंगे यह कार्यक्रम कराने का एकमात्र उद्देश्य है कि ऐसे अवसरों पर खत्री समाज एकजुट होकर नई नई योजनाएं समाज हित को लेकर बनाते रहे जैसा कि हमारी संस्था का 1 वर्ष पूर्ण होने वाला है और अब तक खत्री समाज ने निर्धन परिवार के लोगों का विवाह संपन्न करा चुका है ऐसे और समाज हित को लेकर अनाथालय वृद्ध आश्रम गरीबों के बीच में जाकर जनहित कार्य खत्री समाज समय-समय पर करता रहता है

इस मौके पर समाज के लोगों से कहना चाहूंगा कि होली रंगों का त्योहार है और सभी लोग इस पर्व पर मिलजुल कर रहे और समाज में एक अच्छा माहौल कायम करें जैसे कि रंग चाहे जैसा हो जब वह सभी रंगों में मिलकर भी वह अपनी पहचान नहीं होता है ऐसे ही समाज के लोग भी जनहित के कार्य करके अपनी नई पहचान बना सकते हैं मैं यही कहना चाहूंगा कि सभी को एकजुट होकर बुराई को छोड़कर मानवता की मिसाल पेश करें और सभी लोग समाज में एक दूसरे के सुख-दुख को साझा करें इस दौरान कार्यक्रम में मुख्य रूप से डा0 वी के कपूर, डा0 पंकज गुलाटी, दिनेश टंडन , अमित मेहरोत्रा, नितिन मेहरोत्रा, डा0 किटी टंडन , संदीप कक्कड, मनीष मेहरोत्रा , नवीन सेठ, प्रवीन सेठ व अनुपम मेहरोत्रा प्रबंध समिति के सदस्य आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहें ।

निखिल राज को आजाद समाज पार्टी के पिलखुवा नगर अध्यक्ष के पद पर नियुक्त

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ में आगामी नगर निकाय चुनाव को देखते हुए आजाद समाज पार्टी जिला हापुड़ के संगठन विस्तार हेतु जिला प्रभारी नरेंद्र द्रविड़ के द्वारा न्यू आर्य नगर पिलखुवा में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें समर्पित विनोद बाल्मीकि तथा मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष सुशील आजाद के साथ जिला प्रभारी नरेंद्र द्रविड़ व जिला महासचिव मनोज कर्दम, जिला उपाध्यक्ष सतीश ,जिला सचिव सुरेंद्र, जिला अध्यक्ष युवा मोर्चा, अमन कुमार, जिला कार्यकारी सदस्य धीरज, जय भगवान आदि पदाधिकारियों के साथ रामकिशन बाल्मीकि, सतीश वाल्मीकि, कुलदीप जाटव, वीरेंद्र जाटव, राजेंद्र बाल्मीकि, मुकेश वाल्मीकि, इमरान सिद्दीकी, दिनेश आजाद, कृष्ण गोपाल वाल्मीकि,देवेंद्र किशोर वाल्मीकि आदि दर्जनों वाल्मीकि तथा मुस्लिम समाज के लोग उपस्थित रहे जिसमें आजाद समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष सुशीला के सर्व सहमति से निखिल राज को नगर अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया।

संत रविदास स्मृति महोत्सव आयोजित किया गया

संवाददाता

कानपुर। संत रविदास जयंती समारोह समिति डा0अम्बेडकर नगर विजय नगर, शास्त्री नगर के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का दिव्य आयोजन डबल पुलिया विजय नगर में विगत वर्षो की भांति आम जनमानस की भारी सहभागिता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्वान ज्ञानी जत्था द्वारा भाई रकम सिंह के नेतृत्व में गुरुवाणी, शब्द कीर्तन के माध्यम से संतों, गुरूओं, महापुरूषों की अमरवाणियों को समाहित कर मानव कल्याण के मार्ग को सुगम समता मूलक बनाने की परिकल्पना को साकार करने के संदेश के साथ किया गया बहुजन समाज में जागरूकता लाने के लिए समर्पित मिशनरी गायक श्याम सैलानी,ऋषि बौद्ध और अजली बौद्ध द्वारा क्रमशरू एक से बढ़कर एक मिशनरी गीतों के माध्यम से महापुरूषों के विचारों को जन-जन तक पहुंचाकर आदर्श समता मूलक समाज बनाने का आह्वान किया गया शिक्षा है अनमोल रतन पढ़ने का सब करो जतनष् शीर्षक के अन्तर्गत नारी शिक्षा के लिए आजीवन समर्पित माता सावित्री बाई फूले शिक्षा प्रेरणा कार्यक्रम के अन्तर्गत स्लम एरिया से चिन्हित निर्बल वर्ग के बच्चों को पठन-पाठन सामग्री स्मृति चिन्ह स्कूली बैग, कॉपी किताब और महापुरुषों की सचित्र जीवनी पुस्तिका अनिल कुमार गुप्ता (स्वागत ग्रुप) एवं आयोजन समिति के नृतत्व में देकर उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान बनाकर राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित करने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ सम्मेलन के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति मा0 डॉ0 आई0 एम0 कुदुसी (मा0 पूर्व मुख्य न्यायधीश, उड़ीसा उच्च न्यायालय) ने अपने सम्बोधन में संत रविदास जी के जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला विशिष्ट अतिथि मा0 अजय प्रकाश श्रीवास्तव, महज आध्यात्मिक संत ही नही बल्कि जन चेतना की प्रचण्ड मशाल थे। समारोह में अतिथि के रूप में पधारे इंजि0 ओ0 पी0 सिंह, श्रवण कुमार बौद्ध, इंजिव अजीत सिंह गौतम, रामनारायण निषाद, अर्चना निषाद, सीमा शंखवार, प्रेमकांती सचान, इजि0 रजनीश गौतम, विजय शंखवार, विजय शंकर, रामलाल, संजय सचान, शैलेन्द्र सचान, सोहनलाल, संतोष कुमार, राकेश जाटव, प्रदीप कुमार, एम0एल0 कुरील, रोशनलाल दोहरे, राजकुमार दोहरे, डॉ0 सुभाष चन्द्रा, बृजेश शर्मा, जगदीश नरायन, रविदास सर, धीरेन्द्र कुमार, सीता यादव, फिरोजाबाद से पधारे राही म्यूजिकल ग्रुप फिरोजाबाद के ओजस्वी गायकों ने प्रो0 सूरज राही के नेतृत्व में एक से बढ़कर एक मनमोहन, अनुकरणीय प्रस्तुति देकर उपस्थित जनमानस का मन मोह लिया त्यागमूर्ति माता रमाबाई अम्बेडकर जी के जीवन संघर्ष पर राही जी की प्रस्तुति ने सबकी आखों में आंसू ला दिया। संत गुरु रविदास, संत कबीर साहब, महात्मा ज्योतिबा फूले, माता सावित्री बाई फुले, बाबा साहब डा0 अम्बेडकर, मान्यवर कांशीराम साहब आदि जनमानस का आभार मीडिया प्रभारी मुन्ना हजारिया एवं राजेश दोहरे और आयोजन समिति ने व्यक्त किया।

भव्य कलश यात्रा के साथ पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा का हुआ शुभारंभ

संवाददाता, महोबा। विकासखंड पनवाड़ी क्षेत्र के अंतर्गत बुडेरा, सिमरिया,मार्ग क्यौलारी नदी के किनारे स्थित प्राचीन सिद्ध बाबा मंदिर पर ग्रामीण क्षेत्र एवं भक्त मार्तंड सिंह परिहार के अधिक प्रयास से सिद्ध बाबा मंदिर परिसर में पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा का शुभारंभ किया गया मुख्य यजमान मार्तण्ड सिंह ने बताया कि यहां बरसों पुराने सिद्ध बाबा मंदिर पर दीपावली की दूज के दिन एक दिवसीय भव्य मेले का आयोजन किया जाता है वही ग्रामीणों के सहयोग से आज मंदिर परिसर में शिव परिवार सहित पंचमुखी हनुमान शनि देव महाराज एवं नवग्रह का विधि विधान के साथ प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया जा रहा है पंच दिवसीय महायज्ञ के मुख यज्ञाचार्य पंडित सनत कुमार शर्मा जी के द्वारा बताया गया कि 18 तारीख को भव्य कलश यात्रा एवं 19 तारीख को वेदी पूजन एवं अन्नवास एवं देवी पूजन देव जागरण वेदी पूजन महादेव पार्वती विवाह पूजन एवं नगर भ्रमण देवी पूजन सतधारा स्नान प्राण प्रतिष्ठा पूजन हवन पूर्णाहुति एवं प्रसाद वितरण का कार्यक्रम का आयोजन किया जाना है।

जन-जन तक योग की पहुंच सुनिश्चित करें शिक्षक : प्रो. सीमा सिंह

मुविवि में राजकीय शिक्षकों का योग प्रशिक्षण प्रारम्भ

संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित उत्तर प्रदेश के राजकीय महाविद्यालयों के शारीरिक शिक्षा के अध्यापकों का छह दिवसीय योग प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार से प्रारंभ हुआ। लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने कहा कि योग से ही निरोग रहकर आरोग्य प्राप्त किया जा सकता है। योग की महत्ता आज हर कोई स्वीकार कर रहा है। प्रोफेसर सिंह ने योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इसकी जन जन तक पहुंच को सुनिश्चित करने हेतु राजकीय महाविद्यालयों से आए शारीरिक शिक्षा के प्राध्यापकों का आह्वान किया। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मुक्त विश्वविद्यालय ने योग के क्षेत्र में काफी प्रगति की है। यहां से निकले विद्यार्थी महत्वपूर्ण स्थानों पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। विश्वविद्यालय के योग के पाठ्यक्रम काफी लोकप्रिय हैं। जिसका लाभ समाज को मिल रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश डॉ. ब्रह्मदेव ने कहा कि योग की प्राचीन परंपरा हमारे राष्ट्र की धरोहर है और इसे आज के व्यस्त जीवन में सबके लिए धारण करना अनिवार्य हो गया है। जिससे समग्र स्वास्थ्य अर्जित हो सके। उन्होंने प्राध्यापकों से इलेक्ट्रॉनिक एवं इंटरनेट का दुरुपयोग रोकने की अपील की तथा उसके सदुपयोग के महत्व पर भी प्रकाश डाला। शिक्षा निदेशक ने कहा कि प्राध्यापक यहां से जो सीखें वह हमारे छात्रों को सिखाएं। यह हमारी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि हमारे बच्चे स्वस्थ रहें। हम दूसरे देशों का मुकाबला तभी कर पाएंगे जब हम स्वस्थ रहेंगे। विशिष्ट अतिथि संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश डॉ. सुनंदा चतुर्वेदी ने कहा कि शारीरिक शिक्षा से तन स्वस्थ होता है किंतु योग के सम्मिलन से मन और तन दोनों प्रफुल्लित तथा आरोग्य को प्राप्त करते हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से शारीरिक शिक्षा एवं योग के सम्मिलित अभ्यास से एक नए परिवेश की संकल्पना को साकार करने का आह्वान किया। उन्होंने योग की महत्ता और उसके नवाचार की प्राध्यापकों हेतु आवश्यकता तथा शिक्षकों हेतु रिफ्रेशर कोर्स को आज की जरूरत बताया। विषय प्रवर्तन करते हुए बीज वक्ता प्रोफेसर गिरिजा शंकर शुक्ल निदेशक स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय ने दीर्घायु योजना में योग के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने मानव जैविक घड़ी को प्रकृति के अनुरूप और उसके तारतम्य में स्थापित करने से प्राप्त होने वाले दीर्घायु जीवन आरोग्य एवं उत्कृष्ट कार्यक्षमता की वृद्धि के रहस्य उजागर किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मीरा पाल तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव विनय कुमार ने किया। अन्य तकनीकी सत्रों में योग शिक्षक अमित कुमार सिंह ने योग निद्रा सूक्ष्म योग पंचकोश ध्यान योग योग का अर्थ विकास एवं महत्व पर प्रतिभागियों को विस्तार से जानकारी दी। योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजकीय महाविद्यालयों के 42 शारीरिक शिक्षा अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के निदेशक शैक्षिक परामर्शदाता शिक्षक कर्मचारी तथा प्रतिभागी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम निदेशक प्रोफेसर जी एस शुक्ल ने बताया कि 6 दिन तक चलने वाले योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के जाने-माने योग शास्त्र के विद्वानों को आमंत्रित किया गया है जो प्रतिभागियों को सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

खरबन्दा गारमेंट व शराब व्यवसायी से हुई लूट का पुलिस ने किया खुलासा 6 बदमाश गिरफ्तार

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ के थाना हापुड नगर पर दो लूट की घटनाएं का खुलासा करते हुए 06 शातिर अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है जिनके कब्जे से लूट से सम्बन्धित 1 लाख 20 हजार रुपये नकदी, एक चौन पीली धातु, घटना में प्रयुक्त अवैध असलहा, 2 मोटरसाइकिल व एक स्कूटी बरामद हुई है। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम जुनैद ,साहिल,कामरान, फैजान,तुषार उर्फ रोकी उर्फ पिन्टू निवासी थाना कालिन्दी कुंज दिल्ली व अनस निवासी मौहल्ला राजीव विहार, हापड को फ्रीगंज रोड रेलवे पार्क तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया है,जिनके कब्जे से लूट से सम्बन्धित 1 लाख 20 हजार रुपये नकदी, एक चौन पीली धातु, घटना में प्रयुक्त अवैध असलहा, 2 मोटरसाइकिल व एक स्कूटी बरामद हुई है। एसपी ने प्रेस वार्ता करते हुए बताया कि गिरफ्तार बदमाशों द्वारा 8 जनवरी को शराब व्यवसायी व 13 मार्च को कपड़ा व्यापारी से लूट की घटनाओं को अंजाम देकर फरार हो गये थे गिरफ्तार बदमाश शातिर किस्म के अपराधी व लुटेरें हैं जिनके द्वारा व्यापारियों की रैकी कर लूटपाट की घटनाएं कारित की जाती थीं। पूछताछ पर बदमाशों ने बताया कि हमने 8 जनवरी 2023 को रात करीब 10.00 बजे शराब व्यवसायी हिमांशू मित्तल से 2.15 लाख रुपयो से भरा थैला लूटा था और दिनांक 13 मार्च 2023 को रात्रि करीब 11.30 बजे कपड़ा व्यापारी जगदीश खरबन्दा जिनकी कोठी गेट बाजार मे खरबन्दा गारमेन्ट के नाम से दुकान है जिनसे दुकान से अपने घर जाते समय हरमिलाप मन्दिर के पास से सोने की चौन,एक बैग जिसमे चाबियाँ व करीब 20 हजार रुपए हथियारों से डरा धमका कर लूटे लिए थे।

कस्तूरबा गांधी स्कूल की वार्डेन का सांप-विष खापर पकड़ते वीडियो

संवाददाता, कन्नौज। कन्नौज के ग्रामीण इलाके में खेतों के बीच कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के स्टाफऔर छात्राओं को जहरीले जीव-जंतुओं से जूझना पड़ रहा है। विद्यालय परिसर में अक्सर सांप, विषखापर और सियार जैसे घातक व जहरीले जीव-जंतु टहलते नजर आ जाते हैं। ऐसे में विद्यालय की वार्डेन खुद जान जोखिम में डालकर उन जहरीले जीव-जंतुओं को पकड़कर विद्यालय परिसर से बाहर करने लग जाती हैं, ताकि छात्राओं को कोई नुकसान हो सके। स्कूल वार्डेन की इस बहादुरी की चर्चा क्षेत्र में हो रही है। मामला कन्नौज ब्लाक क्षेत्र के मित्रसेनपुर गांव का है। यहां खेतों के बीच कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय है। यहां 100 छात्राएं पंजीकृत हैं, जोकि आवासीय परिसर में रहककर पढ़ाई करतीं हैं। खेतों के बीच विद्यालय होने के कारण झाड़ियों से अक्सर जहरीले जीव-जंतु रेंगते हुए परिसर में निकल आते हैं। सांप और विषखापर से छात्राओं को सुरक्षित रखने के लिए स्कूल की वार्डेन रश्मि मिश्रा हर वक्त चौकन्नी रहती हैं। जैसे ही सांप-कीडे विद्यालय परिसर में दिखाई देते तो छात्राएं व स्टाफके लोग वार्डेन को सूचना दे देते हैं।

टीसीएस के नए सीईओ को ग्राहक आपूर्ति दोगुना होने का भरोसा

एजेंसी, मुंबई । सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के मनोनीत मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के कृतिवासन ने कहा कंपनी की कार्य संस्कृति में नए प्रमुख के कार्यभार संभालने पर महत्वपूर्ण रणनीतिक बदलाव नहीं होते हैं। वह ग्राहक आपूर्ति बढ़ाने को लेकर आशान्वित हैं। टीसीएस के छह साल से सीईओ रहे राजेश गोपीनाथन ने बृहस्पतिवार को अपने इस्तीफे की घोषणा की। गोपीनाथन के दूसरे कार्यकाल में चार साल से अधिक का समय बाकी था। वह 15 सितंबर को अपना पद छोड़ देंगे। कंपनी ने कहा कि उसके बीएसएफआई श्रेणी के अध्यक्ष कृतिवासन तत्काल प्रभाव से सीईओ के रूप में कंपनी का नेतृत्व करेंगे। बीएसएफ आई श्रेणी का इस समय कंपनी की आय में 31.5 प्रतिशत का योगदान है। गोपीनाथन (52 वर्ष) ने कहा कि वह 27 साल पहले टाटा इंडस्ट्रीज और 22 साल पहले टीसीएस से जुड़े थे और इस दौरान उन्होंने कभी भी नौकरी बदलने के बारे में नहीं सोचा। हालांकि, उन्होंने 15 सितंबर के बाद की अपनी योजनाओं का खुलासा नहीं किया। कृतिवासन ने एक वीडियो कॉन्फ्रेंस में कहा, टीसीएस की कार्य संस्कृति में यह नहीं है कि अगर कंपनी को कोई नया प्रमुख मिलता है तो उसमें आमूल-चूल रणनीतिक बदलाव हों। हम ग्राहकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए काम जारी रखेंगे। बाजार की मांग को देखते हुए बदलाव होंगे। उन्होंने कहा, वन टीम की हमारी संस्कृति बनी रहेगी। उन्होंने कहा, कंपनी में जब कोई नया सीईओ आता है तो हम रणनीतिक रूप से नहीं बदलते हैं लेकिन हम अपने ग्राहकों के अनुसार बदलेंगे। उन्होंने कहा, मैं आपूर्ति को दोगुना करने की उम्मीद करता हूं।

लंबी दूरी की परमाणु मिसाइलों को छोड़ने की आईएमएफ की मांग को पाक ने किया खारिज

एजेंसी, इस्लामाबाद। पाकिस्तान के वित्त मंत्री इशाक डार ने लंबी दूरी की परमाणु मिसाइलों के निर्माण को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की नई मांग को अनैतिक रवैया करार दिया और जोर देकर कहा है कि किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह देश को यह निर्देश दे कि उसके पास कौन से परमाणु हथियार हो सकते हैं। विदेशी राजदूतों के सामने सीनेट के विशेष सत्र में बोलते हुए डार ने कहा कि पाकिस्तान के पास अपनी प्रतिरोधक क्षमता है और वह किसी बाहरी संस्था को यह तय करने की अनुमति नहीं देगा कि देश के पास किस तरह की मिसाइलें हो सकती हैं। इशाक डार ने कहा, ष्किसी को भी पाकिस्तान को यह बताने का कोई अधिकार नहीं है कि उसके पास कितनी रेंज की मिसाइलें हो सकती हैं और उसके पास कौन से परमाणु हथियार हो सकते हैं। हमें अपना खुद का बचाव करना होता है। आईएमएफ पाकिस्तान को सख्त और लगातार नई मांगें रख रहा है। देश गंभीर वित्तीय संकट का सामना कर रहा है। हालांकि, पाकिस्तान की परमाणु क्षमताओं के संदर्भ में आईएमएफ की मांग को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया गया है और वित्त मंत्री

और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने इसको खारिज कर दिया है। विश्लेषकों का कहना है कि पीएम शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली पाकिस्तान सरकार ने आईएमएफ की कर सुधारों और मुद्रास्फीति की सभी कठोर मांगों को स्वीकार कर लिया है, लेकिन वह परमाणु मिसाइल निर्माण परित्याग पर आईएमएफ की मांग को पूरा नहीं करेगी.. एक ऐसी मांग जो अमेरिका द्वारा लंबे समय से की जा रही है और इस्लामाबाद द्वारा बार-बार ठुकराई गई है। विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि पाकिस्तान की आक्रामक प्रतिक्रिया ऐसे समय में आई है जब इस्लामाबाद ने चीन के साथ संबंध सुधारने के प्रयास तेज कर दिए हैं। चीन ने हाल ही में दो प्रमुख वाणिज्यिक ऋणों को पुनर्वित्त कर देश को डिफॉल्ट होने से बचाया है और 23 मार्च को मैच्योर होने वाली कम से कम 2 अरब चीनी डॉलर जमा को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। पश्चिम की पाकिस्तान की शाहीन-3 लंबी दूरी की परमाणु मिसाइल पर अपनी चिंताएं हैं, जो परमाणु हथियारों को 2,750 किमी की दूरी तक ले जाने की क्षमता रखती है, जो भारत और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों को कवर करती है। हालांकि, वित्त मंत्री इशाक डार ने स्पष्ट कर दिया कि उनकी सरकार और देश बड़े पैमाने पर अपने परमाणु कार्यक्रमों पर कोई समझौता नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा, कोई भी पाकिस्तान के परमाणु या मिसाइल कार्यक्रम पर कुछ भी समझौता नहीं करने जा रहा है- बिल्कुल नहीं! आईएमएफ को डार की कड़ी प्रतिक्रिया प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) द्वारा जारी एक बयान के बाद आई जिसने पाकिस्तान के परमाणु मिसाइल कार्यक्रम को अपनी राष्ट्रीय संपत्ति के रूप में उजागर किया। पीएमओ के बयान में कहा गया, पाकिस्तान का परमाणु और मिसाइल कार्यक्रम एक राष्ट्रीय संपत्ति है। पूरा कार्यक्रम पूरी तरह से सुरक्षित, फुलप्रूफ और किसी भी तनाव या दबाव में नहीं है। पीएमओ के बयान में कहा गया, परमाणु और मिसाइल कार्यक्रम पूरी तरह से उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जारी है जिसके लिए यह क्षमता विकसित की गई थी। वित्त मंत्री ने जोर देकर कहा कि इस तथ्य के बावजूद कि पाकिस्तान के लिए विस्तारित फंडिंग सुविधा (ईएफएफ) कार्यक्रम को पुनर्जीवित करने के लिए आईएमएफ के साथ बातचीत व्यापक, असामान्य, बहुत लंबी और बहुत मांग वाली रही है, पाकिस्तान ने सब कुछ पूरा कर लिया है। पाकिस्तान देश की अर्थव्यवस्था के डूबते जहाज को बचाने के लिए आईएमएफ कार्यक्रम के पुनरुद्धार पर निर्भर है। हालांकि, आईएमएफ की मांग और पाकिस्तान से उम्मीदें बढ़ने के साथ-साथ आईएमएफकी लंबी दूरी की परमाणु मिसाइलों के निर्माण को छोड़ने की मांग को सरकार द्वारा अस्वीकार कर दिया गया, आईएमएफ कार्यक्रम के पुनरुद्धार की उम्मीद निकट भविष्य में नहीं हो सकती है, जो निश्चित रूप से देश की वित्तीय स्थिति के लिए अधिक गंभीर चुनौतियां पेश करेगा।

पाकिस्तान के हितों और लोकतंत्र की खातिर बात करने को तैयार : इमरान खान

एजेंसी, पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री और राजनीतिक दल पीटीआई के अध्यक्ष इमरान खान अपनी विपक्षी पार्टी के नेताओं और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफकी वर्तमान सत्ताधारी गठबंधन सरकार से देश और उसके असंगत लोकतंत्र हितों से जुड़े मुद्दों पर कोई बातचीत नहीं करने के अपने कठोर रुख में नरमी लाते दिख रहे हैं। इमरान खान ने एक ताजा बयान में कहा है कि वह देश की खातिर किसी से भी बात करने को तैयार हैं। इमरान खान ने कहा, मैं पाकिस्तान की प्रगति, उसके हितों और लोकतंत्र के लिए कोई भी कुर्बानी देने से नहीं बचूंगा। मैं किसी से भी बात करने को तैयार हूं और इसके लिए आगे बढ़ने को भी तैयार हूं। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ द्वारा बड़े पैमाने पर देश के हित में बातचीत की खुली पेशकश करने के एक दिन बाद इमरान खान की

बातचीत और वार्ता आयोजित करने की सहमति आई है। इमरान खान द्वारा बातचीत की पेशकश के बदले में दो कट्टर-राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के बीच जुड़ाव की उम्मीदें खुल गई हैं। कई महीनों के राजनीतिक टकराव और लाहौर में इमरान खान के आवास के बाहर पीटीआई समर्थकों और सुरक्षा बलों के बीच अशांति, विरोध और हिंसक लड़ाई के सबसे अराजक यों के बाद दोनों पक्ष एक सुलह के स्वर का चयन कर रहे हैं। जबकि दोनों पक्ष बात करने की अपनी इच्छा का प्रदर्शन कर रहे हैं, यह संभावना नहीं है कि इमरान खान शहबाज शरीफया उनके राजनीतिक विरोधियों के साथ मेज पर बैठेंगे। पीटीआई नेता फ्वाद चौधरी ने कहा कि इमरान खान द्वारा बातचीत की पेशकश को पार्टी नेतृत्व द्वारा आगे बढ़ाया जाएगा, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि वह किसी के भी साथ मेज पर बैठने के लिए उपलब्ध हैं। फ्वाद चौधरी ने कहा, यदि सरकार वार्ताओं में गंभीर थी, विशेष रूप से देश भर में एक साथ चुनाव कराने के बारे में, तो उसे केवल बयानों के बाद बयान देने के बजाय औपचारिक रूप से बातचीत की पेशकश करनी चाहिए। चौधरी ने सरकार पर बातचीत के लिए अनुकूल माहौल बनाने से जानबूझकर परहेज करने का आरोप लगाते हुए कहा कि पीटीआई ने दोनों पक्षों के बीच मध्यस्थता करने के लिए राष्ट्रपति डॉ. आरिफअल्वी को भी शामिल किया, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि इसका कोई नतीजा नहीं निकला। पाकिस्तान की सीनेट के विशेष समारोह में बोलते हुए प्रधानमंत्री शहबाज शरीफने कहा कि इमरान खान ने अपने कार्यकाल के दौरान विपक्षी नेताओं से हाथ तक नहीं मिलाया। उन्होंने कहा, इमरान खान के कार्यकाल के दौरान मैंने विस्तृत बातचीत करने और अर्थव्यवस्था के चार्टर पर हस्ताक्षर करने की पेशकश की थी। लेकिन इमरान खान संसद में अपने विरोधियों की बात भी सुनना चाहते थे। वह अपने विरोधियों से हाथ भी नहीं मिलाना चाहते थे। इस बात पर जोर देते हुए कि आर्थिक सुधारों, मितव्ययिता और अन्य प्रमुख मुद्दों के लिए मतभेदों को एक तरफरखना होगा, उन्होंने कहा, ष्मैं सभी राजनीतिक नेतृत्व से एक साथ आने और देश को चुनौतियों से बाहर निकालने का आह्वान करता हूं। जानकारों का कहना है कि दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ अपना रुख नरम कर लिया है। और अब, यह या तो न्यायपालिका या प्रतिष्ठान होना चाहिए, जो राजनीतिक प्रासंगिकता और राजनीतिक ताकतों के सह-अस्तित्व के लिए आपसी समझ का एक आपसी आधार खोजने के लिए दोनों पक्षों को बातचीत की मेज पर लाए।

वैश्विक एयरलाइंस को भुगतान करने के लिए संघर्ष कर रहा पाकिस्तान

एजेंसी, इस्लामाबाद। वैश्विक हवाई परिवहन निकाय ने पाकिस्तान में उड्डयन संकट की चेतावनी दी है। गंभीर वित्तीय संकट के कारण एयरलाइंस 290 मिलियन डॉलर की रिकवरी के लिए संघर्ष कर रही हैं। डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान नागरिक उड्डयन प्राधिकरण (पीसीएए) ने कहा है कि वह एयरलाइंस को समय पर भुगतान करने की कोशिश कर रहा है और इस मुद्दे पर संबंधित अधिकारियों के संपर्क में है। फ्राइनेंशियल टाइम्स ने इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन (आईएटीए) का हवाला देते हुए कहा कि पाकिस्तान की सेवा के लिए वाहकों के लिए यह बहुत चुनौतीपूर्ण हो गया है क्योंकि वे डॉलर में भुगतान किए गए अपने बकाये को वापस करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, आईएटीए, जो लगभग 300 एयरलाइनों का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वैश्विक हवाई यातायात का 83 प्रतिशत शामिल है, उसने कहा कि जनवरी में 290 मिलियन डॉलर पाकिस्तान में अटके हुए हैं, जो दिसंबर के बाद से लगभग एक तिहाई अधिक है। आईएटीए के एशिया-प्रशांत प्रमुख फिलिप गोह ने एफ्टी के हवाले से कहा, ष्एयरलाइंस को अपने धन को वापस करने में सक्षम होने से पहले लंबी देरी का सामना करना पड़ रहा है। गोह ने कहा,कुछ एयरलाइनों के पास अभी भी 2022 में बिक्री से पाकिस्तान में धन अटका हुआ है। यदि ऐसी स्थिति बनी रहती है जो किसी देश के संचालन के अर्थशास्त्र को अस्थिर बना देती है, तो कोई यह अपेक्षा करेगा कि एयरलाइंस अपनी मूल्यवान विमान संपत्ति को कहीं और बेहतर उपयोग के लिए रखे। एफ्टी ने एविएशन एनालिटिक्स कंपनी सीरियम के डेटा का हवाला देते हुए साझा किया कि विदेशी एयरलाइंस पाकिस्तान लौटने के लिए अनिच्छुक रही हैं, मार्च 2023 में 2019 के इसी महीने की तुलना में कम उड़ानें निर्धारित हैं। एफ्टी रिपोर्ट में एविएशन कंसल्टेंसी मार्टिन कंसल्टिंग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मार्क मार्टिन ने कहा, ष्अगर आप किसी देश से पैसा नहीं ले सकते हैं, तो आपके वहां जाने का भी कोई मतलब नहीं है।

इटली ने दुनिया के सबसे लंबे सस्पेंशन ब्रिज के निर्माण को दी हरी झंडी

एजेंसी, रोम। इटली सरकार ने सिसिली द्वीप और इटली की मुख्य भूमि के बीच दुनिया के सबसे लंबे सस्पेंशन ब्रिज के निर्माण की अनुमति दे दी है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इस तरह के पुल के निर्माण पर लंबे समय से चर्चा चल रही थी। गुरुवार को एक बयान में, बुनियादी ढांचे और परिवहन मंत्रालय ने कहा कि पुल इतालवी इंजीनियरिंग का मुकुट रत्न होगा। यह 3,666 मीटर लंबा होगा। वर्तमान में तुर्की में कनक्कल ब्रिज 2,023-मीटर के साथ सबसे लंबा सस्पेंशन ब्रिज है। एक अनुमान के अनुसार इतालवी मेसिना ब्रिज परियोजना पर लगभग 8.5 बिलियन यूरो (9 बिलियन डॉलर) की लागत आएगी और इसका निर्माण पूरा होने में छह साल लगेंगे। गौरतलब है कि 251 ईसा पूर्व में,

रोमन इतिहासकार प्लिनी द एल्डर ने सिसिली को इतालवी मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए एक अस्थायी पुल बनाने की योजना के बारे में लिखा था। बाद की शताब्दियों में अन्य परियोजनाओं पर चर्चा की गई थी। 1981 में पहली आधुनिक परियोजना की घोषणा की गई और 2005 में परियोजना के लिए एक खाका तैयार किया गया। इटली के उप प्रधान मंत्री और इंफ्रास्ट्रक्चर और परिवहन मंत्री माटेओ साल्विनी ने गुरुवार के बयान में कहा कि परियोजना पर्यावरण अनुकूल होगी, परिवहन से जुड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करेगी। साल्विनी ने कहा कि यह पर्यटन को भी बढ़ाएगा और क्षेत्र में उद्योग को आकर्षित करेगा।

भारतीय स्टार्टअप्स के एसवीबी में एक अरब डॉलर से अधिक जमा : राजीव चंद्रशेखर

एजेंसी, नयी दिल्ली। प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा है कि सैकड़ों भारतीय स्टार्टअप्स के तालाबंदी झेलने वाले बैंक एसवीबी में एक अरब डॉलर से अधिक जमा थे। केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर ने साथ ही यह भी सुझाव दिया कि स्थानीय बैंकों को स्टार्टअप्स को दिए जाने वाले ऋण का दायरा बढ़ाना चाहिए। कैलिफोर्निया के बैंकिंग नियामकों ने 10 मार्च को सिलिकॉन वैली बैंक (एसवीबी) को बंद कर दिया, जिसके पास 2022 के अंत में 209 अरब डॉलर की संपत्ति थी। जमाकर्ताओं ने एक ही दिन में बैंक से 42 अरब डॉलर की निकासी कर ली जिससे यह दिवालिया हो गया। अमेरिकी सरकार ने अंतत: यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाया कि जमाकर्ताओं की पहुंच उनकी जमा राशि तक हो। प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने गुरुवार देर रात एक ट्विटर स्पेस चौट में कहा, मुद्दा यह है कि हम आने वाले महीने में अपनी सभी अनिश्चितताओं के साथ जटिल सीमा पार अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली पर निर्भर होने के बजाय स्टार्टअप को भारतीय बैंकिंग प्रणाली में कैसे बदल सकते हैं? चंद्रशेखर ने इस सप्ताह 460 से अधिक हितधारकों से मुलाकात की, जिसमें एसवीबी के बंद होने से प्रभावित स्टार्टअप भी शामिल थे। उन्होंने कहा कि मुलाकात के बाद उन्होंने अपने सुझाव वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण

को दे दिए हैं। चंद्रशेखर ने वित्त मंत्री को दिए गए सुझावों में से एक का हवाला देते हुए कहा कि भारतीय बैंक एसवीबी में धन रखने वाले स्टार्टअप्स को जमा-समर्थित क्रेडिट लाइन की पेशकश कर सकते हैं। भारत दुनिया के सबसे बड़े स्टार्टअप बाजारों में से एक है। कई भारतीय स्टार्टअप्स ने हाल के वर्षों में अरबों डॉलर के मूल्यांकन हासिल किए हैं और विदेशी निवेशकों से फंडिंग प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय स्टार्टअप्स ने डिजिटल और अन्य तकनीकी व्यवसायों पर साहसिक दांव लगाया है।

नेपाल और लद्दाख घुमाएगा आईआरसीटीसी

31 मार्च से नौ अप्रैल तक नेपाल और 26 अप्रैल से दो मई तक लद्दाख घूमने का मौका

संवाददाता, लखनऊ। आईआर सीटीसी भारत-नेपाल आस्था यात्रा 31 मार्च से नौ अप्रैल चलाएगा। यात्रा अयोध्या, वाराणसी, प्रयागराज, नेपाल में पशुपतिनाथ का दर्शन कराएगी। पैसा न होने पर मासिक किस्त में भुगतान करने की सुविधा भी दी गई है। यात्रा का पैकेज 1753 रुपए की मासिक किस्त पर मिल जाएगा। इसके अलावा एक मुश्त भुगतान की सुविधा भी है। जानकारी के लिए 8287930908 संपर्क नंबर जारी किया गया है। लखनऊ के लोगों की मांग पर लखनऊ एवं कानपुर से लद्दाख

(वाया नई दिल्ली) 6 दिन का टूर पैकेज लांच किया गया है। अप्रैल से लेकर सितंबर के बीच पांच टूर पैकेज है। ऐसे में अपनी सहूलियत के हिसाब से समय का चुनाव किया जा सकता है। गर्मी की छूट्टी यूज करने का यह अच्छा मौका है। पहला टूर 26 अप्रैल से 2 मई तक रहेगा उसके बाद दूसरा 29 जून से 5 जुलाई, तीसरा 7 से 13 जुलाई ,चौथा 10 से 16 अगस्त और पांचवां 9 से 15 सितंबर तक रहेगा। यात्रियों को लखनऊ से लेह वाया नई दिल्ली जानेआने की व्यवस्था फ्लाइट से की गई है। खान-पान एवं ठहरने के लिए तीन सितारा होटल में व्यवस्था की गई है। यात्रा के दौरान लेह में होटल स्टे के साथ स्तूप एवं मठ दर्शन, शाम वैली में लेह पैलेस, शांतिस्तूप, गुरूद्वारा, नुब्रा वैली में स्थित कैंप में रात्रि विश्राम, दिस्कीत, हुण्डर व तुर्तुक गांव एवं स्थानीय जगहों की सैर के साथ प्रसिद्ध झील का भ्रमण कराया जाएगा। एक व्यक्ति के ठहरने पर पैकेज का 52,400 रुपया है। अगर दो व्यक्ति साथ जाते हैं तो प्रति व्यक्ति 46,400 रुपए का खर्च आएगा। जबकि तीन व्यक्तियों के एक साथ ठहरने पर पैकेज का मूल्य प्रति व्यक्ति 45,700 रुपया रहेगा। माता-पिता के साथ ठहरने पर प्रति बच्चे का पैकेज मूल्य 43,400 रुपए आएगा। इसमे एलटीसी की सुविधा भी उपलब्ध है। इस पैकेज की बुकिंग पहले आओ पहले पाओ के आधार पर की जायेगी। आईआरसीटीसी की वेबसाइट से ऑन लाइन बुकिंग करा सकते है।

क्रेडिट सुइस संकट से भारतीय बैंकिंग तंत्र पर नहीं पड़ेगा कोई असर : विशेषज्ञ

एजेंसी, नयी दिल्ली। क्रेडिट सुइस में आए संकट से भारतीय बैंकिंग तंत्र पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि देश में इसकी उपस्थिति बहुत कम है। विशेषज्ञों ने यह दावा किया है। जेफ्रीज इंडिया की रिपोर्ट में हालांकि कहा गया है कि सिलिकॉन वैली बैंक (एसवीबी) की तुलना में क्रेडिट सुइस भारतीय वित्तीय तंत्र के लिए ज्यादा प्रासंगिक है। रिपोर्ट के अनुसार, स्विट्जरलैंड के बैंक की परिसंपत्तियां 20,000 करोड़ रुपए से कम (विदेशी बैंकों में 12वां) हैं। ये बैंक डेरिवेटिव बाजार में मौजूद है और इनकी संपत्ति का 60 प्रतिशत कर्ज से है, जिसमें से 96 प्रतिशत दो महीने तक के लिए ही है। इसकी संपत्तियों में हिस्सेदारी 0.1 प्रतिशत ही है, जो बैंकिंग क्षेत्र के लिहाज से काफी कम है। क्रेडिट सुइस का मुख्यालय ज्यूरिख में है और भारत में इसकी सिर्फएक शाखा है। सूत्रों ने बताया कि इस बीच भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) कुछ बैंकों के बंद होने से बदल रहे हालातों पर लगातार नजर बनाए हुए है।

आईडीबीआई बैंक के निजीकरण की प्रकिया जारी है : दीपम सचिव

एजेंसी, नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को कहा कि आईडीबीआई बैंक के विनिवेश की प्रकिया निर्धारित रणनीतिक बिक्री प्रक्रिया के मुताबिक चल रही है। उसने मीडिया में आई उन खबरों को भी खारिज कर दिया जिनमें कहा जा रहा था कि आईडीबीआई का विनिवेश टल सकता है। निवेश और लोक परिसंपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) ने कहा कि बैंक में हिस्सेदारी की बिक्री अभिरुचि पत्र (ईओआई) के चरण से आगे निकल गई है। दीपम सचिव तुहीन कांत पांडेय ने ट्वीट किया, ''विभिन्न ईओआई मिलने के बाद लेनदेन अब निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आगे बढ़ रहा है। सरकार को आईडीबीआई बैंक में उसकी तथा एलआईसी की करीब 61 प्रतिशत हिस्सेदारी की रणनीतिक बिक्री के लिए जनवरी में शुरुआती दौर की कई बोलियां मिली थीं। आईडीबीआई बैंक में सरकार की 30.48 प्रतिशत और एलआईसी की 30.24 प्रतिशत हिस्सेदारी समेत कुल 60.72 प्रतिशत हिस्सेदारी की बिक्री के लिए गत अक्टूबर में संभावित खरीदारों से बोलियां आमंत्रित की गई थीं। फ्लिहाल इस बैंक में सरकार और एलआईसी दोनों की मिलाकर 94.72 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

पॉपुलैरिटी के मामले में एमसी स्टेन को भी दे डाली मात, रैपर को मिली बड़ी हार

बिग बॉस सीजन 16 विनर और रैपर एमसी स्टैन लगातार सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहे हैं शो में पहले उनकी जीत फिर उसके बाद अप-टू-डेट उनके कंसर्ट्स उनकी सफलता में चार-चाँद लगा रहे हैं। बिग बॉस जैसे शो ने उनकी लोकप्रियता में मनो लाखो सितारे ही जोड़ दिए हो। वह लगातार एक सिढी से दूसरी सिढी जाकर अपने शोज कर रहे हैं और दुनिया में अपने हुनर का जलवा कायम कर रहे हैं। बिग बॉस से निकलने के बाद एमसी स्टेन ने बॉलीवुड के मशहूर गायक ए आर रहमान को भी लोकप्रियता के मामले में पीछे पछाड़ दिया था। हालांकि, अब उनकी खुद की लोकप्रियता पर काफी असर पड़ता देखा गया हैं। हाल ही में एक नई लिस्ट सामने आई है, जिसमें बीते महीने लोगों ने सोशल मीडिया पर एमसी स्टैन को नहीं, बल्कि किसी और एक्टर को सबसे ज्यादा पसंद किया गया है जिससे रैपर की फैन फॉलोविंग काफी घटती दिखी। आपको सुनकर हैरानी होगी लेकिन यही सच हैं कि एमसी स्टैन की लोकप्रियता पहले से घट गई है। हाल ही में ऑरमैक्स मीडिया ने अपने फरवरी के महीने की लिस्ट जारी की है, जिसमें उन्होंने बताया कि फरवरी में सबसे लोकप्रिय एक्टर कौन रहा है। इस लिस्ट में टॉप 5 एक्टर्स शामिल हैं। चलिए जानते हैं उन 5 एक्टर्स के नाम..... इस लिस्ट में पहले नंबर पर कपिल शर्मा, दूसरे नंबर पर एमसी स्टैन, तीसरे नंबर पर प्रियंका चहर चौधरी, चौथे नंबर पर सलमान खान और पांचवें नंबर पर शिव ठाकरे हैं। बता दे कि जब एमसी स्टैन बिग बॉस के घर में थे, तो उस समय उनके और प्रियंका के बीच अक्सर सोशल मीडिया पॉपुलैरिटी को लेकर जंग छिड़ी रहती थी जिसमे दोनों के ही फॉलोवर्स काफी ज्यादा थे। अब कपिल शर्मा ने ज्विगाटो की रिलीज के साथ ही इन दोनों बिग बॉस कंटेस्टेंट को पछाड़ दिया है और लिस्ट में नंबर एक का खिताब अपने नाम कर लिया हैं। आपको बता दें कि एमसी स्टैन की सोशल मीडिया पर पॉपुलैरिटी पहले से ही काफी ज्यादा है।

›››› बॉलीवुड ‹‹‹‹

मां गौरी खान की सिल्वर सीक्वेन साड़ी में कितनी खुबसूरत लगी बेटी सुहाना खान, साड़ी पहन क्रिएट किया मम्मा-डॉटर गोल्स

बॉलीवुड के किंग खान यानी शाहरुख खान की दुलारी सुहाना खान इन दिनों अपनी पब्लिक अपीयरेंस से काफी सुर्खियां बटोरती हुयी नजर आ रही हैं। बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान और उनकी पत्नी, इंटीरियर डिजाइनर गौरी खान की इकलौती बेटी सुहाना 'द आर्चीज' के साथ जल्द ही एक्टिंग की दुनिया में भी अपना डेब्यू करने के लिए तैयार हैं। इन सबके बीच सुहाना खान ने बीते दिन बीएफ एफ अनन्या पांडे की कजन सिस्टर अलाना पांडे की संगीत सेरेमनी अटैंड की थी। इस दौरान पार्टी में आई सुहाना खान ने अपने एथनिक लुक से लोगों का दिल जीत लिया। इस पार्टी के लिए सुहाना ने एक साड़ी का चुनाव किया हुआ था जिसमे वह बेहद खुबसूरत दिखाई पड़ी। लेकिन उनके इस लुक में ऐसा क्या खास था जो उनकी इतनी प्रशंसा की जा रही हैं... ? दरहसल, अलाना पांडे की संगीत सेरेमनी में सुहाना ने जिस एम्बेलिशड सिल्वर सीक्वेन साड़ी को पहने हुआ था वो किसी और की नहीं बल्कि उनकी माँ गौरी खान की साड़ी थी जिसे उन्होंने मैचिंग स्लीवलेस ब्लाउज के साथ पेयर किया हुआ था। बस ये देखने के बाद से ही उनके फैंस उनकी काफी प्रशंसा कर रहे हैं। तो वही स्टार किड ने अपने लुक को मिनिमल एक्सेसरीज, डेवी मेकअप और फ्री हेयरडू के साथ सिंपल रखा था। उन्होंने सिल्वर क्लच के साथ अपने लुक को कंप्लीट किया था। सुहाना की इस साड़ी लुक की तस्वीरें अब इंटरनेट पर खूब वायरल हो रही हैं। वहीं सुहाना खान के लेटेस्ट लुक ने उनकी मां गौरी खान की याद दिला दी है जो बिल्कुल इसी तरह की साड़ी में काफी खूबसूरत और ग्रेसफुल लग रही थीं। वहीं मां की साड़ी में सुहाना भी कम किसी राजकुमारी से कम नहीं लग रही थीं। सुहाना अपने इस लुक से काफी तारीफे बटोर रही है। यूएसए में अपने ग्रेजुएशन के दिनों के बाद से ही फेमस स्टार किड थिएटर नाटकों में काफी एक्टिव रहने लगी हैं। वहीं मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सुहाना हमेशा से फिल्म इंडस्ट्री में शामिल होने के लिए बेहद एक्साइटिड थीं और वह सिर्फ सही प्रोजेक्ट का इंतजार कर रही थीं। जोकि अब फाइनली द आर्चीज कॉमिक्स के ऑफिशियल एडेप्टेशन के साथ सुहाना फिल्म इंडस्ट्री में एंट्री कर रही हैं जिसके द्वारा उनके सपने की ओर उनका पहला बढ़ता कदम भी देखने को मिलेगा। सुहाना की डेब्यू फिल्म का डायरेक्शन फे मस फिल्म मेकर जोया अख्तर ने किया है। इस प्रोजेक्ट से बोनी कपूर और श्रीदेवी की छोटी बेटी खुशी कपूर और अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा भी एक्टिंग करियर की शुरुआत कर रहे हैं। ये फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज की जाएगी जिसे देखने के लिए दर्शक काफी इंतजार कर रहे हैं।

फिर एक बार पिया के नाम की मेहँदी रचाती नजर आई दलजीत कौर

हथेली पर दिखाई अपनी लाइफ स्टोरी

कुछ हफ्तों पहले अपनी सोशल मीडिया पोस्ट के जरिये सबको अपने रिश्ते की खबर देते हुए दलजीत ने अपने पार्टनर का खुलासा किया था। जिसकी कुछ झलकियाँ सोशल मीडिया के जरिये फैंस को भी दिखाई गई है। हाल ही में दलजीत की बैचलर पार्टी की तस्वीरें सामने आई थी जिसपर फैंस ने उन्हें नए जीवन के लिए काफी शुभकामनाये दी थी। अब उनकी मेहंदी फंक्शन से जुडी कई तस्वीरें भी सामने आ गई हैं। जैसा की सभी जानते भी हैं कि, दलजीत कौर टेलीविजन इंडस्ट्री की बेहद फे मस एक्ट्रेस में से एक हैं। उन्होंने कुलवधू और इस प्यार को क्या नाम दूं जैसे कई हिट शोज में काम कर घर-घर में अपनी पहचान बनाई है। दलजीत एक एक्ट्रेस होने के साथ ही बिग बॉस 16 के कंटेस्टेंट रहे शालीन भनोट की एक्स वाइफ भी हैं जिनके साथ उनका रिश्ता मात्र 4 साल में ही दम तोड़ गया। लेकिन अब वह अपनी जिंदगी की एक नई शुरुआत करने जा रही हैं, जिसके लिए उनके फैंस और फ्रेंड्स ने उन्हें ढेरों बधाई दी है। लेकिन साथ ही आपको बता दे कि दलजीत फिर एक बार 40 उम्र में दुल्हन बनने जा रही हैं। कई सारी तस्वीरों के बाद अब दलजीत की मेहंदी की तस्वीर भी सामने आई हैं, जो कि अपने आप में काफी खास बताई जा रही हैं। दरअसल, मेहंदी डिजाइन में उन्होंने पूरी अपनी लाइफ स्टोरी को बयां किया है जोकि बेहद खास तरीका और उनका अब तक का लाइफ स्टोरी बयां करता हैं। एक्ट्रेस ने एक हाथ में अपनी और दूसरे हाथ में होने वाले दूल्हे यानी कि निखिल पटेल की कहानी को डिजाइन के जरिये बताया है।

कपिल शर्मा की फिल्म 'ज्विगाटो' को मिल रहा है ऑडियंस का जबरदस्त रिस्पांस, ट्वीट कर लोग बोले- फिल्म ने दिल को छू लिया

टीवी इंडस्टी में अपनी कॉमेडी से कदम रखने वाले कपिल शर्मा के लिए आज का दिन बेहद खास है दरअसल कपिल शर्मा की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'ज्विगाटो' आज सिनेमाघरो में दस्तक दे चुकी है वही इस फिल्म में कॉमेडियन कपिल शर्मा ने लीड रोल प्ले कर फैंस का दिल आखिर जीत लिया है। इस बात का कन्फर्मेशन हम नहीं बल्कि ट्विटर पर आ रहे शानदार रेस्पॉन्स से पता चल रहा है। बता दे कपिल की फिल्म को पहले दिन शानदार रिस्पांस मिला है वही लोग इस फिल्म की कहनी को बेहद पसंद कर रहे है। बता दे, ये फिल्म एक डिलीवरी एजेंट की लाइफ में आने वाली तमाम प्रोब्लेम्स पर बेस्ड है जो कोरोना के दौरान रेटिंग और डिलीवरी नंबरो के बने रहने के लिए स्ट्रगल करता है। इस फिल्म में कपिल एक डिलीवरी बॉय का किरदार निभाते हुए नजर आ रहे है। वही ज्विगाटो ने अपनी दमदार कहानी और परफॉरमेंस से ऑडियंस के दिलो को छू लिया है। फिल्म इस समय ट्विटर पर ट्रेंड करती नजर आ रही है जहा लगातार सोशल मीडिया पर यूजर अब कपिल शर्मा को फिल्म का रिव्यू देते नजर आ रहे है। तो चलिए आपको बताते है दर्शको को कपिल शर्मा की ये फिल्म कैसी लगी? बता दे सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने फिल्म को लेकर अपना रिव्यू देते हुए फिल्म को इमोशनल बताया है तो वही इस फिल्म की कहानी कई लोगों को काफी दमदार लगी। बता दे ,सोशल मीडिया पर एक यूजर ने फिल्म की तारीफ करते हुए लिखा है ज्विगाटो वो कहानी है जिसे परिवार के साथ देखा जा सकता है और फिल्म ऐसे मोमेंट्स से भरी हुई है जो आपको गहराई से सरप्राइज देती है, वही ये फिल्म वो कहानी है जिसको एक परिवार ने अच्छे से बताया है। बताते चले जहा एक तरफ फिल्म की जबरदस्त तारीफ होती नजर आ रही है तो वही बॉलीवुड की फेमस एक्ट्रेस शहनाज गिल भी फिल्म को लेकर अपना रिव्यु देने से पीछे नहीं हटी। सोशल मीडिया परशहनाज ने इस फिल्म की तारीफों के पूल बांधते हुए कहा ही आज मैंने इंडिया के फनी मैन की एक बिल्कुल नई साइड देखी है जो हमेशा मुस्कुराता रहता है और सभी को हंसाता है। आगे शहनाज कहती है फिल्म का एक एक मिनट पसंद आया बेहतरीन कहानी, शानदार निर्देशन और बेहतरीन कलाकार.रुज्विगाटो जरूर देखनी चाहिए! तो वही अदनान सामी ने भी फिल्म की कहानी को इमोशनल बताया है और कहा ज्विगाटो फिल्म की स्पेशल स्क्रीनिंग देखना अच्छा लगा इस फिल्म में कपिल ने अपनी एक्टिंग से एक नई साइड को दिखाया वो काफी शानदार है। फिलहाल ऐसी आकांशा जताई जा रही है फिल्म आने वाले दिनों में अच्छी कमाई कर सकती है।

›››› बॉलीवुड ‹‹‹‹

पत्नी उपासना के साथ दिल्ली एयरपोर्ट पर नजर आए राम चरण, भीड़ से बचने के लिए एक्टर ने किया ये काम

फिल्म आरआरआर अपने सांग नट्टू नट्टू को लेकर ऑस्कर्स जीत चुका है तो वही आरआरआर फम राम चरण और उनकी पत्नी उपासना खूब सुर्खियां बटोरते नजर आते है बता दे ये कपल जल्द ही पेरेंट्स बनने वाले है तो हाल ही में कपल ने ऑस्कर्स के दौरान खुलासा किया था कि जब भी वो कही ट्रेवल करते हैं तो वे भारत से जुड़े रहने में मदद करने के लिए हमेशा एक छोटा सा मंदिर स्थापित करते हैं, चाहे वे दुनिया में कहीं भी हों। बता दे, फिल्म को बड़ी सक्सेस मिलने के बाद राम चरण को उनकी पत्नी उपासना के साथ दिल्ली एयरपोर्ट पर देखा गया था जहा फैंस की भारी भरकम भीड़ ने उन्हें एयरपोर्ट पर पहुंचते ही घिर लिया था हलाकि भीड़ में भी राम चरण मुस्कुराते हुए नजर आए थे और फिर फैंस से बचते बचाते पत्नी के साथ खुद को इस भीड़ से निकलते नजर आए। भीड़ से निकलने के बाद राम चरण अपनी पत्नी के साथ कार में बैठे और फिर रूफ टॉप से बाहर निकलकर अभिनेता ने अपने फैंस के लिए हाथ हिलाया। बता दे इस भीड़ में मीडिया के अलावा उनके फैंस भी उनके साथ सेल्फी लेने के लिए बेकरार दिखाई दिए इसके अलावा आरआरआर का झंडा लिए कई फैंस एयरपोर्ट पर रामचरण का स्वागत करते नजर आए। बता दे इस पहले भी जब ऑस्कर्स में जीत के बाद राम चरण ने वापसी ली थी जब भी हैदराबाद पर उनके फैंस ने उन्हें घेर लिया था पर खास बात ये है आरआरआर के गाने नट्टू-नट्टू की ऑस्कर्स जीत के बाद देश में उनका मान बढ़ गया है।

नॉर्वेजियन डांस ग्रुप के साथ सुनील शेट्टी ने लगाए ठुमके

हिंदी सिनेमा के मशहूर एक्टर सुनील शेट्टी पिछले काफी वक्त से खबरों में बने हुए हैं। पहले एक्टर अपनी बेटी अथिया और दामाद केएल राहुल की शादी को लेकर चर्चा में छाए हुए थें। इन दिनों सुनील अपनी अपकमिंग फिल्म हेरा फेरी 3 को लेकर खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। इसी अभिनेता एक वीडियो इंटरनेट पर खूब धूम मचा रहा है। जी हां, अपनी एक्टिंग से लाखों दिलों को जीतने वाले सुनील शेट्टी का एक डांस वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में एक्टर ने अपने डांस मूव्स से हर किसी को अपने डांस का भी दीवाना बना दिया है। फैंस ही नहीं बल्कि एक्टर के बेटी अथिया अपने पापा का डांस देखकर खुद को उनकी तारीफ करने से रोक नहीं पाई हैं। सुनील शेट्टी ने इंस्टाग्राम पर अपना डांस वीडियो पोस्ट किया है जिसमें उनका एक अलग ही अंदाज फैंस को देखने को मिल रहा है। सामने आए वीडियो में सुनील अकेले नहीं बल्कि फे मस नॉर्वेजियन डांस ग्रुप क्रिक स्टाइल के साथ कदम से कदम मिलाते नजर आ रहे हैं। सुनील शेट्टी और क्रिक स्टाइल के इस डांस वीडियो ने इंटरनेट पर धूम मचा दी है। खास बात ये है कि इस वीडियो में नॉर्वेजियन डांस ग्रुप एक्टर सुनील शेट्टी के साथ उन्हीं के पॉपुलर सॉन्ग आंखो में बेस हो तुम पर डांस कर रहे हैं। सुनील शेट्टी का ये वीडियो सामने आते ही सोशल मीडिया पर छा गया है और फैंस के साथ-साथ सेलेब्स भी एक्टर के वीडियो पर कॉमेंट करते नजर आ रहे हैं। सुनील शेट्टी को डांस करता देख उनकी बेटी अथिया भी काफी खुश हैं और उन्होंने अपने पापा के वीडियो पर कॉमेंट भी किया है। अथिया ने कॉमेंट कर लिखा, 'बेस्ट' इसके साथ हंसने वाले इमोजी भी शेयर

स्टार एक्सप्रेस स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी-18, सेक्टर-सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com